अजेय खण्डहर

'रांगेय राघव'

जुलाई १९४४

मूल्य २) रु०

मुद्रक—
राजपूत एङ्गलो ओरियण्टल प्रेस,
आगरा।

झङ्कार

१

चमचमाती
वेगवाली
राजपूती नाज़वाली
आग पानीदार चल
क़ज़्ज़ाक़ की तलवार
गा यह गीत

पार कर यह भूमि
नभ में घूम
रह रह झूम
पार कर सतलज गभीरा, श्याम
पार शैलों के उधर ईरान
पार कर यूराल
बनकर मुक्ति की नवज्योति
मेरा शब्द स्तालिनग्रेद
फिर से चल उठे झंकार
रह रह—
नाज़ियों के बीच
उठी हैं शक्ति फ़ासिस्टी
कुचलना है हमें इनको
बनेंगे दास मृत्युञ्जय ?
झुकादो दर्प क़ातिल का
खड़ा हर मुल्क लड़ने को
कुचल दो आज पूंजीवाद का
अंतिम प्रयत्न विषाक्त यह
ओ गीत !
एक झोंका वायु का बन
यह जगादे देश
भूला देश

लग रही जो आग
हिंद का हर भाग
जो झुलसता जा रहा है हार
एक बादल सा घुमड़ कर रोर
फिर मिटादे भूख यह
दासत्व बंधन तोड़

एक नंगा वृद्ध
जिसका नाम लेकर मुक्त
होने को उठा मिल हिंद
काँपते थे सिंधु औ' साम्राज्य
सिर झुकाते थे मिलमगर त्रस्त
आज वह है बंद
मेरे देश हिंदुस्तान
बर्बर आ रहा जापान
जागो ज़िंदगी की शान
निबल करती फ़ूट है यह ?
क्या हुआ गर लूट है यह
क्या हुआ यदि भूख है यह
शक्ति जनता की अमर है
शक्ति वह जिसकी भुजा पर
ताज औ' पिरमिड बने थे
सिकन्दर की विजय जिसकी दास
बैज़न्टाइन बैबीलोनिया औ' गुप्त
मुग़लिया वैभव स्वयं ज्यों श्वास
जागे भूल मदमय भूल
लहरों से उठे, पर धूल
हाँ हाँ धूल के बन ढेर
बिखरे छोड़ टूटा गीत

शक्ति वह जनशक्ति
महलों की तड़पती नींव
अब भी है
पराजित हो नहीं सकती
दबाये दब नहीं सकती
उठो ओ वीर !
भीषण शैल से गंभीर
जागो मुक्त माँ की आन
फिर हिमालय सा उठे यह शीश
यमुना घाघरा गंडक,
कि पतली गोमती की धार
मिल मंदाकिनी सी मुक्त
एके की अमिट यह धार
सींचे फिर झुलसता देश
लहरें शक्ति के ही खेत
जागो अमरता के गान !

आह वे साम्राज्य
बन दुःस्वप्न के अभिशाप
वे इतिहास कारा बद्ध
नतशिर त्याग गरिमालाभ
ठोकर खा प्रबल जनशक्ति
की, करते विकल चीत्कार
प्यारे देश हिन्दुस्तान !
मिट गये साम्राज्य
बंधन भाव
एक शिशु पग चिन्ह से वे
समय पथ से मिट चले हैं
मिट न पाया कौन
जनता, यह प्रबल जनशक्ति
जीवन युद्ध की अभिव्यक्ति
मानव बंधनों की मुक्ति
तोड़ कर इतिहास का तम

देख अपनी शक्ति
जीवन की अपरिमित शक्ति
युग युग से खड़ी चट्टान !
वर्ग वैभव के अनेकों
दीप तम में झिलमिलाये
किन्तु उठता लाल सूरज
देख निष्प्रभ सकपकाये
किंतु यह जनशक्ति
सागर सी थपेड़े मार
मेघों सी घुमड़ घनघोर
अक्षय अमरता अभिराम
अब भी बढ़ रही जयमान !

आर्य्य आये द्रविड़ बांधे
किन्तु उनके रंग का अभिमान
नील जलधर वर्ण में लयमान
पूछता सत्ता भटकता आज
और आये, और खोये,
यवन, पल्लव, शक,कुशान,
हूण आये
लड़खड़ाकर गुप्त-वैभव
गिर गया अभिभूत
किंतु जनता-सिंधु में वे
खो गये जैसे लहर अनबूझ
और बाबर के विरुद्ध
उठे लोदी, उठे सांगा
बाहरी पा शक्ति
किंतु
अकबर एक एके की
प्रबल धर नींव था मजबूत
वह शिवाजी उठा केवल
ले मराठा शक्ति
शोषित त्रस्त ले जनशक्ति

सिकन्दर बल वह हो गया था चूर
क्योंकि जनता से रहा था दूर,
अरे वह जनक्रान्ति
जिससे ध्वनित अब भी फ्रांस—
युवक वह नैपोलियन भी,
उठा जनबल साथ;
वह मुहम्मद और ईसा
वह कबीर, अनेक,
और वह तुलसी हंसा था
मुग़ल वैभव देख
और सत्रह सौ छहत्तर ईस्वी कर याद
गरजता अतलान्त अबतक
उठे सब जनशक्ति पर ही;
आज जो साधारणों से
सतत अभिमानी विशद इंगलैंड
का बना मंत्री खड़ा है कौन ?
अरे वह जनशक्ति का ही—है प्रतीक!
और दस दिन मॉस्को के
हिल गया था विश्व !

आज मैं
तुमको सुनाऊँ गीत
रूस की यह जीत !
चीन जिसको देखकर बलमान
जाग मेरे त्रस्त हिन्दुस्तान
सन अठारह, सन बयालिस
एक ज़ारिस्सिन लड़ा था
एक स्तालिनग्रेद
हिंद के हित युद्ध दो यह
एक....................
विजय जनता की अपरिमित
आग है दिल में घुमड़ती
तू युगों का एक तारा
छिप गये सब तू न हारा
हिमालय सा प्रबल उन्नत
सिंधु सा गंभीर भीषण
विन्ध्य सा उन्मत्त बीहड़

युगान्तर की ज्योति तुझ में
देख—
भूखा आज है बंगाल
तिरवांकुर मालाबार
सारा देश
जन जन आज
जाग मेरे देश
लहरों सा चले यह पाश
झोंकों का मिला तूफ़ान
देखें कौन ऐसा ज्वान
सम्मुख कर सके अभिमान
मेरे हृदय हिन्दुस्तान !
भूल मत संसार आगे
बढ़ रहा है तोड़ बंधन
भूल मत अब भी गगन में
भर रहे हैं विकल क्रन्दन
कौन है जो दाब लेगी
यह धधकती अग्नि भीषण
शक्ति—ऐसी शक्ति
कुचलेगी विषैले शत्रु के फन
वाहनी
उन्मादिनी
तेरी चलेगी विजयिनी
संसार कांपेगा
कि जग में ज्वार आयेगा
बहेंगे सब कलुष धुलकर—
उठेगा चीन विजयी हो
उठेगा हिन्द विजयी हो

उठेगा रूस विजयी हो
उठेगा वह विकल यूरुप
कटेंगे बांध साम्राज्यी
मिटेंगे बांध पूंजी के
कि अमरीका
कि अफ़रीक़ा
सभी हैं एक
वह इंगलैंड जागेगा
न क्यों विश्वास
यह जनशक्ति शाश्वत है
अमर है, मुक्ति है
कायर !
न डर
भला जुल्मों से डरता तू
भला बाधा से रुकता तू
तड़पता भूख से व्याकुल
सड़ा अपमान में गल गल
विजयिनी कौन ?
मानवता
कि यह जनता
उठा सिर
देख गिरता है
किसी के शीश से वह ताज

हिलते आज सिंहासन
अनेकों पीढ़ियों के पाप
धो दे आज तेरा खून
जागो नये हिन्दुस्तान !
गगन चमका
भरे तारे
खो गये पर सब भ्रमण कर
दूर बिखरे
टिमटिमाये
किंतु ध्रुव तारा
न हारा
आज भी सब घूमते हैं
भ्रमण करते भूमते हैं
देख मानव मुक्ति का यह दीप
इसकी ज्योति में तू जीत
गा। उठ गीत—
बंदी जाग
घर में लग गई है आग
चल बाग़ी प्रबल हुंकार
जागो याद कर गत मान
मेरे प्राण हिन्दुस्तान
स्तालिनग्रेद हिन्दुस्तान ।

२

एक प्रबल विस्फोट भयानक
धुंआधार फिर अंधियारा
गरज उठी बासठवीं सेना—
आया दुश्मन हत्यारा

निर्भय बन्दूकें कंधों पर
आँख खोल कर तत्पर थीं
तोपों में से लाल ज़बानें
करतीं रह रह लपलप थीं

कंधे ऊँचे, गर्दन ऊँची
एन्टीएयर–क्राफ्टगन कर
आस्मान से आँख लड़ाये
ताक रही थीं आज निडर

सब पर हिम्मत सी छाई थी
आज हुए सब मृत्युञ्जय
नई सृष्टि रचने वालों पर
उमड़ रहा था आज प्रलय

तूफ़ानी लहरों में उठकर
खड़ी हुई चट्टान अभेद
जर्मन सेनाएं बढ़ती थीं
और खड़ा था स्तालिनग्रेद

आज रूस की लाल शान पर
वार कर उठा था बर्बर
जिसका चिर विरोध करती सी
थी वोल्गा में मत्त हहर

बर्फ गिर रही थी रुई सी
अंधा करना चाह रही
कहती थी फ़ासिस्टो भागो
यहाँ मिलेगा पार नहीं

चारों ओर भयानकता है
चारों ओर कठोर हृदय
यहाँ मौत जीना न रहा है
लड़ कर लेनी आज विजय

और एक हमला, बन्दूकें
उगल उठीं अंगारों को
तड़प तड़प गिरते थे योद्धा
सह न सके हुंकारों को

दुनिया की आँखें हैं हम पर
यहाँ लाल झंडे की टेक
बच्चा बच्चा गरज रहा था
खड़ा रहेगा स्तालिनग्रेद

चौबिस बरस बाद तेइस को
और अगस्त मास में ही
वार किया है फिर दुश्मन ने
अपने अंधेपन में ही

ये घन शीघ्र बिलम जायेंगे
फिर भी करते बज्र प्रहार
वह अंधियाली बीत चुकी थी
यह घिरते आते हर बार

टैंक बैटरी पैदल सब ही
आये थे लेकर गर्जन
सन् अट्ठारह का रण शंकित
देख रहा था खोल नयन

बदल गये रण बदल गये दिन
पर आज़ादी जीवित है
हिम्मत है हर जन में, दुर्गम
यह जन क्रान्ति असीमित है

अब के गर्जन बधिर बनाता
अब के मृत्यु सतत खेली
स्तालिनग्रेदी चिर साहस ने
जो गर्वोन्नत ही झेली

जला नगर ज्वाला में खोया
धूंए में हुंकार उठा
गगन भूमि का भेद छिप गया
तम का पारावार उठा

एक बार फिर आयुध गूंजे
बर्बरता का घोष उठा
ईंट ईंट से मानवता की
गर्जन करता रोष उठा

क्रान्ति दुर्गसा ज़ारित्सिन यह
स्तालिन की ले शक्ति अपार
उठा नृत्य करने को युग युग
गूंजेगा बन रिपु की हार

सन अट्ठारह में उठ पाया
लास्य चरण जो राग लिये
बयालीस में उठा दूसरा
तांडव का उन्माद लिये

गिरते जर्मन यूरूप भर में
राष्ट्र उठ रहे हैं एक एक
रवि गिरते ही बुद्बुद करते
जगते ज्यों नक्षत्र अनेक

वोल्गा की दुस्तर धाराएँ
पग धोती रहतीं जिसका
उत्तर दक्षिण-निशा दिवा को
भोर सदृश ज्यों मिला रहा

रेतीले तट छहरा करते
और क़ाज़किस्तान विशद
अपने स्टैपी लहराता है
पीछे छाया सा अविरत

डॉन और क्यूबन की सुन्दर
मोहित श्यामल उपत्यका
योद्धा सा देखा करता है
दृढ़ वक्षस्थल फुला फुला

और क्रान्ति की मंज़िल बनकर
आज ख़ून से न्हाता है
जिसकी प्रतिध्वनि से कंपित हो
नभ भी झुक अलसाता है

स्तालिनग्रेद नगर युग युग से
मर्य्यादा अक्षुण्ण लिये
खड़ा हुआ है बना महागिरि
रिपु की धारा छिन्न किये

सन चौदह के महायुद्ध में
यहीं मान था जीवन का
निर्भर था कण-कण पर सुखदुख
और भाग्य वह जन जन का

सन अट्ठारह में मज़लूमों
ने जीता था ज़ारित्सिन
अरे प्राण दे रक्षा की थी
करती जो अबतक प्रतिध्वनि

क्रैस्नोव की वह सेनाएँ
उत्तर दक्षिण के अभियान
स्तालिन के उन भुजदण्डों ने
लौटाये थे जर्जर म्लान

तब तो लेनिन भी जीवित था
और ट्रौट्स्की निर्बल था
महाक्रान्ति के सफल चरण ने
नृत्य किया था चंचल सा

अरे भोर की लालिम ने हो
तब धो डाली रात गहन
अब दुर्दिन के ये भीषण घन
अभिमानी करते गर्जन

किर्गीज़ कौसेक रूसी उज्बेक
मंगोली सब भाई हैं
अपनी अपनी संस्कृति बढ़ती
सब ने राह सुझाई हैं

बर्फ चीर कर साइबेरिया
जिनके बल से हारा सा
सोना उगल रहा है रह रह
बहा रहा वैभव धारा

कल तक उसमें मानवता के
फूल सड़ाये जाते थे
आज उन्हीं की गंध फैलती
चेतन संस्कृति लाने से

यह ज़ारित्सिन अरे यहीं तो
नींव पड़ी इस संस्कृति की
स्तालिनग्रेद चिन्ह था उन्नत
मानवता की उन्नति की

शांति और कल्याण कूकते
वोल्गा लहरें शांति मयी
आलिंगन थे कर्त्तव्यों के
आशाएँ थीं कांतिमयी

मरकत सी हरियाली हँसती
हीरों से घर ज्योति भरे
नीलम सा नभ और स्वर्ण की
लहरों ने थे रास रचे

वोल्गा पर स्टीमर आते थे
गूंजे गीत अमल सुन्दर
धूप प्राण सी बिछला करती
तरु तरु में कोमल मर्मर

धूआँ-ट्रैक्टर प्लॉट विशद से
रैड ऑक्टोबर बैरीकेड
चिमनी में से घुमड़ लहरता
श्याम लहरियां करतीं खेल

बाज़ारों में स्वस्थ मनुज हैं
सुनते मशीनरी का नाद
प्रबल ठहाके मार रहा ज्यों
सागर का भीषण उन्माद

जीवन जीवन शक्ति अपरिमित
और प्रकृति से है संघर्ष
क्रम क्रम मानव जीत रहा है
नूतनता आती हर वर्ष

शुभ्र बने घर फिर हरीतिमा
नगर अनोखा लगता है
वोल्गा की धारा में जिसका
बिंब स्वप्न सा लगता है

रात कभी जब तारे नभ में
टिमटिम झलका करते हैं
वोल्गा की लहरों पर मांझी
अपने स्वर को भरते हैं

दूर नगर में जलती जगमग
विद्युत ज्योति प्रखर उज्ज्वल
एक ज्योति की शृंखल सी ही
लहरों तक आती चंचल

कलरव हलचल खेल कूद वे
नाटक सर्कस होटल स्टोर
जन जाग्रति की शक्ति मचलती
भरती दिगदिगंत में रोर

महानगर से गीत उमड़ते
स्वर वोल्गा को सिहराता
गुंजित लहरों में कंपनमय
ज्योति लहरियां छितराता

नहीं विश्व ने देखी अबतक
वह समृद्धि घर घर आई
चिर समानता की सुहृदयता
जन जन में भर भर लाई

यही सोवियत् संस्कृति बिरली
पूंजीवादी दुनिया में
जिसकी उन्नति देख रहे हैं
स्वार्थ भरे जन दिल थामे

आज किंतु अणु अणु से उठती
महा साम्य ध्वनि गीतों में
मानव निर्माता हैं जग के
नव रचना की जीतों में

पर न सोवियत के बाहर है
ऐसा दृश्य मधुर सुन्दर
मानव कर न विभाजन पाया
अपने उत्पादित श्रम पर

आज हाय यह भूला मानव
भटक रहा है डगर डगर
उसका असंतोष छाया है
इस जीवन की लहर लहर

यहाँ निरंतर शोषण होता
एक दूसरे का अविरत्
यहाँ मधुर श्रम बह जाता है
रह जाता जन मूक दुखित

रंग भेद से बनी सभ्यता
वर्ग भेद से विकल समाज
जन्म भेद से सुख दुख मिलते
जीवन भर विकृत अभिशाप

यहाँ स्वप्न सपने ही रहते
जाग्रत मानव रोग ग्रसित
यहाँ वासना के दुर्बल पशु
अपमानों में पड़े तृपित

अधिकारों के अहंकार में
जीवन नित्य नई पीड़ा
यहाँ ज्ञान का दीपक धुंधला
जलता है, कायर कीड़ा

एक भार सा यौवन आता
जिसमें स्वार्थों की तृष्णा
और जरा में मानव झुकता
घेर रहीं आंधी कृष्णा

यहाँ परस्पर द्वेष क्लेश में
अपनी ज्योतित राह भुला
क्षण-भंगुरता के पाशों में
नियम हीन जीवनी झुला

बना लिया भगवान एक है
एकच्छत्र प्रबल शोषक
धर्म न्याय का दंड वर्ग-सुख
अत्याचारों का पोषक

रन्ध्र रन्ध्र में असन्तोष है
तंतु तंतु में शोक रहे
प्रकृति नियम से यह विरोध
कर अंधकारमय ओक करें

यहाँ मृत्यु की मीठी निद्रा
में यह मूर्ख कांप डरता
यहाँ युगान्तर का प्रकाश भी
तम में बद्ध विकल रहता

हिंसा की स्वार्थी ज्वाला में
सत्ता का है युद्ध मचा
यहाँ रक्त के प्यासे मानव
प्रकृति साम्य ही नहीं बचा

जीवन भर श्रम करता कोई
नहीं पेट भर खा पाता
और आलसी वर्ग मज़े में
अधिकारों का निर्माता

यहाँ स्त्रियाँ हैं पेट दिखातीं
बिकतीं हैं दर दर भूखी
यहाँ स्वामिनी दासी ही हैं
उलझी सी दुर्गम गुत्थी

यहाँ पड़ा करते अकाल हैं
वितरण ठीक न हो पाता
अपने दोषों को ईश्वर की
छलना के सिर धर आता

यहाँ महल है एक, मगर हैं
सड़े हुए घर लाखों ही
यहाँ चोर घूमा करते हैं
सज्जा रखकर शाहों की

यहाँ बात के दीपक जलते
पर कर्मों का अंधियारा
ऐसी दुनिया में उठता है
अरे सोवियत् का तारा

लंदन औ' न्यूयार्क नगर में
नारी बिकती फिरती हैं
कलकत्ता मदरास आदि में
भिखमंगों की बस्ती हैं

मॉस्को स्तालिनग्रेद नगर में
मानव ऐसा दीन नहीं
अरे पेट के लिये वहाँ है
कोई ऐसा हीन नहीं

बर्लिन, रोम, टोकियो भींगे
मजदूरों के खून भरे
यहां स्वयं मजदूर शक्ति है
वह क्यों कोई भेद करे

अमरीका ब्रिटेन आदिक से
इनके हैं साम्राज्य नहीं
यहां फूट वैषम्य गुलामी
के विषमय व्यापार नहीं

यहां गांव का एक खेत है
यहां कारखाने अपने
यहां सभी की शक्ति सम्मिलित
मूर्तिमान करती सपने

आज अनेकों महाप्लैंट हैं
जिनमें हैं लाखों मजदूर
अब जहाज बनते हैं अविरत्
विद्युत शक्ति बनी भरपूर

कल की नीरवता को तोड़ा
कई कारखानों ने भी
बनी पुरानी, उठतीं नूतन
किन्तु नहीं रुकती श्रेणी

बीस बरस में यौवन आया
विद्यालय बन गये अनेक
आज उफनती शक्ति नई है
अपने श्रम का उन्नत वेग

झोंका आते ही पानी में
लहरें ज्यों कर उठतीं रोर
पग पग पर संस्कृति गति भरती
सभी चले उन्नति की ओर

आज न पथ पर धूल मिल रही
सड़कें नई बनाई हैं
जिन पर मानव की मेधा ने
साधन शक्ति लगाई हैं

अंधकार की सघन विकलता
बिजली ने बिखराई है
ठौर ठौर हैं स्तम्भ प्रकाशित
ज्योति नई उमगाई है

आज न मानव दास यहाँ पर
जन्म वर्ग के भेद नहीं
एक शक्ति बन कर वे दृढ़ हैं
भौतिक बंधन खेद नहीं

नारी नर सी ही स्वतंत्र हैं
शिशु भी शिक्षा पाते हैं
जन जन मानवता के सुख
की बातें उन्हें सिखाते हैं

संध्या की धुंधली छाया में
उपवन में हँसियाँ गूंजीं
उत्साहों के प्रबल वेग लख
ममता ने आशा चूमी

छोटे झुके हुए घर उन्नत
युग स्तभों से उठ आये
जिनमें से प्रतिध्वनित रेडियो
स्वर समीर पर लहराये

बीत चुके हैं चौबिस जाड़े
चौबिस बार झरे पत्ते
चट्टानों से खड़े हुए हैं
वे उस दिन के मृदु बच्चे

चौबिस बार भ्रमण कर पृथ्वी
घूम रही अब भी अविराम
सतत चल रही जीवन पथ पर
मानवता अब भी अभिराम

इन वर्षों में रूस देश पर
जग भर की थी दृष्टि गड़ी
किन्तु सोवियत शक्ति अपरिमित
महा सूर्य सी मुक्त अड़ी

काले काले केश पक गये
और समय ने रेखायें
स्निग्ध मुखों पर खींचीं रह रह
किंतु न बुझती लिप्साएँ

वे घर दृढ़ प्रस्तर पेशी से
ऑरलौफ़ से खड़े अभेद
जो कल शैशव में मृदुतन था
आज युवक था स्तालिनग्रेद

मज़दूरों ने अपने बल से
नये विश्व की नींव धरी
सींच ख़ून से फ़सल उगाई
उस पर बिजली आज गिरी

जो मिट्टी के बना घरौंदे
खेला करते थे पथ पर
आज दुर्ग के प्रहरी बन कर
खड़े हुए थे मुक्त निडर

अंध तमस में ज्योति जली थी
संस्कृति पथ पर चल मज़दूर
पूंजीवादी वर्ग-मान को
करता था रह रह कर चूर

कल के मिट्टी के ढेले ही
लोहा बन कर गरज उठे
कल के पौधे महावृक्ष बन
छाया देते झूम उठे

ढंका समय ने घास पेड़ से
कल के युद्ध स्थलों को था
जाग चलाता था अपने कर
जो कल तक शिशु सा सोता

सन् सत्रह की अमिट अमानत
आज बचानी ही होगी
शान शहीदों की मर कर भी
आज निभानी ही होगी

संस्कृति के इस नये पक्ष को
तम से रक्षित करना है
अरे धरा पर सागर लहरे
पर इस घर को बचना है

यह पैरिस का गर्व नहीं जो
रहे पराजय पर बाकी
जीवन है तो सभी शक्तियाँ
बन जायें अपनी दासी

लेनिनग्रेद नगर चिल्लाया
व्लेडीवोस्टक गूंज उठा
एक शब्द बन क्रोध अगन का
फिर शस्त्रों को चूम उठा

रक्त शोषकों के जुल्मों को
भूलेगा इतिहास नहीं
फिर मज़दूर किसान उठे हैं
दब पायेगी आग नहीं

अरे पाँच घंटों का दिन है
पहले तो दिन रात मरे
अब जो है वह सब अपना है
पहले अपना किसे कहें

अब जीवन के ये सुख सारे
हर मानव के साधन हैं
पहले वर्गों के हित मरते
अपराधों के ताड़न में

अरे आज हिटलर की फौजें
मज़दूरों के उठीं विरुद्ध
कुचल रही हैं देश देश को
आज आ रहीं भीषण क्रुद्ध

अगर बह गये इस धारा में
फिर तो कोई पार नहीं
उठो उठो—सब फिर चिल्लाये
आज रोक दो धार यहीं

शंकाओं से हृदय भरे थे
तत्परता का था संदेश
क्षुब्ध हो रहा था नभ भूला
विचलित सा था स्तालिनग्रेद

३

घेर रहे हैं जर्मन रह रह
स्तालिनग्रेद नगर क्षण क्षण
गोलाकार पंक्ति में बढ़कर
दाब रहे करते गर्जन

पीछे वोल्गा थी कोनों से
जिसको जर्जर करते थे
एक ढाल में ढाँप साँप को
बिल्कुल निर्बल करते थे

जैसे वह वोल्गा कमान थी
जर्मन–वृत्त धनुष सा था
इनके बीच आज रूसी बल
कारा में घिरता जाता

एक चपेट कि इन लालों को
आज डुबादें वोल्गा में
प्रलय सिंधु की लहरें बनकर
जर्मन बढ़ते तृष्णा में

अरे यही है अंतिम बंधन
आज इसी को खोलेंगे
भग्न विमर्दित मज़दूरों का
रक्त धूलि में घोलेंगे

बिजली बनकर गरज उठा था
हिटलर यूरुप शस्यों पर
टूट पड़ा था जला दिये थे
उन्मद हँसता विजयों पर

ख़ून वार्साई का बोला
जड़ें काँपती लन्दन की
थहर उठा न्यूयार्क दूर पर
सहमी आशा जन जन की

उठा वेग से उठा प्रबलतम
उठा कि झुकना क्या जाने ?
घास फूंस सा यूरुप कुचला
आर्य्य दंभ के गा गाने

साम्राज्यी ईगल जिसका वह
लगा गगन में मँडराने
प्रेमीथियस बद्ध विह्वल था
आज पराजित भय माने

पृथ्वी जीती नभ को जीता
देश देश चरणों पर भ्रांत
हाहाकार कर उठे रह रह
रक्त बहा उर उर से क्लांत

जिनकी शक्ति अक्षुण्ण वेग थी
फ्रांस विकल हो चरणों पर
उफने वैभव का विलास अब
पटक रहा पाषाणों पर

आज दासता के वे बन्धन
सारा जीवन घोट रहे
अभिमानों के महल भग्न हो
विकल धूलि में लोट रहे

वह ब्रिटेन जो साम्राज्यों का
अंतिम बना खलीफा है
काँप गया लख कर कमाल यह
मान हो रहा ढीला है

यह समुद्र था और नहीं तो
गगन भरा फासिस्टों से
खंडहर से वे महानगर थे
गिरते भीषण चोटों से

लोहे के अभिमानी इंगलिश
इस गर्जन से भीत हुए
महा घृणा में उस हिटलर की
सुन सुन कर वे त्रस्त हुए

जो भारत को कुचल रहे थे
उन पर जब आघात हुआ
साम्राज्यी वर्गों के कारण
जनता का ही नाश हुआ

वह मजदूर ब्रिटेन देश के
बचा सके वह ही पानी
चेम्बरलेनी घृणित चक्र थे
भूल चुके अपनी वाणी

हिटलर भी बल में मदमाता
अवहेला कर जनता की
ख़ून पी रहा नरमुण्डों में
जड़ें खोद मानवता की

सन् इकतालिस में मजदूरों
पर निशि में बढ़ बढ़ आया
सोता सिंह बाँध कर उसमें
दुगना दर्प समुद छाया

वह ब्रिटेन की साम्राज्यशाही
जो कि रूस की दुश्मन थी
आज बढ़ाती थी अपना कर
मलिन लिये श्री आनन की

मजदूरों ने थामा कर को
वह ब्रिटेन भी अपना था
मजदूरों के मुल्क सभी हैं
साम्राज्यशाही ढंकना सा

छः हफ्ते छः वर्ष बन गये
दस हफ्ते दस युग से थे
रूसी दुर्गम जनसमुद्र में
थके हाथ उसके खेते

विजित भूमि में पूंजीवादी
संस्था फिर से बना बना
हिटलर पूर्ण शक्ति योजित कर
देख रहा अपना सपना

जो नैपोलियन भी न कर सका
आज करेगा हिटलर ही?
पर चंगेज़ हँसा—बीते वह
महल पड़े हैं खंडहर ही

तीन डिवीज़न मोटर भीषण
ग्युडेरियन टैंकों की फौज
टूला वोरोनेज़ तोड़ कर
घेर घेर बढ़तीं, रव घोर

हिटलर स्तालिनग्रेद नगर पर
गड़ा रहा था अपने दाँत
विजय हुई थी एक खेल सा
काँप रही थी दुनिया भ्रांत

वह ब्रिटेन की फौज पड़ी जो
उस ईरान देश में मूक
हिटलर की चोटों की सुनकर
साहस रह रह जाता टूट

साम्राज्यशाही एक रखेली
फ़ासिस्टी तो वेश्या है
पातिव्रत की आड़ बना कर
धन पर जीवन बेचा है

पर यह ऐसा देश मिला था
नारी भी है जहाँ स्वतंत्र
कोई दबा न सकता जिसको
कण कण है जिसका निश्शंक

टैंक डिवीज़न वह सोलहवाँ
क्लीस्ट टैंक सेना का भाग
सोकल, दुबनो, किर्वोग्रेद औ'
नीप्रोपैत्रोवस्क अपार—

खंड खंड कर विजय पताका
फहराती-रोस्तोव विशीर्ण
बढ़ती आती थी हुंकृत सी
रौंद धूलि पथ की विस्तीर्ण

हिटलर के इंगित पर गरजीं
महाप्रलय की यह लहरें
जिनकी पगध्वनि के विध्वंस में
आज राष्ट्र भयमय सिहरें

'अरे आर्य्य जीतेंगे निश्चय
वीरो निर्भय बढ़े चलो'
हिटलर स्वयं संचलन करता
कहता—'विजयी बढ़े चलो

यह रण आर्य कीर्त्ति का मणि है
उसे मुकुट में जड़ना है
उसकी विजय अनार्य्य कलुष का
इस पृथ्वी से मिटना है

वह आठवीं पदातिक टुकड़ी
ग्रोद्नो, मिन्स्क, व्हात्स्क स्मौलैंस्क
भग्न और विदलित कर उमड़ी
महाशक्ति भर कर ज्यों टैंक

अगणित बल ले विजय वाहिनी
स्तालिनग्रेद घेर चलती
आज गिरादो स्तम्भ, ढहेगा
बोल्शेविक घर निश्चय ही

आर्य्य पताका फहरायेगी
विश्व दास बन जायगा
सरक गयी धरती नीचे से
सुनकर हिटलर आयेगा

भग्न करो बस ध्वंस करो बम
महानाश का तांडव हो
शत्रु रक्त पीकर यह ईगल
युग युग फहरे हर्षित हो'

दिशा दिशा व्याकुल कंपती थी
पृथ्वी थर थर दहल रही
महापिपासा नाज़ीबल की
विदलित करने मचल रही

'आओ मेरे श्वास तुम्हारे
जीवन को यौवन देंगे
नवल स्फूर्ति की महाशक्ति से
आर्य रक्त भर भर देंगे

स्तालिनग्रेद ! अरे लेकर ही
जीत सकेंगे हम संग्राम
युग युग तक कोने कोने में
गूंज उठेगा उज्ज्वल नाम'

क़दम क़दम नव शक्ति मचलती
भुजा भुजा में था उन्माद
नयनों में वैभव की छाया
उर में विजय विजय की आग

चले रक्त पर चले मांस पर
चले कुचलते देशों को
जिनकी छाया में बर्बरता
उगा रही थी क्लेशों को

सूर्य्यपुत्र 'जापान उधर था
आर्य्यपुत्र था इधर चला
देव सृष्टि का यह जलप्लावन
मानवता पर उमड़ चला

'स्तालिनग्रेद नहीं बच सकता'
हिटलर कह कर पुलक उठा
महाशक्ति की भीषण ज्वाला
थहराता वह उमँग उठा

जिसकी आकांक्षा पर नत हो
रोते बालक हँसते थे
जिसकी आज्ञा से भाई भी
भ्रातृरक्त से रँगते थे

यहूदियों की अंतिम आहें
जिसके क्रोध जगाती थीं
स्वतंत्रता की सत्ता जिसके
गर्वों को उकसाती थीं

मज़दूरों की उन्नति जिसके
आदर्शों को ठोकर थी
शक्ति केन्द्र मज़दूर बना वह
अधिकारों का नौकर ही

'हम मुट्ठी में पीस उठेंगे
बर्बरता का वह अवशेष
कोई शक्ति न रोक सकेगी
लेना होगा स्तालिनग्रेद !'

वह पोलैंड वाहिनी जिसकी
जग भर में भय कारण थी
चौदह दिन में धूंआ बनकर
उड़ी गगन में व्याकुलसी

एक एक दिन में ही हमने
राष्ट्रों को अभिभूत किया
वह 'मैगीनो लाइन' विवश कर
रिपु को चकनाचूर किया

मेरे पीछे आओ आर्यो !
जग थर्राता है यह देख
तुम न जीत पाओगे ऐसा
क्या वह दुर्गम स्तालिनग्रेद ?

यह समस्त यूरुप साथी है
इटली आदिक वीर यहाँ
यह समग्र बल जीत न जाये
बोलो ऐसा धीर कहाँ

बहुत दिनों से लाल लाल कह
रूस हुआ अभिमानी था
आज रक्त बह जाये भू पर
झिल मिल करता पानी था

४

संध्या का वह झिलमिल अंचल
धीरे धीरे फहर रहा
पीत पराग बना किरणों का
मलय चलित मन बिखर रहा

स्टेपी रोम रोम से मृदु थे
भूमि सो रही थी तृप्त
वे घर शांति भरे अणु अणु में
सुधियां खेल रहीं इप्त

वोल्गा की कोमल लहरों में
गुंजित अंगराई लेती
दिनकी शिथिलित वह आकुलता
पलकों को मूंदे लेती

आज किन्तु इस टीढ़ी दल को
देख उमड़ घिरता आता
संस्कृति-पालक हर किसान में
नया जोश भरता जाता

रेड ऑक्टोबर का निनाद वह
नभ में रह रह डोल उठा
आवाहन सा मंथर मंथर
धीर उभरता बोल उठा—

क्या है यदि अंधियाली आई
चंदा भी तो आया है
भूलो मत रजनी जाते ही
नभ में सूरज आया है

यह अंधियारा दास बनेगा
दीप जलाने वाले सुन
बर्बर झंझा सिर पर आती
पहले ही फूलों को चुन

कांटों को रहने दे, निर्भय
वह तो रिपु को भेदेंगे
फूलों की रक्षा के हित ही
अपना जीवन दे देंगे

वह दीपक जो अभी जले हैं
और स्नेह इनका कोमल
दोनों रहें अडिग कल ही यह
काटेंगे वह तम बोझल

स्त्रियों और बालकों हीन अब
चमक रहा था बनकर तेग
म्यान हट गई, लगी प्यास थी—
तड़प रहा था स्तालिनग्रेद

जारित्सिन के भीषण रक्षक
वृद्ध होगये थे झुकते
पर वाणी में चिर साहस के
झोंके रह रह कर उठते

आज गरजती तोपें भीषण
बंदूकें हैं कड़क रहीं
स्फोटों से है कंपित पृथ्वी
दीवारें हैं तड़क रहीं

अरे याद है वोल्गा तट पर
रक्त बहा कर हम आये
जारित्सिन की रक्षा में ही
अपने साथी बिलमाये

हाथ नहीं है मेरा बांया
उसका जो है नेत्र नहीं
कौन ले गया रूप हमारा
पूछो सब से आज यहीं

उस दिन हममें नवयौवन था
युवती थीं यह वृद्धाएं
पूछो माताओं से पूछो
जिनके दृग भर भर आयें

युवको तुम केवल मृदु शिशु थे !
मांएं छाती से चिपका
दौड़ दौड़. गोली देती थीं
विस्फोटों में भी अचला

हां ! स्तालिन भी यौवनमय था
पर वह लड़ता है अब भी
हम भी युद्ध करेंगे पल पल
हटना आज न डग भर भी

बीत गये वह दिन कलुषों के
बीत गये वह काले दिन
अत्याचारी-रक्त बहा कर
धोये हमने पाप अगन

पर जो खाद बने गिर भू पर
खोये थे उस दिन अज्ञात
फूल बने तुम उस वैभव के
आज उगे गंधित अवदात

वह था रक्त कि जिससे सिंचकर
आज खड़ी है जागृति ये
अरे प्रगति के प्रहरी जागो
घहरीं काली आकृति वे

जो उस दिन बरबाद हुए थे
वे हृदयों में जीवित हैं
जीवित हैं वह सुख में जग के
संस्कृति मार्ग असीमित हैं

व्हाइट गार्ड्सको मिला धूलमें
हमने यह निर्माणित कर
बूंद बूंद कर सिंधु बना है
आया रिपु अपमानित कर

तुम क्या जानो जीवन क्या था
ज़ारों के भय शासन में
कैसे पशु बन कर मरते थे
हम अनबूझे ताड़न में

हम केवल सत्ता के धारी
सदा ग़रीबी में सड़ते
तब राहों पर गंदे भूखे
आंतों को पकड़ा करते

तब ज़ुल्मों का भयद प्रभंजन
बुझा रहा था अपने दीप
लुटता था अभिभूत मान यह
पूछो माताओं से सीख

शाही वैभव खड़ा हुआ था
धधकाता था सूने दिल
चूहों से झांका करते थे
खोल खोल हम अपने बिल

क्षुब्ध हुए नयनों में आंसू
निशि दिन जलते रहते थे
चकनाचूर हुए वे अरमाँ
सबके भीतर पलते थे

यह जो वैभव आज खड़ा है
यह जो तुममें यौवन है
अरे पूर्वजों की बलियों पर
करना अब अभिनन्दन है

पहले सर्कस होटल थ्येटर
स्टोर स्कूल क्लब बाइसकोप
हम क्या जान सके थे क्या हैं
अरे निरक्षरता का घोप !

पर स्तालिन आया था उस दिन
नयनों में लेकर विश्वास
अनबूझों में ज्योति जगाई
उसने भर जीवन की श्वास

वे बूढ़े क़ज्जाक कि जिनका
जीवन सेना की बलि था
समझ न पाते थे कैसे भी
खुलना जनता की कलि का

युग युग से वह पशु से नत थे
बुद्धि बेच कर जीवित थे
ज़ार बिना जीवन न सोचते
अगन भाँति से पीड़ित थे

बोल्शेविक पार्टी ने हम पर
था इतना विश्वास किया
इसी लिये तो मर कर भी हम
रहे, उसे उत्साह दिया

जनता पर विश्वास करो वह
कभी नहीं धोखा देगी
वही न्याय की असली पारख
सच्ची राह सुझायेगी

बोल्शेविक पार्टी अपनी है
उसने यह सुख दिखलाए
बेटा! जीवन के विकास के
प्रथम चरण पर हम आये

अंधकार के गंदे कीड़े
मानव बनकर आज स्वतंत्र
पूंजी के खूनी दाँतों को
किया हमारे बल ने भंग

अब किसान की गाढ़ी मेहनत
नहीं पसीना बन बहती
उगती है जो फसल उसी की
सुख उन्नति में है लगती

अरे घृणा करना हम भूले
पर फिर उसको जगना है
आज नाज़ियों की ज्वाला में
तुम्हें स्वर्ण सा तपना है

वह कायर है जो अपने हित
सोचा करता है संसार
फूलों का रस लेकर करता
भूल भुलैया सी गुंजार

जागो वीरों की गोदी के
लाल! आज तुम प्रहरी हो
ऐसी चोट करो दुश्मन पर
मार अनोखी गहरी हो

अरे रक्त वह जो कि बहाया
आज वही है बैरीकेड
रैड ऑक्टोबर आज वही है
आज वही है अपना वेग

चौराहों पर कला मूर्त्तियाँ
अपनी ही रचनाएं हैं
ईंट ईंट इस महानगर की
मानव की कविताएं हैं

स्टैखैनोव प्रगति गुंजित है
वह भी तो मज़दूर रहा
पूछो शोषण के स्तंभों से
किसमें इतना वेग रहा

आज भयद फ़ासिस्ट यान वह
नभ को रह रह घेर रहे
क्या तुम शीश झुका जाओगे
रिपु को बढ़ता देख रहे

बोलो देख सकोगे चुप हो
आज राष्ट्र को तुम जलते
कायर बन कर देख सकोगे
माँ बहिनों को भी लुटते

देख सकोगे बच्चों को तुम
संगीनों पर कट जाता
देख सकोगे खेत जलेंगे
टूटेगा घर पथ सारा

'नहीं नहीं' ईट चिल्लाईं
नहीं नहीं सैनिक गरजे
स्तालिनग्रेद नगर के वैभव
प्रतिध्वनि करते से थहरे

'नहीं नहीं' बोल्गा हुंकारी
'नहीं' नहीं' नभ-तड़प उठा
दूर दूर तक खेत पुकारे
नहीं नहीं का घोष उठा

एक मुस्कराहट होठों पर
तब वृद्धों के खेल उठी
पुलक सहस्रों कंठों को वह
वाणी उनकी ठेल उठी

'हमें गर्व है हमने मर कर
घायल होकर क्षत विक्षत
ज़ारित्सिन की रक्षा की थी
उस दिन घिर कर भी अविरत

शत्रु भले ही कैसा निर्बल
फिर भी जीवित छोड़ नहीं
पीछे बाधाएँ रख कर तू
अपनी गति को मोड़ नहीं

आज तुम्हारे ऊपर केवल
भार सोवियत् का ना एक
लाल क़िले को दुनिया भर की
जनता आशा भरती देख

तुम्हें खिलाया है गोदो में
ऊष्मा छाई है अब तक
वीरों के चुंबन गालों पर
सूख नहीं पाये अब तक

अरे तुम्हारी किलकारी वे
अब भी मन में गूंज रहीं
अरे तुम्हारी हठ करने की
रीझें अब तक झूम रहीं

सुख दुख के तुम ही साथी हो
तुम ही आशा हो केवल
अरे तुम्हारे ही यौवन में
पाते जीवन-बिंब अमल

बोलो वीरों के जय गायन
झुक जाओगे कायर बन
अरे अचल यूराल झुकोगे
तुम दूर्वा से भग्न विमन

जागो जीवन की गरिमा तुम
कोई ऐसा वीर नहीं
जनता को जो कुचल सकेगा
कोई ऐसा धीर नहीं

बूंद बूंद गिर जाये लेकिन
पग पीछे धरना न कभी
बोटी बोटी कटे मगर तुम
नतमस्तक होना न कभी

जीवित लौटे गर कायर बन
युग युग घृणा करें तुमसे
हड्डी मिले अगर मृत्युञ्जय
प्यार करेंगे हम उससे

हम वह वृद्ध नहीं जो घर में
प्यारे करें रण से हों भीत
रण मानवता की पुकार यह
छेड़े अपना दुर्जय गीत

आज तुम्हारे ही साहस पर
भाग्य टिका है जग भर का
युग युग नाम चलेगा वीरो
आज तुम्हारी हिम्मत का

आज तुम्हारा तन मानवता
का प्रतीक बन उठता है
देखो झुक पाये न कभी भी
यह जो झंडा उड़ता है

जब जब जग पर तम छायेगा
नाम तुम्हारा दीप बना
फिर से सब में ज्योति भरेगा
रिपु सेना पर तीर बना

आज आन है आज शान है
आज लाज है बात यहीं
अरे सितमगर को ठिठकादो
दे अपनी ललकार यहीं

भूलो, करुणा आज मिटी है
रक्त पियो तुम दुश्मन का
बहुत बढ़ा है मद बच्चों को
मार मार कर दुश्मन का

अरे हमें विश्वास अपरिमित
स्तालिनग्रेद अमर होगा
कुचलेगा फासिस्ट शक्ति को
रिपु का महाध्वंस होगा

अरे हमें विश्वास कि फिर से
जाग उठेगा स्तालिनग्रेद
अरे खंडहरों से अपराजित
स्वर फूटेंगे उन्नत वेग

आज पूर्ण सोवियत देखकर
तुम्हें संभाले है जीवन
अगर यहाँ से टूटा तो फिर
सभी गिरेगा परवश बन

और तुम्हारे श्रम निर्माणित
घर में नाज़ी आयेंगे ?
बच्चे बूढ़े स्त्रियां बांध कर
उनको दास बनायेंगे ?

बोलो महाक्रान्ति के वाहक
मरना या दासत्व कहो

बोलो वीरो के उन्मादो
जीवित कायर सत्व कहो ?

अरे उठाओ शस्त्र प्रबलतम
बिजली के से टूट पड़ो
खिड़की खिड़की मोखे मोखे
से दुश्मन से जूझ पड़ो

मानव मरते, कब न मरे थे ?
पर क्या आज़ादी खोकर ?
रह पाओगे फिर निराश हो
केवल कुत्तों से होकर ?

अरे वही है शत्रु प्रबलतम
जो फ़ासिस्टों का है मित्र
ऐसा फेरो रंग बदल दे
जो सुन्दर कर गंदा चित्र

याद रहे जितने दुश्मन तुम
मार सकोगे गिन गिन कर
विश्वमुक्ति की अवधि निकट हो
आयेगी उतने दिन कर

जले हृदय में घृणा भयंकर
शस्त्र हाथ में सदा रहें
वीरों की मर्य्यादा रण में
गर्जन बन बन कर फहरें

रुका शब्द हुंकार गुंजती
आश्वासन सी देती थी
और अमर साहस की ऊष्मा
अङ्गों में भर देती थी

व्याकुल यौवन गरज रहा था
जारित्सिन का वैभव देख
शत्रु प्रबल है—पर हम भी हैं
निर्भय रह तू स्तालिनग्रेद

५

महानगर के बाह्य भाग में
योद्धा क्रूर मुखाकृति के
आज पराजित से करते थे
हमले भीषण आवृत्ति के

दंड आज देने निकले हैं
जर्मन ग्रामवासियों को
उनके ज़ुल्मों को सहते हैं
तरु ज्यों कठिन आंधियों को

रूसी आशा औ' साहस के
बल पर संघर्षण करते
बाधा पग पग डाल रहे थे
रह रह कर रण में मरते

नगर एक काली छाया का
सपना सा ही लगता था
उधर महानद का प्रवाह भी
क्षोभित मुक्त गरजता था

जर्मन खोज रहे वेन्या को
पार्टीज़न सेना-नेता
ग्रामीणों का मौन तड़प कर
उनका क्रोध जगा देता

ग्रामीणों के शुष्क मुखों पर
दृढ़ता एक अनोखी है
अरे जलेगी बत्ती अविरत्
हमने ही तो जोई है

बार बार वह मौन मचलता
जर्मन फिर फिर पूछ रहे
तल में अंधकार बढ़ता लख
वे लहरों पर टूट रहे

वेन्या का वह वृद्ध पिता ही
पकड़ लिया परवश उनने
झुके वृद्ध के मुख पर स्मित थी
देखा रूसी जन जन ने

बांधे कर पग, क्रीड़ा करते
हल्के टैंकों में भींचा
चिथड़े चिथड़े हुए वृद्ध के
कितु न नयनों को मींचा

निचला अधर काट दांतों से
रूसी फिर भी मौन रहे
एक मरे या लाखों ही यों
फिर भी डर कर कौन कहे

जैसे झंझा त्रस्त कली को
देती है झकझोर निठुर
जर्मन पूछ उठा नारी से
ढीठ बनी थी जो आतुर

किंतु पहाड़ों से टकरा कर
जैसे ध्वनि लौटा करती
निष्फल लौटी घृणित गर्जना
जर्मन के मुख पर बजती

जैसे गिद्ध टूट गहता है
क्रंदन करते चूहे को
छीन लिया मां की गोदी से
उस निर्दय ने बच्चे को

उठे हाथ मां के ममता के
किंतु गिर गये फिर सहसा
अरे प्रकाश मांग सकता क्या
अंधकार से कुछ भिक्षा ?

खेली नयनों में ज्वालाएं
मन भीतर हुंकार उठे
किंतु मौन था, विकट मौन था
जैसे आंधी के पहले

लहरें ज्यों कुल कुल करती हैं
और वेग भरती रहतीं
बांध तोड़ने से पहले वह
केवल निर्बल सी लगतीं

वह रूसी अंगार नयन से
देख रहे थे भ्रांत रहे
भीतर स्फोटक लावा गरजा
पर ऊपर गिरि शांत रहे

अपमानों का ज्वार उठा था
पोत किनारे पर आये
पर भाटा भी चिर निश्चित है
वे बर्बर भूले जाते

एक एक कर लिये बीस शिशु
अरे दुध-मुंहे कोमल तन
आंसू से भर भर आये थे
जिनके निर्मल नील नयन

जिनके स्निग्ध वदन छू छू कर
मां सुख से भर गाती थीं
एक एक किलकारी जिनकी
मोद मधुरिमा लाती थीं

नहीं हटीं माताएं डग भर
आंखें बंद न थीं कोई
अरे वज्र थीं आज नारियां
कोमलता बिलकुल खोई

यह सामंती राजकुमारी
न थीं कि गौरव में मदमय
मानवता की चिर समानता
में बनतीं बाधा छविमय

यह न मध्यवर्गीय दासियां
छुईमुई सी लजवन्ती
फूलों की चोटों से घायल
हो कराहतीं रसवन्ती

यह वह थीं जो अपने हाथों
शस्त्र उठा कर देती हैं
और कारखानों में रण में
जीवन नैया खेती हैं

जब इंगलैंड फ्रांस में नारी
जंघाऐं दिखलाती हैं
राजपूतनी यह माताएं
जीवन ज्योति जगाती हैं

अपनी आंखों से ही देखा
कुचला एक टैंक ने आ
चीत्कारों से गगन हिल गया
शूलों ने मन को भेदा

किंतु खड़ी थीं माताएं चुप
एक युवक ने विचलित हो
हैंडग्रिनेड के लिये जेब में
डाला कर अति क्रोधित हो

किंतु बगल के एक हाथ ने
रोक लिया उसका उन्माद
और मंद स्वर अस्फुट जलते
कानों पर मंडराये जाग—

समय नहीं है, देख रहे हो
उनमें मेरा बालक था
अरे खून था मेरे दिल का
मेरे सुख का पालक था

रोक लिया योद्धा ने वह कर
और देखता रहा निडर
बच्चों का कुचला मिट्टी में
हंसता था बलिदान अमर

हड्डी मांस खून सब मिल कर
बने लोथड़े मिट्टी में
धूल सने, कुचले—जीवित थे
अरमानों की भट्टी में

धूमिल नभ था, धुंधली आंखें
पर माताएं मौन रहीं
प्रतिहिंसा की भीषण ज्वाला
आंसू तक को सोख रहीं

जन जन सब कुछ भूल गये थे
यौवन मादकता खोई
आज सितमगर के वारों पर
मानवता रह रह रोई

किंतु याद था महानगर के
वाह्य भाग में बच्चों को
छीना टैंक चला कर कुचला
मां दाबे थीं आहों को

किंतु सदा से साम्राज्यशाही
अपने बल से अंधी बन
जनता पर ऐसे ही करती
अत्याचारों का वर्षण

वह चंगेज़ कि नादिर क्या थे
वह नेपोलियन या सीज़र
और आज के साम्राजशाही
और कि फ़ासिस्टी हिटलर

आज करोड़ों कंठ विश्व में
त्राहि त्राहि कर उठते हैं
ये अत्याचारी धोखा दे
अपने छल पर इठते हैं

इधर अंधेरी के बीते ही
फिर थी हमले की आशा
पत्थर के हटते ही जैसे
सांप घुसा बिल में आता

नभ में जर्मनयानों से चल
अंगारों का झरना था
यहीं रोकना था दुश्मन को
टुकड़े टुकड़े करना था

घायल सैनिक मौन तड़पते
आशा पर थी सांस रही
किंतु खड़े थे वे साहस से
अभिलाषा थी एक रही

स्तालिनग्रेदी वाह्य भाग में
फ़ासिस्टों ने बच्चों को
छीना टैंक चला कर कुचला
मां दाबे थी आहों को

यही बहुत था फिर जीने को
यही घृणा—अद्भुत बल था
अपनी आंखों से देखा था
उसने अपना घर जलता

और आज संगीन उठा कर
हमला ही करना होगा
हत्यारों के घृणित ख़ून को
चरणों पर बहना होगा

उधर पौ फटी, इधर ग्राम के
संमुख माइन बिछा भीषण
टैंकों को लेकर पैदल ने
मार्च किया, गुंजित पगध्वनि

खुली जगह थी, सौ सौ मीटर
पार किये जब तीन उमड़
चढ़ने लगे पहाड़ी सी पर
गिर जाते थे कभी घुमड़

कॉलेन्को जो नवयौवन की
अगम पहाड़ी पर चढ़ता
देख चुका था अपनी आंखों
फ़ासिस्टी वैभव बढ़ता

वह बैटेलियन का कमान्ड ले
खड़ा कठोर बना लोहा
यौवन की मादकता खोई
और घृणा का रव बोया

भोर हो चुकी थी प्रकाश की
किरणें दूर नगर पर थीं
जिसकी ज्वालाएँ चिल्लातीं
रह रह ऊपर को उठतीं

पर आज्ञा के पहले सैनिक
कूद कूद कर बढ़ते थे
हत्यारों के प्रति विरोधमय
हृदय सभी के अड़ते थे

अब घर घर में युद्ध हो चला
जोश भरा हर सैनिक में
ताक ताक कर गोली चलतीं
उठते गिरते क्षण क्षण में

छत्तों, गौखों, वातायन से
शत्रु दागते थे गोली
महाराइन का वेग भरे वे
मचा उठे ख़ूनी होली

किन्तु अचानक कॉलेन्को ने
देखा—रुकती साँस वहीं
आज असंभव संमुख जाग्रत
होता था विश्वास नहीं

एक धांय—वह सैनिक तड़पा
स्तालिनग्रेद और कायर?
स्तब्ध ओंठ को भींच निडर सा
आज्ञा देता था आतुर

वह कायर! वह कीड़ा उसने
जीवन भिक्षा चाही थी
मां बहिनों का मान बेच कर
अपनी रक्षा मांगी थी

किंतु न बोला कोई सैनिक
चोट पड़ी थी तीरों सी
मरने दो जितने कायर हों
यह दुनिया है वीरों की

मृत्यु-मृत्यु जीवन परिवर्त्तन
अणु अणु नर्त्तन चलता है
पर वह जीवन क्या जो झुक कर
टुकड़ों पर ही पलता है

अरे ग़ुलामी के ये साथी
यह क्या जानेंगे जीना
जो न मृत्यु से लड़ सकते हैं
तान सुदृढ़ निर्भय सीना

अपने मोह और स्वार्थों से
छलना पैदा करते हैं
जैसी हवा चले पौधों से
बने नपुंसक झुकते हैं

बीच गगन में सूर्य्य चढ़ा था
घेर लिया सारे नभ को
बीच गाँव में रूसी दृढ़ थे
जीते ग्राम उमँग पथ को

नभ में बादल गरज उठे अब
जो पहले क्षितिजों पर थे
टकरा टकरा कर आपस में
धार बांध कर वह बरसे

किन्तु अचानक ही जर्मन के
पन्द्रह टैंक गरज आये
इधर उधर थी रूसी सेना
फाड़ भेद कर घुस आये

चली टैंक-गन, दो में ज्वाला
धधक उठीं पर चलते थे
ये फ़ासिस्ट—जल रहे लेकिन
मरते मरते लड़ते थे

और फटे दो टैंक युद्ध में
किन्तु नहीं माने अवशिष्ट
मृत्यु कराल चरण बनकर वह
टूटे पैदल पर अति रुष्ट

घनी घास पर जैसे पानी
वेग भरा चढ़ता आता
टैंकों के . नीचे पैदल का
वैभव था पिसता जाता

पीछे कई हाथ नीचे पर
अतल वोल्गा धारा थी
और सामने आँखें खोले
महामृत्यु की ज्वाला थी

आज रोकना होगा दुश्मन
या फिर यह ही कब्र बने
बूंद बूंद चुक जाय विकल हो
आज संगठित मान घने

जहाँ खड़ा था जो उसने झट
वहीं दिये हथियार चला
कॉलेन्को बन्दूकें लेकर
सबको देता तीव्र चला

रात आगई थी सूनी सी
नीरवता हा हा खाती
धांय धांय के महाशब्द में
शङ्का अंत नहीं पाती

घायल डाइनौसौर कभी ज्यों
चिल्लाता फिरता होगा
भारी टैंक अंधेरे में चल
रण का नाद प्रबल होता

अंधकार था गहन, रात भर
केवल गोलीं चलती थीं
कभी कभी घायल मरतों की
भयद कराहें उठती थीं

पर जैसे गैंडा सुधबुध खो
पीछे मुड़ कर धाता है
अरे भोर के पहले ही से
शत्रु टैंक बल जाता है

श्मश्रु जाल ने रूप ढके थे
रक्त बधूटी सा छलका
पर चाणक्य बना हर सैनिक
बूंद बूंद को निभा रहा

और एक सूनी मुस्काहट
खेली जलते नयनों में
जिनमें प्रतिबिंबित था अपना
देश—गूंजता भग्नों में

केवल घृणा रक्त की तृष्णा
छाया बन कर झलक रही
करुणा लौट रही लहरों सी
भीषण भट्टी धधक रही

वृद्धा, शिशु नारियाँ वित्रस्ता
डरे हुए से दरियों में—
वोल्गा तट पर खोले मुख को
गूंज भर रहीं गिरियों में

गाँव हो गये थे खंडहर सब
यह पहाड़ गोवर्धन था
अरे सहायक होकर लड़ता
आज रूस का कण कण था

किन्तु नारियों के नयनों में
एक भयद सी ज्वाला थी
बोन्दारेन्को की पुतली में
जो प्रतिध्वनि करती जाती

यह जो साहस आज भरा है
नहीं कल्पना है कोई
अंकुश से चीत्कार स्वजन के
जगा रहे नफ़रत सोई

अरे सैकड़ों बरस बाद जब
नाम सुनेंगे वीरों का
स्तालिनग्रेद नगर के बच्चे
जगमग जलते हीरों का

पुलकेंगे सुन सुन कर कैसे
दुनिया की सबसे भीषण
अगम और दुर्भेद सैन्य ने
पितृभूमि से छेड़ा रण

युग युग नाम जलेगा उज्ज्वल
जब यह सत्य बने गाथा
आज सत्य के हेतु उठे हैं
नये विश्व के निर्माता

रजनी के धूमिल अंचल में
स्मृति कर कर इन वीरों की
विस्मय सिहरन में फड़केगी
तृषा युगांतर धीरों की

माताएँ अपने बच्चों को
इसी धूलि में छोड़ेंगी
खेलें—लगे धूलि योद्धा हों
चिर अपराजित, सोचेंगी

पृथ्वी पर उन्माद बिखरता
उमड़ रक्त की धारा सा
संगीनों का जलता पानी
चमक रहा है पारा सा

मौन और गम्भीर हृदय ले
रूसी मिट्टी खोद रहे
मृत योद्धाओं के शरीर को
कब्रों में हैं छोड़ रहे

और हृदय को छूती छूती
दिग्दिगंत में मंथर सी
ध्वनि सूखे होठों से उठती
महापोत के लंगर सी—

'लाल सलामी वीर शहीदो
बदला लेंगे हम पूरा
अरे मरा है कौन-अमर सब-
किसने आकर है पूछा

यह जो गाँव खड़े हैं टूटे
यह जो पेड़ खड़े सूने
पूछो अंबर से धरणी से
आज भरे साहस दूने

कौन गरजता है निर्भय सा
वीरो तुम मृत्युंजय हो
विश्व क्रांति की सूली लेकर
चलते तुम अभयंकर हो

अरे गगन में झंडा फहरा
भींग तुम्हारे ही खूँ से
जयनादों में मान तुम्हारे
शत्रु हिलाते से गूँजे

बूंद बूंद तुम इस विग्रह के
गिर कर राह दिखाते हो
अङ्गारा बन कर जगमग से
बर्बर गर्व मिटाते हो

अरे पूर्वजों ने ज़ारित्सिन
की रक्षा में प्राण दिये
उन आदर्शों को विह्वल हो
वीरो तुमने प्राण दिये

देखो माताएँ रोती हैं
वधुएँ सिसकी लेती हैं
देखो अभिवादन कर संस्कृति
प्यार उमँग कर देती है

महाराष्ट्र की ओ पतवारो
व्यर्थ नहीं था यह जीवन
बच्चे बच्चे के उर उर में
जीवित निर्भय नव-यौवन

अपने पूत रक्त से तुमने
आज बीज जो बोया है
फट कर वह कोंपल फूटेंगी
महावृक्ष का कोया है

लेनिन स्तालिन इन मानों के
संमुख करते अभिवादन
व्लैडीवोस्टक तक नर नारी
करते वीरो जय गायन

आज खेत हैं तुम्हें बुलाते
आज कारखाने चीखे
ध्रुव प्रदेश से कोहकाफ़ तक
आयुध हुंकृत, दृग गीले'

रुद्ध होगये कण्ठ प्रबल मन
आंधी सा ग़ुब्बार उठा
हम आधार हिलादें क्षण में
सबका मन ललकार उठा

तब तक वायुयान के पहिये
छोड़ चुके थे प्रथ्वी तल
ग्रावा का वक्षस्थल चीरे
उठते थे करते हलचल

एक एक के लिये बीसियों
यह ही सबकी गरज अखेद
वीरों के भीषण साहस पर
मुक्त शिखा था स्तालिनग्रेद

६

सघन पिपासा सी तन्द्रित हो
बर्फ़ जमी स्तर स्तर अति पीन
जलधारा अभिभूत रुकी थी
और तरलता आज विलीन

तड़क रही थी बर्फ़ चटकती
और चीख़ सी उठती थी
हिम से हीन किनारों में ज्यों
नभगंगा खिल बहती थी

हिमखंडों से सीढ़ी बनती
जिन पर ज्योति फिसलती थी
रुधिर धार अपनी आभा को
प्रतिध्वनित सी भरती थी

रुई के वे गाले चकमक
कहीं ध्वांत में नील तले
टकराते आपस में रह रह
और बिखरते तार ढले

ऐसी वोल्गा की धारा पर
शव था एक पड़ा सोता
रक्त जम गया था वोल्गा का
उर भीतर भीतर रोता

धुन्ध गगन था सोई धरणी
आज बर्फ़ की चादर ओढ़
अणुओं का संघर्ष विकल यह
रह रह उसको देता तोड़

उस शव पर फिर झलकी ज्योंही
मौन भोर की मलिन प्रभा
देखा लाल अक्षरों में थी
लिखी हुई वह अमर कथा

कुछ काले कौए छाया को
देख बर्फ़ में भ्रम करते
चमक चिलचिलाती ज्वाला सी
और नयन झिलमिल करते

किन्तु उठाया—कठिन होगया
उसे बर्फ़ से अलगाना
ज्यों वोल्गा का लाल रहा कह—
और कहीं मत लेजाना

बर्फ़ टूटती थी वोल्गा की
गिरती थी अभिभूत कड़क
जैसे कोई कर उठता हो
आर्त्त विकल चीत्कार तड़प

स्टीमर बजड़े सघन बर्फ़ में
ऐसे रह रह चलते हैं
श्वेत नयन में पुतली चलती
फिर अरमान मचलते हैं

शीत समीरण सघन विषादी
झूमा चलता भार लिये
फ़नल और चिमनी से निकले
धूंए को अभिभूत किये

काले गहरे पीन धुंए को
रह रह कर झकझोर रहा
और बर्फ़ खंडों पर उसको
घुमा घुमा कर पटक रहा

और धुआँ छाया सा बन कर
मौन शिलाओं पर छाता
जैसे काले सघन केश में
गोरा मुख है छिप जाता

धूँआ अपने अधर हिलाता
झुकता आता है नीचे
श्वेत बर्फ़ में प्रतिबिंबित हो
टकराता आँखें मींचे

बजड़े के वे दाँत बगल के
बर्फ़ चबाते निर्दय बन
फाड़ कुचलते हैं इस मद को
तोड़ तोड़ कर कर्कश बन

स्तलिनग्रेद नगर से बह कर
आती है जो रक्तिम बर्फ़
भर देती है संधि-शून्य को
और जकड़ कर करती गर्व

नहीं कभी भी वोल्गा नद में
इस ऋतु में बजड़े तैरे
नहीं कभी भी बर्फ़-परों को
तोड़ तोड़ कर वे तैरे

आज किन्तु जब नाज़ी बल के
ध्वंस हेतु हैं वीर उठे
तब वोल्गा के सघन विधुर मद
चूर चूर करते बढ़ते

भरी बर्फ़ से नदी निःश्वसित
नावें चलतीं कर मर्मर
दक्षिण ध्रुव में झुक जाता ज्यों
अभय मृत्यु के दे ठोकर

बाह्य भाग में बनी गुफाएं
पृथ्वी पर ज्यों बूंद गिरीं
काली काली अगन झलकतीं
चींटी के बिल सी लगतीं

चिथड़ों और काठ के तख्तों
से इनका मुख ढका हुआ
बच्चों की रक्षा के हित ज्यों
इनका सीना अड़ा हुआ

आज नहीं है वह कलरव कल
आज न वे बातें तुतली
माताओं के शंकित भय में
करुणा की आहें मचली

आज देश के बच्चे बन कर
कीड़े रहें गुफाओं में
तभी आज प्रतिशोध जल रहा
मृत्यु विलास शिराओं में!

घर खंडहर में लोप पिपासा
हैं पहाड़ियां भी जर्जर
बम खड्डों में घुस अंधियारी
बैठ गई सिकुड़ी जम कर

खंडहर में टूटी मशीन हैं
तट पर टूटे बजरे हैं
गहन धूम-घन रवि किरणों को
घुमड़ घुमड़ कर ढंकते हैं

महाधूम से भरा नगर है
बम के हृदय फटे भीषण
मोरटार के लाल लपलपा
होंठ गरजते घेर गगन

स्टैपी से धूंआ उठता है
जैसे फव्वारे उठते
फ़ील्डकिचिन से श्वेत लहरियों
के पंखिल पंखे उठते

सिगरेट और पाइप का धूंआ
तड़प तड़प कर घुटता है
स्तालिनग्रेद आज धूंए में
काला भीषण दिखता है

स्फोट और फिर मिट्टी ऊपर
उठती कर आवाज़ भयद
गूंजा करती है गिरती है
दबा दबा कर नीचे बर

धूमकेतु से गगन घिरा है
या फिर पुच्छल तारे हैं
टकराने जो पृथ्वीग्रह से
मंडराते घिर आते हैं

चमक रही है धरती नीचे
ऊपर नीलम का नभ है
मेघ धूम है रक्त वधूटी
और प्रलय की हलचल है

आज सितंबर का उज्वल दिन
महातेज से जागा है
नभ में फ़ाइटर प्लेन भड़कते
लाल रक्त उमगाया है

भूमि आज खुद गई खाइयों
में जर्जर सूने मुख सी
टूटे दांत विकल हैं उन्मन
कांप रही जैसे सिकुड़ी

यह सैनिक हैं ? नहीं ! ईंट हैं
और खड़ा है स्तालिनग्रेद
अरे रक्त से चिन चिन कर यह
फिर से गढ़ते स्तालिनग्रेद

और पास में मिट्टी की ही
क़ब्र बनी हैं धरती पर
अरे गगन की शुभ्र छाँह में
वीरों के निस्वन बिस्तर

जिसके लिये लड़े उसकी ही
छाती में विश्राम मिला
भूमिगर्भ में फूटा अंकुर
ऊपर आकर फूल खिला

हरे भरे तरु, ग्राम मौन यह
और पहाड़ी अनजानी
हर सैनिक की अपनी आशा—
हर सैनिक था अभिमानी

अरे यही तो चिर सुषमा के
जाग्रत सुन्दर स्वप्न बने
प्रकृति मुस्कुराती उर कहते—
हम केवल आगे बढ़ने

गिरे शहीद, मरे अमरों से
जीवित जैसे मृत्युंजय
मृत्यु खेल है, जीवन दृढ़ता
यौवन केवल प्रलयंकर

एक हर्ष की ध्वनि होठों के
बाहर आकर खेल उठी
गर्व भरे मन को छू कर जो
बन कर साहस फैल उठी

जैसे वृद्ध पिता रोगी हो
अंतिम शैय्या पर सोता
परदेसों से आता बेटा
आशा भर हंसता रोता

जिसकी छाया में पल कर ही
आगे बढ़ना सीखा था
आज वही जर्जर गिरता था
सबका हृदय पसीजा सा

घर न रहा था कोई साबुत
पर वे बोले—'ज़िंदा हैं'
इनकी ममता प्राण भर रही
क्षण क्षण जीवन भरता है

महाध्वंस का नृत्य चल रहा
गिरते थे घर थिरकन में
बीज फूटने के पहले ज्यों
गड़ा हुआ भू-अंचल में

जले हुए घर धुंआधार में
ज्वालाओं में झिलमिल से
महादुर्ग के भग्न भाग से
दिखते हैं भय भारिल से

एक इमारत में हेड क्वार्टर
स्टाफ़ काम में लगा हुआ
इस तूफ़ां में भी मिलते हैं
सैनिक, जीवन जगा हुआ

आँखें नींद भरी हैं लेकिन
मन में अमर जागरण है
दीवारों का चूना झड़ता
ज्यों रण का आवाहन है

आज दूर की नहीं घरों की
रक्षा के फ़रमान चले
ज्यों शरीर की एक एक हर
नस में रक्त प्रवाह चले

हवा सांस को भींच रही हैं
सिगरेट भी पाते न जला
स्टाफ़ छिपा जैसे हड्डी के
भीतर है मस्तिष्क छिपा

यह जीवन धारा अबाध हो
रुके नहीं अविराम चले
अमल शुभ्र ज्योत्स्ना सी फैले
और स्नेह का दीप जले

वही शेष हैं आज नगर में
जो जिह्वा पर दांत बने
रक्षा करते हैं उसकी रत
तूफानों की आग बने

आज नहीं है कोई द्रष्टा
सब झंकृति हथियारों की
घूम रहे हैं सृष्टा बलमय
धार बने तलवारों की

आज कारख़ानों में अब भी
टैंक बन रहे हैं क्षण क्षण
जैसे उनकी प्रबल शक्ति को
मांग रहा है भीषण रण

गोली से जर्जर तन में भी
दिल तो अब भी जीवित है
गिरी घड़ी की सूई टूटी
फिर भी चलती टिक टिक है

टूटे टैंक आ रहे क्षण क्षण
बना बना कर भेज रहे
अरे प्राण जायें तो क्या
जीवित स्तालिनग्रेद रहे

आज इन्हीं के भुजदण्डों पर
खड़ा कारख़ाना जीता
बाह्य भाग जो टूट गये हैं
बनते हैं, क्षण क्षण बीता

बीती भोर गया सारा दिन
सन्ध्या आई चली गई
आधी रात गये सब सहसा
नूतन शक्ति बढ़ी आई

खाली हैं आँगन अब जिन पर
वायु ठहाके मार रही
टूटी खिड़की से भर भीतर
टकराती ललकार रही

किन्तु श्रमिक रत निर्भय अविरत
टैंक बन रहे थे अब भी
जैसे घायल सेवा पाकर
लौट रहे फिर फिर जल्दी

वोल्गा के तट पर बिखरी हैं
कुछ हड्डियाँ जलीं काली
गरज रही हैं बुला रही हैं
जिन पर चमकी उजियाली

जीवित जला दिये शिशु नारी
यह उनकी ही हड्डी है
जिनके चीत्कारों पर क़ातिल
हँसे उन्हीं की हड्डी हैं

वायु भर गई अस्थिशून्य में
और गूंजती है भिल भिल
यह हड्डी—नयनों के आँसू
बन कर बिखरी हैं जल जल

ऊपर आग धधकती आती
नीचे धरती काँप रही
और गोलियाँ इस जीवन के
बंधन क्षण में लांघ रहीं

मृत्यु आज जीवन की संगिनि
गलबाँही डाले चलती
ज्वालाओं से निकल निकल ज्यों
धूँए की घुमड़न चलती

और पहाड़ी पर धूआँ है
और सड़क पर ज्वाला है
गगन बैंजनी चमक रहा है
अँगारों का जाला है

शोला बन कर बम का टुकड़ा
गिरता है ज्यों हो तारा
पीछे अलसाहट भरता सा
डरा रहा है अंधियारा

जर्मन नभ में ज्योति फेंकते
इन्द्रधनुष सी गोलाकार
बममारों से विषधर गिरते
और तोड़ते हैं घर द्वार

एक इंच क्या मन भी पीछे
हटने की सोचे न कभी

वोल्गा के उस पार भूमि वह
अब है अपनी नहीं रही
यहीं जन्म है जीवन भी है
और मरण भी आज यहीं

झुलसा क्या पायेगी हमको
कैसी भी हो आग, कहीं
मृत्यु बहुत सस्ती क़ीमत है
आज़ादी का मोल नहीं

रक्त मांस का ढेर कभी भी
होता उसका तोल नहीं
आज गँवादी यदि आज़ादी
तो फिर जीने से क्या लाभ

अरे गुलामी के सुख धोखे,
झुका शीश माता की लाज
आज रोकना होगा दुश्मन
और रुकी जाती बाढ़ें

फिर भी निकली ही पड़ती हैं
फ़ासिस्टी भीषण डाढ़ें
पर सैनिक जगमगा रहे हैं
नभ के उज्ज्वल तारों से

घृणा और अपमान क्षुब्धकर
बढ़ा रहे दिल लालों के
यही भूमि है यही गगन है
क़सम आज है स्तालिनग्रेद

युग युग तक यह उन्नत मस्तक
खड़ा रहेगा स्तालिनग्रेद

७

भोर हुई थी सैनिक तत्पर
वोल्गा तट पर देख रहे
दूर पराजय की मलिनाभा
नभ में घुलती देख रहे

गद्‌गद् थे सब, और नयन में
आशा करती खेल रही
आज महाउत्तेजित आभा
सबको आगे ठेल रही

फ्रोल पुत्र शोलन्को अपना
शस्त्र उठाये आया है
ज़ारित्सिन के उस रक्षक ने
योग्य पुत्र ही पाया है

अरे पिता की मृत्यु हुई थी
ज़ारित्सिन के चरणों में
लगा चुका जीवन शोलन्को
स्तालिनग्रेदी शरणों में

आज्ञा पाकर चला तीर पर
वोल्गा की उस धारा के
धीरे धीरे—सचल लहर के
धक्के आतप छाया मे

द्रुत चरणों की गति थी स्तब्धा
सहसा गरजी मशीनगन
मरणगीत गुंजित कर गोली
चली निकट में सनन सनन

भग्न मौन घर, नीरव थे शैड
झाँक रहा नभ ऊपर दीन
पृथ्वी के केशों से नरकुल
उगे हुए थे दुस्तरपीन

अंधियारे में मुर्गी सूअर
खोद रहे थे मिट्टी को
सीलन दुर्गन्धित व्यापित थी
तन्द्रिल करती थी जी को

रक्त बह रहा था, ताज़ा था
बन्दूकों को भिगो रहा
अरमानों की शिखा बुझाकर
अब श्वासों को डुबा रहा

प्रेरी में जैसे वह भैंसे
देखा करते चारों ओर
गूंज उठा करती हरियाली
जैसे थी नीरवता घोर

एक सलज पगडंडी झाड़ी
के अंचल में दुबक रही
भारी पग चिन्हों से जर्जर
भींग मेंह में सुबक रही

अनाथिनी राइफ़िलें पड़ीं थीं
सूने घर से बूट पड़े
लुटे हुए अभिमान विकल हो
निर्जनता से ऊब रहे

चला गाँव के दाँये दाँये
पग लहरों से धुला हुआ
राह किनारों पर घन सघनित
झाड़ी नरकुल उगा हुआ

दूर एक मोरटार चली ज्यों
वायु फाड़ कर हँसती थी
काँटेदार झाड़ियों में से
रेंग चला—जो छिदती थी

सूने नयनों में अङ्गारे
धीरे धीरे बुझते थे
बुझने से पहले सहसा ही
क्षण भर उज्ज्वल चमके थे

एक एक हड्डी दिखती थी
नसें उफन आईं ऊपर
पसली का सोपान बना कर
भूख चढ़ रही थी.. दूभर

वह तो अपना ही साथी था
गन्दा मैला कातर सा
नंगा सा, व्याकुल भूखा वह
नंगे पैर भयातुर सा

गूँजे अस्फुट शब्द 'अरे हाँ
अपना है यह अपना है।'
सैंतरोव—कि यह निर्बलता
का चिर भीषण सपना है

शोलन्को विचलित व्याकुल सा
देख रहा था मौन अवाक
सैंतरोव हँसा क्षण भर को
आई हड्डी से आवाज़

एक एक कर सोलह भूखे
निकल झाड़ियों से आये
टूटे दीपक शिखा जली थी
शोलन्को-दृग भर आये

महाक्षुधा की जीवित प्रतिमा
हाहाकारों के आधार
दुःस्वप्नों के चित्र चले वह
गहले मानव के आकार

तीन रक्त से भींग गये थे
एक सहारा ले आया
शोलन्को के ही ग्रिनेड का
स्फोट घात यह था लाया

शोलन्को का उर चिल्लाया
भीतर ही भीतर व्याकुल
सैंतरोव कह उठा सहसा—
'और कहाँ बाकी संबल ?'

'सबको कौन ? अकेला हूं मैं
मृत्यु अकेली साथिन है'
चूम उठा बन्दूक प्यार से—
'साथिन तो यह नागिन है।

पर तुम क्यों सूखे पत्तों से
काँप रहे हो सूने से
यहाँ कौन जीवन की खेती
करते हो श्रम दूने से ?'

हँसा एक, हँस उठे सोलहों
काँपा हड्डी हड्डी तक
दृष्टि दौड़ कर गई तड़पती
खुदी हुई उस धरती पर

'कब्र खोदते थे हम अपनी
बन्दी जो हैं जर्मन के
संगीनों ने यही कहा था
चुपचुप करते ये व्रण रे

हम जीवित हैं या शव ही हैं
यही पूछते हैं तुमसे
पूछो हम पिशाच या मानव-
कब्र—' हँस उठे फिर सब वे

शोलन्को का हृदय अचानक
बैठा बैठा धड़क उठा
साहस की लहरों का भीषण
ज्वार हृदय में कड़क उठा

भूखे पंजर खड़े सामने
अपनी कब्र खोदते आप
बर्बरता की सीमा थी यह
जलती थी मन मन में आग

गोली सिर पर भाग रही थीं
चढ़ने लगा पहाड़ी पर
खड्ड और घन तरुतल छिपता
सघन छाँह थी धरती पर

सहसा सन्मुख देखा उसने
एक खड़ा भीषण जर्मन
शोलन्को रुक गया साँस तक
रोक, सनसनाता निर्जन

एक खड्ड तरु पातों में चुप
सोता था तम से सींचा
उतरा, भस्म बिछी थी नीचे
सीलन ने आगु आगु सींचा

पास आठ गज़ की दूरी पर
मिले सात जर्मन आकर
एक लेट कर फोन कर उठा
शेष मौन बैठे जाकर

विजय—मुस्कराहट फूटी थी
शोलन्को के अधरों पर
जैसे लाल रक्त बहता हो
चिलबिल वोल्गा लहरों पर

यह बर्बर उपहास विताड़ित
आये हैं बनने विजयी
अपनी अर्जित शक्ति मत्त हो
स्वयं मिटाते हैं जल्दी

कौपर वायर से दो एन्टी—
टैंक ग्रिनेड बाँध कर साथ
लेट भूमि पर शोलन्को ने
खींची एक प्राणदा श्वास

और घुमा कर हाथ फेंकदी
गिरी पास में स्फोट हुआ
जिसकी टुकड़ी का शोलन्को
पर भी कुछ आघात हुआ

गिरी प्रलय सी—गिरी बीच में
वे सब जर्मन मुर्दे थे
और धूलि में धूम मिला था
स्तब्ध मृत्यु के पर्दे थे

पलक मारते राइफिल लेकर
साध निशाना वह झपटा
सभी शलभ से जले मृतक थे
नीरव सी ढीली तन्द्रा

वह भीषण विस्फोट, मौन था
छोर पकड़ जिसका घहरा
वह घननाद, मौन नीरव यह
दोनों करते थे बहरा

जैसे हवा चले हिल उठती
धीरे से पत्ती एकाद
फोन कर रहा था जो जर्मन
काँप उसके निर्बल हाथ

शोलन्को ने कुचल कुचल कर
तार फोन का तोड़ दिया
झाड़ी की खड़खड़ ने सहसा
उसको भयमय मोड़ दिया

राइफिल सहसा ही कन्धे पर
खूनी नयन जमा बैठी
जर्मन आने की शङ्का अब
सहसा ही मन में पैठी

पर नयनों में विस्मय छाया
शोलन्को विश्वास तजे
देख रहा था—नंगे भूखे
मानवता का भार लदे

काँप रहा था संमुख थर थर
सैंतरोव हुआ जर्जर
झौंकों में हिलता पत्ते सा
कर उठता रह रह मर्मर

कौन ? सोवियत् के लालों का
यह इतिहास न भूलेगा
जब तक बर्लिन में हिटलर पर
चिर प्रतिशोध न भूलेगा

'दो ऑटोमैटिक राइफ़िल ले
सैनिक हमें मारते थे
साँस टूटती देख देख कर
धीरे से मुस्काते थे

शोलन्को ! हमतो समझे थे
मृत्यु एक सुख ही होगी
घृणित भीरुता से तो निर्भय
मृत्यु सदा अच्छी होगी !

इस कठोर हिम प्रबल शीत में
मर न सके हम नंगे भी
भूख ? अरे मर गई भूख भी
किन्तु रहे हम ज़िन्दे ही

हार गये जर्मन जब हमने
भेद बताया एक नहीं
बोले—ज़िन्दा दफ़ना देंगे
हम ऐसा अभिमान यहीं

हँसे तभी हम—मृत्यु ? मृत्यु तो
वीरों की अन्तिम जय है
जीवन गीत रिझाता सबको
यह उसकी कोमल लय है

आज सोवियत में लाखों ही
झुक न रहे हैं निर्भय हैं
जले घरों की काली ईंटें
फिर लड़ने को तत्पर हैं

फ़ासिस्टों के पगतल रौंदी
दुनिया आज कराह रही
ख़ून बह रहा जो राष्ट्रों में
मानों उसकी थाह नहीं

जीवित रहने का मानव को
मोह रहे क़ायर बन कर
अपने स्वार्थों के कारण ही
युग युग कलुष चलें मंथर ?

कहो गुलामी का जीवन क्या
महाध्वंस से श्रेष्ठ कभी
कहो प्रवाहित नद का पानी
गड्ढे में है स्वच्छ कभी'

शोलन्को का हृदय स्नेह से
भर आया था उत्साही
एक एक कण शपथ लिये है
खड़ा हुआ बन कर बाग़ी

सुना दूर मॉस्को हँसता था
परंपरा की धार बही
ट्राँस्साइबेरियन रेल के
पहियों में आवाज़ यही

उठा उठा रिपु-मोरटार-गन
चले सभी बन्दी नंगे
सहसा फ़ोन कर रहा जर्मन
खड़ा हुआ कंपित तन ले

सिर की पीड़ा दाब करों से
देख रहा उन नंगों को
जो पिशाच से देख रहे थे
उस जर्मन के अङ्गों को

एक भेड़िया लूट मचाता
हँसता था उन्माद भरा
आज शिकारी कुत्तों में फँस
आर्त्तनाद करता फिरता

हैडक्वार्टर की ओर चले सब
पर शोलन्को थका हुआ
मार न पाया उतने जर्मन
जितना गुस्सा जगा हुआ

अरे हटा कर इतना पीछे
बर्बर हमको लूट रहा
किन्तु देख कर हँस ले रे मन
उसका साहस टूट रहा

हर सैनिक फ़ौलाद बना सा
स्तालिनग्रेदी प्रहरी है
अरे आज अज्ञात भूमि यह
बाधा बन कर गरजी है

गरज रहे थे गाँव गाँव वह
झाड़ी तरु आकाश सभी
कहते थे—पग भर भी आगे
दुश्मन बढ़ पाये न कभी

बहुत हो गया और न पल भर
बढ़ पायेगा वह क़ातिल
वोल्गा दुहराती यह ही स्वर
स्तालिनग्रेद यही धूमिल

अनजाने यह वन पर्वत भू
आज हमारा जीवन है
स्तालिनग्रेद गूँज तू युग युग
अक्षय तेरा यौवन है

हर रूसी में बात यही हो
हर सैनिक में आग यही
रात दिवस सप्ताह मास थे—
बीते फिर भी लाग यही

जर्मन बम गिरते हैं निशिदिन
डाइव बॉम्बर गोता मार
धधकाते हैं भूमि गगन को
खंडहर हैं सारे घर द्वार

किन्तु नगर में श्रान्ति नहीं है
शान्ति नहीं है आज कहीं
बजते दाँत भुजाएं फड़कीं
कण कण गरजे नहीं नहीं

वोल्गा की लहरों ने सहसा
स्त्री का एक बहुत घायल
मुर्दा फेंका तीर—उठा कर
अपनी लहरों का अंचल

जर्मन ! जर्मन !! किया उन्हीं ने
मुँह तक की पहिचान नहीं
जर्मन ! जर्मन !! वह हत्यारे !
उर उर ध्वनि थी—नहीं नहीं

बूंद बूंद का बदला लेंगे
बदला हड्डी हड्डी का
साम्राज्यों का दर्प मिटा कर
कलुष मिटादें पृथ्वी का

बहुत हट चुके हैं हम पीछे
एक क़दम अब और नहीं
जीना है तो यहीं रहेंगे
और कहीं भी ठौर नहीं

जो बच्चों को जला जला कर
रिपु की तृष्णा सुलगी है
माँ बहिनों का मान लूट कर
जो आँधी सी बहती है

क़सम आज वोल्गा की हमको
जो कि बहा ले जाय कहीं
अगर गिर धारा में तो वह
फेंके तट पर पास कहीं

स्तालिन मिटे, तिमेशँको भी
वह चुइकोफ़ कि वोरोनोव
अनजाना हर वीर लड़ेगा
स्तालिनग्रेद रहे चिर रोध

यह संस्कृति अक्षय लहरों सी
आज कँपा देगी संसार
जिसकी विजय प्रतिध्वनि रह रह
भर दे दिशि दिशि में झंकार

स्तालिनग्रेद रहेगा चाहे
पृथ्वी पर सागर छाये
सूर्य्य बुझे या चाँद मिटे वह
रक्त रहे या चुक जाये

अरे हमारी लाशों पर चढ़
शत्रु भले ले स्तालिनग्रेद
जब तक जीवित रहे एक भी
तब तक दुर्जय स्तालिनग्रेद

ललकार

शताब्दी बीत गई अभिभूत
तोड़ कर लहरों का सा वेग
अरे शृंखल प्रेमी अभिभूत
आगया नवयुग उठ कर देख
गहरते नभ में क्रन्दन मुक्त
अरे युग युग के शोषित मूक
तिमिर छाया है यह घनघोर
तोड़ दे कारा, दर्प कठोर !

सिंधु की लहरों से तो पूछ
पूछ कावेरी से उद्भ्रांत
शतद्रु क्या कहती है देख
पूछ शिप्रा, रावी से पूछ
कर रहा था किस का जयगान
हिंद के चरणों पर वह सिंधु
रक्त से किसके भींगी भूमि
हड्डियों पर किसकी संसार
जाग मेरे सोये से हिंद
जाग मेरे प्राणों के गान
जाग उठ मेरे हिंदुस्तान

इन्द्रधनुषी जालों की याद
हो रही है मानस से दूर
पूर्वजों के वैभव का श्वास
नहीं हो सकता जीवन मूल
देख तो ले इतिहास महान
गूंजता है जैसे आकाश
सलज रसवन्ती होती भूमि
देख—
मानव निर्व्याज

सत्य का अंत न आदि
प्रगति का चिह्न यथार्थ
मानवों के सुख दुख का केन्द्र
संतुलन सा पर्य्याप्त

अरे जीवन है प्यास
अरे यौवन है दाह
एक सागर गंभीर
नहीं है कोई थाह
भूत चेतन संबंध
चल रहा है निर्द्वन्द
सदा अणु का संघर्ष
बनाता नूतन वस्तु
सदा परिवर्त्तन द्वन्द
सृष्टि का नृत्य अमंद;
गुणी है गुण की छांह
चल रहे पकड़े बांह
आत्मलय आत्म प्रकाश
यही है मृत्यु विकास
सतत चलता है नृत्य
तभी माया अभिभूत
और जीवन है सत्य
बीतते हैं दिन रात
और सप्ताह मास ऋतु अब्द
खेलते बदल रहे परिमाण
प्रकृति का मानव भाग
प्रकृति का जीवन केन्द्र;

अरे मैं आज कहूं वह बात
कि क्यों अपराजित मानव शक्ति

सत्य क्या है ?
न माया मूक
न छाया चित्र
भूत का जीवन तत्त्व
बनाता नूतन सत्त्व
बना मत तू अपना अज्ञान
शृंखलाओं का प्यार
चल रही हैं युग भूत
सतत जीवन की धार

बज उठा है लोह पर लोह
देख जीवन रण के रणवाद्य
बढ़ावा देते तुझको आज
छोड़ यह नींद
युगों की यह कायरता आज
देख—
संस्कृति पर कैसा घोर
छा रहा है अंधियारा आज
जाग उठ सोये हिंदुस्तान

सुनोगे बर्बरता का आज
रक्त से भरा हुआ इतिहास ?
स्वात की उपत्यका मधुभार
हरप्पा, मोहनजोदड़ो लुप्त
खोगये किसके कारण बोल ?

भग्न गांधार भग्न वाल्हीक
रुधिर से कपिशा धारा स्फीत
विभवमय पाटलिपुत्र महान्
गिर गये किसके कारण बोल ?

रोम का दिग् दिगंत उन्माद
वैन्डलों का बर्बर उल्लास
खंडहरों में उठता है गूंज
मिट गये किससे कारण बोल ?
अरे प्रासादों का संसार
मुक्त दिल्ली गिर आठों बार
दासियों सी है क्यों अभिभूत
मौन यह किसके कारण बोल ?

आज पेरिस का गौरव लुप्त
आज युरुप में हाहाकार
आज दुनिया में भीषण आग
बोल है किसके कारण बोल ?

द्वार पर झांक रहा जापान
उड़ रहे नभ में खूनी यान
जाग मेरे सोये से हिंद
जाग मेरी कविता के छंद
अरे हमलावर पर विश्वास ?
शक्ति साम्राज्यी पर विश्वास ?
करेगी वह तेरा कल्याण ?
अश्वमेधा के भीषण पाप
देश की फूट उन्हीं की छाप !
खून से तेरे भर कर दीप
जलाते अपनी वैभव ज्वाल
मनाते दीपावलि उल्लास ?
उन्हीं पर है तुझको अभिमान
जाग उठ मेरे हिंदुस्तान

पूछ अपनी माता से पूछ
पूछ भगिनी पत्नी से पूछ
पूछ बच्चों वृद्धों से पूछ
किसे कहते बर्बर की जीत
देख घर द्वार, देख यह खेत
देख अपनी संस्कृति को देख
और तू अब भी केवल मौन
बचायेगा फिर तुझको कौन ?

अरे नालंदा, विक्रमशिला
या कि फिर तक्षशिला संभार
भग्न होकर करते चीत्कार
नहीं जगते फिर भी अभिमान ?
तड़प उठ मेरे हिंदुस्तान !

एक दिन गुप्तों मे विद्वेष
कर उठा महाराष्ट्र को भस्म
एक दिन मुग़ल राज्य से ऊब
बुला लाया था तू अंगरेज़
अरे तेरी करुणा को भेद
छागये जिनके कर्म्म कमीन
आज फिर पागल हो कर मूर्ख
चाहता है आये जापान
असंभव यह माँ का अपमान
सोच कर देख, न बन अनजान

घिरा है ले अब स्तालिनग्रेद
घिरा है ले यह हिंदुस्तान !
लुट गये थे जब निर्बल ग्राम
हो गया खंडहर स्तालिनग्रेद
लड़ा जन जन जब तक थे प्राण
एक एके पर वह मज़बूत
सिर झुकाती थी ऐसी सैन्य
न जो रुक पाई कहीं अबाध
आज तेरे नेता हैं बंद
आज तेरा यह देश वित्रस्त
और तू मूक भटकता हाय
अरे फ़ौलाद बना उठ जाग
जाग उठ मेरे हिंदुस्तान !
जेल में से आती आवाज़
न सुन पाता है क्या तू बोल
तड़प कर मरते भूखे आज
न यह भी पाते आँखें खोल !
भस्म के गौरव ! उड़ कर ध्वंस
मचादे, जिससे हो निर्माण !
जाग मेरे यौवन के गान !
युगों के राही हिंदुस्तान !

नभ से भीषण बम गिरते हैं
उठी खाइयों से आवाज़—
वह आवाज़ कि दुनियाँ गूंजी—
'स्तालिनग्रेद ज़िन्दाबाद !'

'जब जब बाधाएं आयेंगी
आयुध लेकर हम सन्नद्ध
अरे पीढ़ियों तक तत्पर हैं
अरे युगों तक हम कटिबद्ध

स्तालिन का नेतृत्व स्फूर्ति दे
हमलावर विध्वस्त करें
ऐसी हो झङ्कार कि खंडहर
गूँजें युग युग शक्ति भरें'

तोपों का भीषण गर्जन था
वायुयान की भयद घहर
वोल्गा पर ज्वाला चिल्लाती
घर घर गिरते आज थहर

पर दीवालें फिर चिल्लाईं
फिर से ईंट ईंट गरजी
फिर झङ्कार उठी भीषणतम
भंवर भार ले मुक्त नदी

'कौन कैस्पियन तक पहुंचेगा
हिटलर का ऐसा सपना ?
वह क्या जाने लाल सोवियत
एक नहीं जाने झुकना

मॉस्को, लेनिनग्रेद जीतना
अब मरीचिका है केवल
तोते आस लगाये बैठे
पायेंगे केवल सेंवल

नहीं नगर के लिये अकेले
नहीं देश के लिये यहाँ
अरे फैसला होगा मानव—
न्याय-शक्ति का आज यहाँ

आज भाग्य अपनी संस्कृति का
निर्भर है इन बूंदों पर
आज पताका फहरायेगी
नर्तित अपनी गूँजों पर'

धड़क रही है दरकी धरती
उठी खाइयों से आवाज़
वह आवाज़ कि दुश्मन काँपा
'स्तालिनग्रेद ज़िन्दाबाद !'

माँ का दूध शपथ देता है
शपथ दे रहे प्रिया नयन
शपथ दे रहे मधु शिशुओं के
वे स्वच्छन्द मधुर क्रीड़न

शपथ राष्ट्र की मानवता की
हमें प्राण का मोह नहीं
भय घुटने टेके रोता है
साहस का है मोल नहीं

अरे कौन जो चुप रह जाये
अत्याचारों में डूबा
देख रहे वे आशा भर भर
बर्बर ने जिनको लूटा

ध्वंस किया है जिसने अपना
जिसने आग लगाई है
अरे उसी ने विषम वायु में
यह ज्वाला धधकाई है

वह किसान आ मिलते हमसे
खेत जल चुके हैं जिनके
अरमानों को हम निभायँगे
जो जीवित मन में इनके

उन लपटों की याद हमें है
जो जलती अपने घर में
देखो आज धधकती हैं वह
सैनिक के निर्भय उर में

लाखों नयन जमे हैं हम पर
लिये स्नेह आशङ्का प्यार
क्या हम उनको धोखा देकर
माँगें जीवन भीख पुकार

इन भुजदण्डों पर गौरवमय
बदला लेंगे हम पूरा
शत्रु मान यदि लोहा भी हो
कर कर देंगे हम चूरा

लूट ? लूट कर हावी है वह
हम भी देखेंगे उसको
पूर्वज-रक्त-सिंचिता धरणी !
मुक्त करेंगे हम इसको,

बन्दूकों की धांय धांय में
उठी खाइयों से आवाज़
वह आवाज़ कि—गिरते गरजे
स्तालिनग्रेद ज़िन्दाबाद

यह फ़ासिस्टों का प्रसाद है
देश कर दिया है कैसा
आज धूलि में हीरे खोये
बर्बर का साहस ! ऐसा ?

वोल्गा को रिपु छू न सकेगा
आज बीच में रोकेंगे
लक्ष लक्ष सैनिक मरणोन्मुख
पर हम उसको टोकेंगे

वह ग्यारह सैनिक जो जीते
पैदल टैंक यान से भी
जीवित लड़ते हैं अब भी तो
झुक न सकेंगे कैसे भी

एक एक ने छः छः भीषण
टैंकों की गति रोकी है
भिड़ ग्रिनेड सटा कर उर से
रिपु की सेना तोड़ी है

हम ज़ारों को देख न पाये
पर सुन पाये अत्याचार
कौन ? रहेंगे हम गुलाम हो
क्लीव बने निर्बल लाचार ?

अब न कभी हम रह पायेंगे
पूंजीवादी संस्था में
शत्रु भूलता है मानवता
आज विजय की तृष्णा में

आज अनेकों राष्ट्र मिले हैं
एक साथ हथियार उठा
सारी जनता एक ध्येय के
चलती है उन्माद जगा

साथी स्तालिन ! रक्त वही है
जो कि पूर्वजों में बहता
आज मृत्यु को भीत करें हम
मन में यह साहस जगता

बस पचीस बरस बीते हैं
हमने दुनिया बदली है
अरे युगांतर की अंधियारी
में यह ज्वाला जलती है

मशीनगन ने उगली ज्वाला
उठी खाइयों से आवाज़
वह आवाज़ कि जीवन जागा
स्तालिनग्रेद ज़िंदाबाद

हमको है विश्वास हमारी
अनुगामिनि हो विजय चले
हमको है विश्वास ज्वाल में
अपनी—सारा पाप जले

आज रूस का बच्चा बच्चा
आज सोवियत् का कण कण
कर्त्तव्यों का पालन करता
युद्ध कर रहा है भीषण

पर जो हम पर आज पड़ी है
नभ भू की ज़िम्मेदारी
धन्य भाग्य ! हम ही तो हैं जो
आज बन सके अधिकारी

सेकेंड फ्रन्ट खुलेगा कब तक
साथी स्तालिन पूछो तो !
क्या फ़ासिस्टों पर करुणा कर
बच पायेंगे बोलो तो !

हम प्रार्थना कर मौन न होंगे
और न कोई हम तो हैं
अपने तो उद्देश्य साफ़ हैं
यह स्वतंत्रता सबको है

जग भर हो आज़ाद किलक कर
चाहे कितना रक्त बहे
मांगे से आज़ादी किसको
मिल पाई है आज कहे

हमको अपने ही एके पर
है विश्वास—अजेय रहें
सैन्य और जनता मिलती है
फिर किसके हम हेय रहें

अरे बहुत हैं दुनिया भर की
समवेदनमय वह आँखें
आग भर रहीं हैं पल पल में
दलितों की भीषण आहें

कितने दिन तक जाली में ढंक
अत्याचार सहायेंगे
जनता के घातक दुश्मन सब
एक दिवस मिट जायेंगे

एका ही है शक्ति हमारी
उठी खाइयों से आवाज़
गूंजी स्वतंत्रता की लहरें
स्तालिनग्रेद ज़िंदाबाद

अरे कौन बर्बर आया है
जिसे प्राण का मोह नहीं
वह नेपोलिन का घमंड भी
दिया कहो क्या तोड़ नहीं

तब सम्राटों के झगड़े थे
सदा राज्य के लिये हुए
उन्हें क्या पड़ी जनता चाहे
मर जाये या कहीं जिये

एक पाप वह मानवता का
सन सत्रह में धोया था
वह मज़दूर किसानों की जय
पूंजी का बल खोया था

सड़ी गली सब चीज़ तोड़ कर
दुनिया नई बसाई थी
बहुत दिनों से सरमाया ने
इस पर आँख जमाई थी

आज ध्वंस करने आया है
फ़ासिस्टी बल छोड़ विवेक
अरे क्रान्ति का पूत चिन्ह यह
गिर न सकेगा स्तालिनग्रेद

ज़ारिस्तिन के उन रक्षक की
हमको शान निभानी है
यह जो आंधी उठ आई है
हमको आज मिटानी है

यहाँ जीत कर दुश्मन बढ़ कर
तेल हमारा छीनेगा
और बिचारे हिंदुस्ताँ को
खूनी पगतल रौंदेगा

यह चिनगारी यहीं बुझादें
फैल नहीं पाये आगे
टूटे तो दुनिया गिरती है
हम आज़ादी के तागे

आज ईंट से ईंट बजे पर
मुँह से उफ न सुनाई दे
क्रान्ति प्रगति ने हममें रह रह
ऐसी आग जगाई रे'

गिरते हैं घर भीषण रव कर
उठी खाइयों से आवाज़
वह आवाज़ कि खंडहर जागे
स्तालिनग्रेद ज़िंदाबाद

स्तालिनग्रेद नगर ही केवल
या फिर बाह्य भाग केवल
नहीं ! आज कण कण अपना है
सभी आज है अपना बल

वोल्गा ! लहरें मृदुल स्पर्श सी
स्टेपी ! फर फर केशों से
ये बर्फीले शैल हमारी
मधु वोद्का के फेनों से

यह आकाश अनंत कि जैसे
माँ की ममतामयि आँखें
यह घर जो कि बसाते हमको
जैसे प्रेयसि की बाँहें

पर कल का सा नहीं नगर है
श्वेत गृहों की पंक्ति गिरी
डूबी ज्वाला अंधियारी में
कड़की है ध्वंसिनि बिजली

वह छोटे छोटे कस्बे जो
एक नगर से बने हुए
कल तक मुस्काते थे उज्ज्वल
आज अंधेरे पड़े हुए

वह घर जिनसे धूम शिखायें
बुला रहीं सी उठती थीं
आज उन्हीं से नभ भरने को
काली आंधी उठती सी

वह मर्मर सा नगर जनों का
केवल स्फोट नाद भीषण
शैलों पर था मार थपेड़े
रह रह कर करता गर्जन

आज किंतु इन खंडहर में जो
है अपराजित जीवन शक्ति
इतिहासों में चिर दुर्लभ ये
ध्वंस सृजन की है अभिव्यक्ति

पर कल तक मानवता केवल
शांति गीत ही थी गाती
आज मरण की दुंदुभि बजती
और दुराशा घिर आती

वह वोल्गा जो कल तक केवल
एक प्यार की धारा थी
आज लहर के पाश घिर रहे
और डुबाती कारा थी'

आज स्त्रियों बच्चों विहीन यह
स्तालिनग्रेद शिविर फौजी
जिसकी झंकृति लहरों को छू
बलखाती वन में लौटी

छोटी नैया, बजरे जल पर
दृष्टि सदृश चंचल चलते
बस—जल में गिर प्रबल थपेड़ों
से व्याकुल हैं डूब रहे

झन झन स्तालिनग्रेद कर रहा
और निकलती ज्यों बिजली
झंकृति सी वोल्गा की लहरें
थहर रहीं नर्त्तित मचली

जलती चीज़ें उस प्रवाह पर
ऐसे जगमग करती हैं
लगी आग पानी में—जैसे
बिजली नभ में बिखरी हैं

हाहाकारों से रह रह कर
कान फट रहे हैं जग के
महासृष्टि की गति में हलचल
रक्त सिंधु हैं उमड़ रहे

और शवों पर पग धर अपने
युद्ध कर रहा है तांडव
क्रंदन ग्रह उपग्रह से टकरा
भर भर देता भीषण रव

ये नभ के तारे भी सूने
आज उगलते हैं ज्वाला
यह चंदा भी ज्वालामुखि सा
गरल फूंकता मतवाला

शिशु नारी पर ज़ुल्म किये जो
बर्बर अट्टाहास मुखर
दलितों मरतों के उठते हैं
व्याकुल हाहाकार बिखर

इन आयुध की हुंकारों में
पृथ्वी फटती लगती है
लपट गगन को चूम यान सी
धू धू करती जलती है

आंतें दाबे गरजे सैनिक
उठी खाइयों से आवाज़
मरने वाले आज अमर थे—
स्तालिनग्रेद जिंदाबाद

कड़क रही हैं प्रबल बिजलियां
गूंजा थंडर सा नभ में
वोल्गा है विक्षुब्ध, चीर कर
छाती बजरे चल जल में

बम का वेग बहुत ऊंचे तक
पानी को भरमाता है
नैया को डगमग डगमग कर
धार बांध भर जाता है

कण कण में विस्फोट प्रबल है
जन जन में है भीषण आग
हलचल हुई पदार्थ रूप में
हवा टूटती जैसे कांच

बंदी नोंच रहा है सिर को
भेरी यह ध्वंसिनि बजती
महामृत्यु के कशाघात से
मानवता रोती थकती

नभ में यह लघु वर्ण बैंजनी
और बीच में फैला लाल
एक ज़ुल्म है—क्रान्ति दूसरा
गुंथे आज हैं मुक्त कराल

आज क्रान्ति के हेतु उठा है
बंधन मुक्त बने मानव
कांप रहा नीरो व्याकुल सा
न्याय पूर्ण उठता मानव

अरे कौन ताक़त जो रोके
उठे हुए इन हाथों को
यह प्रतिशोध जागरण नूतन
तोड़ रहा है बांधों को

देख रहे मज़लूम जगत के
तृष्णा जीवन की सुलगी
सदा अंधेरे में भटके जो
उनकी भी आशा जगती

और सिंधु की क्षुब्ध तरंगों
सा रूसी बल समा रहा
घोर तिमिर में दीप्त एक कन
आशा का टिमटिमा रहा

लोहा टूट रहा शीशे सा
उठी खाइयों से आवाज़
वह आवाज़ जगाती जन जन—
'स्तालिनग्रेद ज़िंदाबाद

एक बार फिर साहस गूंजा
एक बार फिर नभ दहला
उठी शुष्क अधरों से ध्वनियां
नभ के तारों को सहला—

स्तालिनग्रेद नहीं है केवल
रूस और जर्मन का युद्ध
आज ज्योति पर टूट पड़ा है
अंधियारा होकर अति क्रुद्ध

यह नवयुग की प्रसव पीर है
आज दुसह भीषण लगती
किन्तु इसी लोहू के ऊपर
जागेगी नूतन जगती

मानव का मानव न करेगा
फिर कोई मर्दन शोषण
भौतिक युद्ध त्याग कर यह जग
प्रगति-पंथ पर धरे चरण

रूढ़ि कलुष विश्वास अंध सब
मेधा से निर्वासित हों
जोंक बने जो चूस रहे हैं
पृथ्वी उनसे वंचित हो

यह मानव हो मुक्त भरा गति
जीवन हो उल्लास भरा
मुक्त बने जो बस पूंजी का
स्वार्थ शक्ति का दास रहा

रोटी के हित नहीं भिखारी
विश्व एक घर ऋद्धि भरा
मिलें प्यार से सब मुस्कायें
चल विकास हो शक्ति भरा

यह पृथ्वी न विभाजित सी हो
सकल भूमि घर मानव का
और गगन सी कीर्ति मनुज की
फैले दिशि दिशि में अमला

स्तालिनग्रेद नगर का रण है
नये विश्व के हेतु सतत
नई सड़क का कूट बनाना
जिस पर चललें सभी निरत

प्रकृति हमारी—हम मेधामय
उसका कर निर्माण नवीन
एक ध्येय से बनें संगठित
शांति गीत गायें अमलीन

नयनों में है ज्योति मधुरतम
फिर हम ही तम में डूबें ?
सागर तक अपने स्पंदन हैं
फिर गोपद में क्यों डूबें'

एक और हमला लौटाया
उठी खाइयों से आवाज़
वह आवाज़ कि ख़ून छायगा
'स्तालिनग्रेद ज़िंदाबाद'

ऑक्टोबर की क्रान्ति अमर हो
पितृ-भूमि यह हो आज़ाद
स्तालिन का नेतृत्व रहे औ'
स्तालिनग्रेद ज़िंदाबाद

एक वेग का भीषण धक्का
संगीनों पर चमक उठा
लाल रक्त की बहती धारा
की ऊष्मा पर दमक उठा

घर की नींवें दहल रहीं थीं
युद्ध सामने आया था
दोनों दल ने संगीनों को
भर कर श्वास उठाया था

टूटे भूखे सिंह लरज कर
कोई मुँह के बल गिरता
और पलट कर हँसता अपने
पीछे वाले से जुटता

झनझन कर संगीनें ठुमकीं
धांय धांय गोली गरजीं
मेघ फाड़ कर रश्मि फूटती
जीवन भेद मृत्यु उठती

एक बार फिर चलीं ग्रिनेडें
रूसी नायक उगल उठा—
रक्त—रक्त को उगल उठा वह
वक्ष दाब कुछ निगल उठा

लड़खड़ भीषण स्वर में गरजा
'कितने हैं बाकी बोलो ?'
'तीन अरे हम तीन बचे हैं
बोलो नायक कुछ बोलो !'

मुस्काया वह मरता नायक–
'जीवन है या आज मरण'
लुढ़का नायक, गरजे सैनिक–
'जीवन है या आज मरण'

स्तालिनग्रेद दूर तक गूँजा
लौटी केवल यह प्रतिध्वनि—
ईंट ईंट का राग वही था—
'जीवन है या आज मरण'

बन्दूकों की धांय धांय या
संगीनों की वह झनझन
एक शब्द उठता अणु अणु से—
'जीवन है या आज मरण'

टीढ़ी दल सी गोली टूटीं
तीनों लुप्त हुए, भीषण
जर्मन वार वेग में रूँद कर
खोये थे, जैसे प्रतिध्वनि

किन्तु अचानक आ पीछे से
रूसी सेना डाट उठी
दरवाजों पर चलती गोली
जर्मन मुर्दे पाट उठी

एक तड़प हुंकार कि सहसा
बन्दूकें संगीनें ले
सीधे खड़े हुए झपटे वह
हुंकारों से मन बेधे

जर्मन गोली तड़कीं, रूसी
लुढ़के पर वे रुक न सके
और घुसे घर में वे जर्मन
गिरते रह रह उठ न सके

चारों ओर बरसतीं गोली
धूम धूल का अन्धड़ था
लाखों बिन्दु रक्त के गिरते
हार भूमि का बनता था

किन्तु अचानक ही ऊपर से
बम गिर गिर कर दहक उठे
चूने के बन्धन को तज कर
पत्थर रह रह लुढ़क उठे

भागे रूसी, बरसीं गोली
लेट गये वह खंडहर पर
तभी एक कर घोर नाद चिर
पीछे घर गिर गया बिखर

एक खड़ी चौमंज़िल ऊँची
सुदृढ़ इमारत जर्जर सी
जर्मन फ़ौज गहे थी जिसको
रक्षा करती तत्पर थी

संमुख भूमि खुली थी फैली
जिस पर गोली चलती थीं
रूसी हमलों की ताक़त सब
तितर बितर हो घटती थीं

संमुख माइन बिछा रखी थीं
हर खिड़की पर आयुध थे
मोरटार की बौछारों से
हमले विक्षत कातर थे

रात हुई तब भग्न घरों में
रूसी एक छिपा जाकर
गिन न सका वह रिपु के आयुध
होता था रह रह आतुर

ऊपर रूसी बम बरसाते
जर्मन उनको छितराते
पल पल बीती रात, गया दिन
किन्तु रहे प्रहरी जागे

'रात और दिन में वे जर्मन
वार कर रहे दोनों ओर
किन्तु श्रांति पड़ती है थोड़ी
जब फूटा करती है भोर'

भोर—और रूसी आयुध ले
सात गार्ड-जन तत्पर से
रेंग खंडहरों पर चलते थे
धीरे धीरे आहट ले

झपट बाज़ से बढ़े वेग से
हहर उठा विक्षुब्ध पवन
दुमंजिले पर गोली खड़की
देर कर चुकी थी लेकिन

खाई खुदी हुई थी संमुख
भीतर घुसती जाती थी
घुसे शक्तिमय, सीढ़ी संमुख
दिखती ऊपर जाती थी

टूटी थी पर कूद वेग से
मैकेरोव बढ़ा आगे
दो सैनिक रक्षक बन दृढ़ थे
खड़े हुए उसको डाटे

जर्मन कमरों की बगलों में
ऊपर से थे उतर चुके
और निकाले बन्दूकों की
नलियाँ—साँसें रोक, रुके

फटीं ग्रिनेड, उठ कुछ भीषण
हाहाकार प्रबल घहरे
किन्तु धूम में वायु घुटी थी
तम के बन्धन थे खुलते

लाशों पर धर पाँव चले बढ़
दांया द्वार गरज भीषण
उगल उठा गोली पर गोली
उठतीं रह रह रोर विजन

एक ग्रिनेड तड़प कर लपकी
शांत हुई वह कड़क विमौन
हुड़क हुड़क कर धूँआ उठता
कहता—आया भीतर कौन ?

अगले कमरे का सारा तन
बममारी का ग्रास हुआ
अरे ऐक्सरे में से जैसे
हड्डी का आभास हुआ

जर्मन गोलों ने दाबा था
घर का बांया भाग प्रबल
वार घोर कर राह रोकने
सेना लौट रहीं निर्बल

बाहर खाई पर रूसी थे
किन्तु बीच की भूमि सुदूर
आज गोलियाँ करतीं उसको
करतीं थीं हर हमला चूर

दौड़ पड़े खाई पर जर्मन
पर लुढ़के गोली खाकर
टीड़ी दल से खेत निमुंडा
होकर ज्यों करता थर थर

दौड़े रूसी गोली खाकर
अब थे मुँह के बल गिरते
और बचे खंडहर में छिप कर
घायल से भयमय तकते

मैकेरोव विवश ऊपर था
निर्बल नीचे नोसव था
तोड़ तोड़ कर बीच बीच से
गरजा जर्मन कौशल था

घर में एक भीत के कारण
दोनों बल अवरुद्ध रहे
बाहर दोनों रक्षक सेना
के मन रह रह क्रुद्ध रहे

निचली मंजिल काँप रही थी
बन्दूकों की कड़कों से
बिंदु बिंदु पर दृष्टि गड़ी थी
दोनों ही की सड़कों के

अन्धकार में ढूंढ़ ढूंढ़ कर
तार फ़ोन का काट दिया
जर्मन शक्ति तिमिर में बढ़ती
पर रिपु को फिर रोक दिया

उधर ज्योति की क्षीण किरण ने
ज्योंही आँखें खोलीं थीं
इधर धड़ाधड़ करतीं फिर से
नाच उठीं अब गोली थीं

वोल्गा की वह चंचल धारा
दीख रही थी खिड़की से
देख रहे थे रूसी जिसको
चौकन्ने हो बन्दी से

नगर वही विध्वंस नाद की
हाहाकार भरी ध्वनि था
अट्टहासों में डूबा था
चुभ चुभ उठता क्रन्दन था

काट दिया अब तार फ़ोन का
रक्त वाहिनी नाड़ी ज्यों
किन्तु रूसियों की सामग्री
क्षयमय होती जाती ज्यों

पर साहस के महालौह पर
कोई जंग न छा पाई
हँसियों की झंकृति में सबने
गोली ही चलती पाई

विजन वायु की ठंडी सिहरन
हड्डी तक काटे खाती
जिसके अंचल को थामे ही
अंधियाली छाती जाती

रात हुई, सैनिक अलसाये
मैकेरोव न सो पाया
फटे नयन वे चमक रहे थे
मन रह रह कर हर्षाया

आधी रात हुई, निस्तब्धा
भंग हो रही दूर कहीं—
नीरवता में जगा उठा वह
साथी अपने—बात नहीं

एक द्वार असुरक्षित देखा
खुर्राटे का शब्द हुआ
धक्के से पट खुले मौन हो
अंधियारे का मान छुआ

धूमिल अंधियारा था भीतर
आग पास में जलती थी
नाज़ी बल की क्षण की निद्रा
नीरवता में घुलती थी

कई ग्रिनेड फेंक कर बाहर
मैकेरोव भगा बाहर
भयद धड़ाकों में चीत्कारों
की ध्वनि आई हाहाकर

भग्न वृक्ष पर सोते थे खग
बिजली सहसा टूट पड़ी
या घाटी पर शृंग टूटते,
केवल ईंटें थीं गिरतीं

रूसी बल झट घर पर धाया
बाहर जो तकता था राह
उनके पीछे जर्मन बल का
चला गरजता भीषण ग्राह

निर्दय से दोनों जूझे फिर
भीतर सैनिक शंकित थे
एक भीत के बंधन ही से
वे दो जग में सीमित थे

बाहर टैंक माईन पर आया
बिखरा चकनाचूर हुआ
बाकी तीनों मुड़ कर भागे
घर अब फिर से दूर हुआ

फिर सहसा ही नये वेग से
सात टैंक लुढ़के आये
रोका—नहीं रुके वे भीषण
ऊपर ही चढ़ते आये

रूसी सोच रहे थे मन में
खिची में पल पल आते
लो फिर ऐंटीटैंकगन चलीं
लोहे बज बज टकराते

लौटे टैंक छिपे खंडहर में
पर जर्मन यानों का घोष
आज मिटाने घर मँडराया
अग्नि गिराता भर भर रोष

बीस मिनट तक कांपा वह घर
छतें दीवारें लुढ़कीं
गड्ढों में छिपता उतरा तम
खंडहर में लाशें सिकुड़ीं

अभी विमानों का वह गर्जन
रुक न सका था पूर्णतया
पंन्द्रह टैंक—पदातिक टूटे
घर पर वेग भरे सहसा

घर क्या था ईंटों पत्थर का
एक बड़ा सा मलवा था
जिस पर टैंक धड़धड़ाते थे
पैदल का गुस्सा छाता

हर गोली में महा ध्वंस के
अक्षर रह रह उमड़े थे
बारानिक के मोरटार चल
तपड़ तड़प कर घुमड़े थे

मरण कथा लिख गई शत्रु के
घायल शव की भीड़ों से
टैंक छिपे, सैनिक छिपते थे—
लोहे फटते चीरों से

खंडहर पर भी धांय धांय बम
भयद धड़ाका होता था
जर्मन हमले का निर्बल हो
वेग भग्न हो खोता था

किंतु लड़ रहे जर्मन नीचे
खाई में से मार रहे
रूसी गिरते थे रह रह कर
गोली करती पार रहे

कुज़ीकोव छिप भीत तले झट
भीषणता से फेंक उठा—
दो ग्रिनेड विस्फोट नाद वह
चीत्कारों को खेंच उठा

ऊष्ण वारि के गिरते ही ज्यों
दादुर उछला करते हैं
और भाफ़ से मूर्छित हो कर
उसमें ही गिर जलते हैं

भागे जर्मन पर ग्रिनेड की
बाढ़ डुबाती उन्हें चली
हाहाकारों ने नभ छूकर
विस्फोटों की आग छली

फिर दो धक्के महावेगमय
रिपु के घुटने थहराते
किंतु शनैः लहरें विलमाईं
फेनिल तट जगते जाते

विजित खंडहरों पर बैठे वे
अन्धकार में श्वास लिये
अरे प्रतीक्षा में ऊषा की
नयनों में विश्रांति लिये

बत्ती एक जल रही थिर थिर
खंडहर पर थी नाच रही
कभी उठा देती थी छाया
कभी झूम कर ढांक रही

मैकेरोव देख लालच से
स्टोव, विहँसता बोल उठा—
'इतने दिन के अतिथि, एक भी
पर कब तुझसे बोल सका'

और ठहाकों के रुकने पर
सबने देखा नीरवता
निद्रित मैकेरोव प्रताड़ित
खुर्राटों से थी विकला

महाजलधि में नाव नूह की
जैसे आशा भरी चली
खंडहर पर बैठी वह सेना
देख रही थी रात ढली !

गूँज रहे थे अब भी खंडहर
वायु दीप से उठती खेल
आज स्नेह अंचल में निर्भय
विद्रोही था स्तालिनग्रेद

११

रात हुई घनघोर अंधेरा
लगा प्लांट पर मडराने
भीगीं मोटर और दुकानें
लगा सभी पर घहराने
मौन कोयले छिपे तिमिर में
छिन्न छिन्न चीजें टूटीं
बम गिरने से खड्ड बने थे
गहरी घूम हवा गूंजी
लोहे के टुकड़े उड़ते थे
जैसे कपड़ा फटा हुआ
एक भयानकता छाई थी
धूंए से नभ घुटा हुआ
मरघट की सी वीभत्सा थी
बम गिर जलीं चिताएं थीं
और घायलों की पुकार में
नपी मृत्यु की आहें थीं
अरे बचेगा या गिरने की
बेला आई आज सखेद
किंतु साइबीरियन फौज थी
और निडर था स्तालिनग्रेद
मुंह की हड्डी छिन जाने पर
जर्मन चीता पागल था
अरे .खून का प्यासा अंधा
गर्जन करता बादल था
यह फासिस्टी आग लगी थी
भून रही थी अपनों को
जनता के बच्चे वे जर्मन
भूले जनता—अपनों को

आज आदमी नहीं रहेगा
यदि वह उनका दास नहीं
मगर रूस का लाल मरेगा
खायेगा वह घास नहीं
दोनों ओर डटे हैं योद्धा
आँखें अंगारों सी हैं
आह भयानक हमला करती
जर्मन सेना बढ़ती है
एक और आवाज कि-'साथी
मरले, पीछे हटे न एक
एक गरज हिल गया गगन भी
हिल न सका पर स्तालिनग्रेद
ऊंचे ऊंचे ज्वान खाइयों
में डट कर थे ताक रहे
.खून जमाने वाली ठंडक
पर वे गोली दाग़ रहे
.खून नहीं बम देशभक्ति ही
नस नस में थी पुलक रही
नहीं हड्डियां यह नींवें थीं
आज देश की गरज रही
मांस नहीं था वह था लोहा
आँखें थीं बस अंगारा
हिम्मत खड़ी पहाड़ों सी थी
हाथ महानद की धारा
बमों के भीपण प्रपात का
फेन बना धूंआ उठता
जो झोंकों के बर्बर हाथों
बिखर बिखर कर है लुटता

जिधर उठे बह गये शत्रु थे
खाकर उनकी एक चपेट
खंडहर थे घर, जिन्दी सेना
औ' जिन्दा था स्तालिनग्रेद

व्यापारी हिस्से में निर्भय
एक प्लैंट था खड़ा हुआ
गैस यहाँ बनती थी अविरत
उस पर दुश्मन चढ़ा हुआ

कर्नल गर्टिव चला रहा था
फ़ौज प्लैंट की देख रहा
कर्नल तरासोव गोलों में
अब भी कागज़ देख रहा

बीते थे दिन बीती रातें
खुल न सकी पर कभी कमर
हमें जीतना यही सत्य था
यह जीवन ज्यों एक समर

स्पिरिट लिये दृढ़ता लोहे की
सबल मुस्कराता निर्भय
मार्केलोव आदि उल्लासी
गरज रहे थे मृत्युञ्जय

फिर भी गर्टिव मन में शंकित
अपनी सेनाओं को देख
सोच रहा था मानव ही है
पर निःशंकित स्तालिनग्रेद

बढ़े टैंक जर्मन सेना के
आग फेंकते गर्जन कर
भीषण मोरटार का हमला
फटती धरणी गर्जन कर

बम के टुकड़ों से घर औ' छत
बालू के घर बन गिरते
और स्फोटकों की ज्वाला से
इधर उधर सब हैं जलते

रात—प्रबल ज्वालाएँ जैसे
अंधियारे को जला रहीं
जिसके धूँए से ढकता दिन
भूमि रक्त से नहा रही

जर्मन आर्टिलरी मुखरित स्वर
और गूँजतीं बन्दूकें
विकल आर्त्त बन कर उन्मादिनि
तड़प रहीं घायल हूकें

वह गर्जन हुंकार भयानक
दहल गये घर द्वार अनेक
पर हर सैनिक स्वयं बना था
दुर्गम लोहा-स्तालिनग्रेद

दाँतों में बन्दूक संभाले
एक हैण्ड-ग्रीनेड उठा
फेंक रहा था आँख मींच कर
उधर एक चीत्कार उठा

डूब गया वह प्रबल घोष में
यह आँधी थी गहर रही
या फटती थी धरणी नीचे
ऊपर बिजली कड़क रही

पर पीछे वोल्गा बहती थी
वोल्गा—वोल्गा तो जननी
यह मिट्टी है—देखें किसकी
बनने वाली है कफ़नी

अभी भोर के गाल दिखे थे
जिन पर काली लटें रहीं
तभी मृत्यु की अंधियारी बन
जर्मन सेना उमड़ पड़ीं

रूसी भूले—भूले जग को
मृत्यु हुई जीवन का खेल
स्तालिनग्रेद! धांय! फिर स्तालिन
धांय धांय बम स्तालिनग्रेद

जर्मन युन्कर सत्तासीवें
सिर के ऊपर उमड़ पड़े
अंधियाले बादल बन कर वे
कड़क कड़क कर घुमड़ उठे

काँप उठा वह गगन दहल कर
जैसे अब फट जायेगा
घहर उठीं पक्की दीवारें
अन्त सभी हो जाएगा

तार भेजता जो झुक सैनिक
अब गोली है दाग रहा
घोर नाद में बहरा बन कर
युद्ध भयंकर नाच रहा

नीचे झुक कर महागिद्ध से
अट्टहास करते युन्कर
गरज रहे थे ताक ताक कर
गिरा रहे बम प्रलयंकर

नभ में अंगारे गिरते थे
पत्थर वज्र कड़क भू भेद
गिरती थीं दीवारें लड़खड़
काँप रहा था स्तालिनग्रेद

एक मिनट आराम नहीं था
मौत खेलती थी हर क्षण
रक्त रक्त से धरा भींगती
दिन होता जाता भीषण

गर्जित लहरों से सागर की
झोंकों पर झोंके आये
तूफ़ानों में बिजली कड़की
या कि फटे भूधर धाए

साइरन बजते, थे बम फटते
पृथ्वी हिलती नभ दहला
धूल और धूंए ने घुट कर
मानव को हँस कर कुचला

जर्मन वायुयान क्रोधित हो
भ्रमण कर रहे थे नभ में
भंवर पड़ रहे थे झोंकों से
भैरव स्वर भर अणु अणु में

एक एक क्षण बाद गिर रहे
थे जर्मन बम भयद अनेक
अंधियाले में डूब गया था
उन कुछ घंटे स्तालिनग्रेद

अरे आठ घंटे बरसे बम
छलनी करदी भूमि कड़क
गिरते बम हुंकार स्फोट का
गिरते थे घर हाय तड़क

अरे आठ घंटे तक धूँआ
घिरा और सर पर छाया
जिनमें कभी आग जलती थी
कभी धूल का गुब्बारा

जहाँ जहाँ पर बम गिरते थे
कूँए से खुद जाते थे
उनसे घुमड़ी धूल मेघ सी
छाती सब मुद जाते थे

फूटे पत्थर धधक रहे थे
और कोयले दहक उठे
हाहाकारों की बू पाकर
वे हमलावर महक उठे

अरे आठ घंटे लोहे से
लोहा बजता था तन भेद
रक्त रक्त की प्यास भयानक
लाल होगया स्तालिनग्रेद

तोपें धांय धांय करती थीं
बन्दूकें थीं कड़क रहीं
सैनिक पगध्वनि से विक्षुब्ध हो
खंड खंड हो सड़क पड़ीं

अँधियाला था या संध्या थी
जिससें बिजली चमक उठी
उसी रोशनी में गोली भी
साध निशाना दमक उठी

चटक गईं सोठें अर्रा कर
द्वार हुए टुकड़े टुकड़े
बम के क़ातिल टुकड़े फँसकर
दीवारों में थे जकड़े

छेद हो गये थे ज्यों जग में
आज हुई घायल दुनिया
युद्ध युद्ध ही तो सब कुछ है
युद्ध कर रही ज्यों दुनिया

दाँत पीस कर सैनिक गरजे
मौत रही थी सर पर खेल
'आज़ादी या कहो ग़ुलामी'
यही पूछता स्तालिनग्रेद

बन्दूकों की भीषणता में
बधिर बनाते तर्जन में
एन्टीएयरक्राफ्टगन के उस
अन्धकारमय गर्जन में

भीषण तोपों की दहाड़ से
महामृत्यु के जबड़ों में
ऊपर ज्वाला नीचे ज्वाला
बदले जब सब टुकड़ों में

धूल धूँए की दहलाती सी
भयद दहाड़ों में खड़खड़
चलतीं मशीनगन अविरत वह
अणु अणु गिरते हैं लड़खड़

जर्मन टैंक हवाई हमले
गोलंदाज़ लिये पैदल
एक शक्ति बन वेग प्रखरतम
टूट रहे हैं मत्त प्रबल

पर विस्मय से काँप गया रिपु
अब भी गोली चलती देख
अपराजित पुकार सा उठता
अब भी लोहा स्तालिनग्रेद

और कारख़ाने जलते थे
इमारतें धू धू जलतीं
खंडहर बन कर नगर चिता था
धधकाता ज्वाला बुनतीं

जर्मन गोलंदाज़ रात भर
फेंक रहे गोले सन्नद्ध
महागरज का महागरज से
रूसी दें बदला कटिबद्ध

अँधियाला फिर ऐसा छाया
बन्दूकों के छोर विलीन
धूँआ उड़ता था जो आग
वही तनिक इंगित था दीन

हवा काटती सांय सांय सी
गिरा रही थी घर बिखरे
जहाँ कहीं थी आग लपट पर
रह रह कर झोंके लहरे

चालिस लाख बॉम्बर सिर पर
लहर उठे बन कर दुर्भेद
एक भाड़ सा धधक उठा फिर
भड़क भड़क कर स्तालिनग्रेद

थर्राया दिल फासिस्टों का
लेनिनग्रेद मॉस्को क्या?
वह सेवस्तोपोल लिया था
पर इसकी सेनाएँ क्या?

जैसे बम फ़िज़ूल गिरता है
जुगनू सा तन के ऊपर
एक कराह न हारे मन की
एक नहीं उठता ऊपर

उधर घायलों में से कोई
संवेदनमय योद्धा देख
कहता है—फ़ासिस्ट उधर हैं
छोड़ मुझे—वह स्तालिनग्रेद !

और होंठ भींचे वह योद्धा
फिर मशीन सा अड़ा हुआ
अरे उसी के भुजदण्डों पर
मान राष्ट्र का अड़ा हुआ

एक ओर सन्नाटा बाँध
दफ़नाते बलिदानों को
तेरे बेटे आज तुझी में
जगा रहे अभिमानों को

एक किलोमीटर चल आये
पर क्या एक किलोमीटर !
क़दम क़दम का मूल्य रक्त दे
थे बढ़ते थे आज निडर

चप्पा चप्पा आज भूमि का
कण कण अपने ही घर का
अरे आज क़ीमत मालुम थी
उन पर ही तो सब कुछ था

उसी रात जर्मन टैंकों ने
बाढ़ मचाई कुचल दिये
उसी रात तोपों ने लोहे
रह रह कर थे उगल दिये

उसी रात को ही मशीनगन
अथक अरुक निज बैल्ट हिला
अनगिनती गोलियाँ उगलती
उसी रात पैदल बढ़ता

किन्तु बिखर जाती थी रह रह
फ़ासिस्टों की मानिनि रेख
भीतर से साहस भर भर ला
डटा हुआ था स्तालिनग्रेद

कई सहस्र मरे वह रूसी
हिटलर के तृष्णानल में
गाड़ दिये हैं उसी भूमि में
पंक्ति पंक्ति से उज्ज्वल हैं

कौन कहेगा उस गाथा को
आज शहीदों की बातें
युग युग तक दुनिया में फिर फिर
जोश भरें वह थी रातें

इधर साँस का तार टूटता
उधर एक गोली की धांय
और एक दीपक पर लाखों
परवानों की मृत्यु जगांय

गिरते बम धँस गये धरा में
धूल धूँआ धधके बाहर
ज्वालामुखि ज्यों फटा गरज कर
ज्वालाओं का वर्षण कर

वायु लहर उस महाघोष से
थी विक्षुब्ध विकल प्यासी
महाध्वंस में महासृजन की
अभिलाषा जीवित जागी

बढ़ते थे फ़ासिस्ट वेग से
एक ज़ोर का धक्का मार
पर जैसे लोहा था संमुख
लौट रहे थे बारम्बार

रेलें उखड़ीं, प्लेट गया छिप
ईंट ईंट थीं तम में लुप्त
किन्तु साइबीरियन सिन्धु में
ज्यों गिर बिजली होती लुप्त

मार्कलोव का रेजीमेन्ट भी
भोर समय बाहर आया
महामत्स्य ज्यों सांस खींचने
पानी के ऊपर धाया

पत्थर की वह ट्रैंच छोड़कर
बाहर आकर कड़क उठा
अपने प्यारे महानगर को
भग्न देखकर भड़क उठा

लोहे के कन्टोप शीश पर,
हाथों में हथियार लिये
खंडहर, रेल, पहाड़ी पत्थर
पर चलते थे भार लिये

गिरे हुए उठ चले, अभी तक
जीवित हैं ये कौन अभेद
क्या दानव हैं? नहीं! हँस उठा
'मेरे रक्षक' स्तालिनग्रेद

आज तीसरा दिन आया है
और जर्मनों ने भर क्रोध
प्रबल यान वे फिर घुमड़ाये
लहर चले भीषण प्रतिशोध

डूब गया रवि और रात में
भयद यान वे गरज रहे
जिनके भीषण चीत्कारों को
सुन थे कायर दहल रहे

साइरन की चिल्लाहट हुंकृत
बमों का प्रहार होता
या पाषाणों के वर्षण में
ज्वालामुखि फट कर रोता

रौद्रनाश बस सर्वनाश ही
करता हाहाकार रहा
बारह घंटे जर्मन सेना
का वह भीषण वार रहा

अंधकार था, डूब गया था
नगर तिमिर सागर भीतर
नहीं ज्योति की क्षीण याद भी
खोल सकी थी अपने पर

अपने काले केश निशा थी
लाल रुधिर में सान रही
जो कि भोर में दिख पायेंगे
अभी किन्तु सुनसान वहीं

टैंकों की लड़खड़ बजती है
कछुओं से वे लुढ़क रहे
अंधकार में कुछ न दिख रहा
कैसे घर हैं उजड़ रहे

केवल घोर नाद होता है
कभी कभी बम जल उठते
चीत्कारों से भूमि थहरती
भीषण रव विमान करते

यान घहरते, तक कर झुकते
और लगाते गोता तेज़
बम की आंधी सी बरसाते,
गूंज रहा था स्तालिनग्रेद

कभी कभी भीषण सन्नाटा
छा जाता है सन सन कर
साँस रोक लेती अंधियारी
रुक जाता है पवन सिहर

योद्धा सिगरेट पीते, लेते
बारूदों की बोतल भर
बन्दूकों को फिर तत्पर कर
हाथों को मलते क्षण भर

वक्षस्थल सहलाते, अपनी
श्रान्त साँस को बाहर छोड़
और देखकर मुस्काते निज
साथी पीछे गर्दन मोड़

किंतु नहीं है शांति कभी भी
अब भी तत्पर इस पल भी
अरे विजय या मरण आज है
थकने का तो नाम नहीं

अब के बांध तोड़ बिखराया
घुसे प्लैंट के संमुख तक
जर्मन योद्धा रण से पागल
मार मार कर रहे पुलक

जिनके भुजदण्डों ने यूरुप
जीत लिया था क्षण भर में
जिनके पैरों ने कुचला था
रूस देश बढ़ कर रण में;

पर सन्नाटा तैर रहा है
योद्धा देख रहे कुछ देर
टकरा लौट निगाहें आतीं
फिर से चलतीं चुप चुप देख

फिर से हवा फटी चिल्लाती
भीषण ध्वनि रह रह गूंजी
चलते टैंकों पर बन्दूकों
की कठोरता सी भूंकी

उस ध्वनि से दीवारें थहरीं
दरवाज़े व्याकुल काँपे
और सैनिकों ने कन्धों पर
भार आयुधों के भाँपे

अरे अभागे हैं वे तारे
जो यह युद्ध न पाते देख
धरा धन्य है जो वीरों के
लाल रक्त से रंगी सखेद

हुक्म लेफ्टिनेन्टों के गूंजे
गूंजे हैं स्वर चिल्लाते
'जर्मन ऑटोराइफ़िल वाले
बाईं बगलों पर आते'

सुना कि बस फिर आग लग गई
योद्धा पल में हुए सचेत
बर्बर के प्रति घृणा उमंगती
हुंकृत क्षण भर स्तालिनग्रेद

आज वहीं घुसते आते थे
रूसी बल तृण सा समझा
बढ़ते ही आते थे रह रह
विजय विजय का लालच था

संमुख थे दिख रहे लौह-मुख
हड्डी से भीषण सैनिक
जर्मन वे गाली देते बढ़
रक्त बहाते वे सैनिक

बम ऊपर से गिर फटते थे
और गोलियों में था वेग
मोरटार थीं आग उगलतीं
पर लड़ता था स्तालिनग्रेद

आर्टिलरी का चेतन अफ़सर
फ्युगनफ़िरोव बढ़ा आगे
फोन कर रहा था क्षण क्षण में
घेर रहा पीछे जाके

वोल्गा के गर्जन सी भीषण
दूरमार बन्दूकें भी
लम्बी लम्बी चोटें देतीं
रह रह ज्वालायें फेंकी

जादू का सा खेल कर रही
आर्टिलरी होकर पागल
ढाल बन गई थी पैदल की
उगल रही अंगार मचल

स्नेह-पाश में बद्ध रूस वह
शंका भय आनन्द अपार
भेद भींचतीं दो सेनाएं
पड़ी जर्मनों पर मिल मार

चली एक तलवार कि धड़ से
भिन्न हुआ ज्यों शीश अचेत
या घुन पीसेगा उंगली में
तड़प रहा था स्तालिनग्रेद

पर क्या महज झुकेंगे जर्मन
नहीं कभी वे दास रहे
अपने बल से रोम राज्य को
ढहा दिया था साहस से

वीर, वीर वे बड़े भयानक
आज किन्तु इस फासिस्टी
धोखे ने जनता भरमाई
जो वे लगते क़ातिल ही

अरे कौन है जो जनता से
किसी देश की घृणा करे
यह तो वर्गों के लालच हैं
जो जग में यह ज़ुल्म भरे

स्वयं जर्मनी में मानवता
लड़ती इन रण पशुओं से
जो अपनी कटु स्वार्थ अग्नि में
झोंक रहे सुख बधुओं के

दो पहाड़ टकराये भीषण
बिजली सी कड़की कुछ देर
अंधियारे ने भींचा जिसको
घोर शब्दमय स्तालिनग्रेद

चली गोलियाँ गिरे वीर फिर
दोनों ओर मरण की आग
गरजे रूसी काँपे जर्मन
उखड़ा साहस उठने भाग

'स्तालिनग्रेद' गूँज कहती थी
बन्दूकों की धांय निडर
गोलंदाज़ी गरज प्रतिध्वनि
करती—'ज़िन्दाबाद अमर'

और महानद वोल्गा थिरका
अन्धकार भी डरा उठा
नाज़ी रक्त बहा धरणी पर
जनता का अभिमान उठा

अब भी काम प्लैंट में होता
बमबारी के घुटने तोड़
जैसे श्रम की धारा उन्नत
चली तीर बन्धन झकझोर

मिटे! मिट गई रह रह सेना
नाज़ी बल की बढ़ी लपेट
वीरों को सलाम करता था
वीरभोग्य वह स्तालिनग्रेद

एक मास में जर्मन बल ने
किये एक सौ सत्रह वार
हमले लहरों से, जो टकरा
चट्टानों से बिखरे हार

एक सैन्य वह साइबीरियन
पापाणों सी खड़ी रही
झुकी किंतु फिर उठी और वह
लड़ती निर्भय अड़ी रही

एक बार बस एक दिवस में
तेइस हमले किये अटूट
टैंक और पैदल मिल आये
जैसे सब कर देंगे चूर

पर तेईसों हमले निष्फल
पड़े धूल में रोते थे
रुधिर मग्न सैनिक विश्रांत से
मृत्यु अंक में सोते थे

हलचल झुकती, शब्द रोकती
फिर भी होता था संग्राम
सहसा घोर नाद बौराया
गिरी अग्नि धारा अविराम

एक बार फिर टूटीं मिल कर
जर्मन सेनाएँ संपूर्ण
वायु, टैंक, पैदल, तोपों की
शक्ति उठी सब करने चूर्ण

डेढ़ किलोमीटर के ऊपर
सौ से अधिक डिवीज़न शक्ति
वार कर उठी थी अन्धी बन
लोमहर्षणा थी आसक्ति

ऐसा घोर शब्द होता था
जैसे केवल एक प्रहार
कानों में बस गूँज, प्रतिध्वनि
और नहीं मिलता था पार

घोर गहन गंभीर सिन्धु में
आया था भीषण तूफ़ान
अग्नि भयङ्कर—ज्यों सब तारे
टकराये गर्जित घमसान

फ़ासिस्टी राक्षस कंकालों
नरमुण्डों से सज्जित वेष
मानव पर मँडराता भूखा
त्रस्त क्रुद्ध था स्तालिनग्रेद

जर्मन, रूसी, सैन्य, नगर, पथ
अन्धकार, हथियार सभी
डूब गये उस प्रबल नाद में
प्रलय ! प्रलय ! की आग उठी

जैसे जग भर गरज रहा था
काँप रहा था अंधियाला
जिसको जला दिया करती थी
बम से गिर भीषण ज्वाला

जैसे वोल्गा बाढ़ बनी थी
उछल रही थी शेरों सी
जैसे ईंटें लुढ़क रहीं थीं
अन्धचाल में भेड़ों की

जैसे कोहक़ाफ़ फटता था
वह चिंघाड़ पहाड़ उठे
बिजली कड़की आँखें चौंधी
और डुबाती बाढ़ उठे

जैसे धरणी सौर चक्र में
घूम रही है भर कर वेग
हवा बवंडर सी दहलाती
भर भर देती स्तालिनग्रेद

सामूहिक चीत्कार उठे वे
सामूहिक हुँकार उठीं
और रूसियों की वह हिम्मत
आज मौत ललकार उठी

कौंगो के भीषण जंगल के
जलधर ज्यों थे कड़क उठे
धाराधार ध्वंस गिरता था
पर वे सैनिक गरज उठे

थहर उठी फ़ासिस्टी शक्ति वह
क्षणभर स्तब्ध रहे क्षणभर
अब भी मिलता है प्रत्युत्तर
क्या लड़ते हैं आज अमर ?

वह रूसी आँखें अङ्गारा
नहीं गीत या हास विलास
बर्बर को खदेड़ने डट कर
बने स्वयं वह सत्यानाश

भूल गये हैं स्नेह दया को
अब कठोरता का ही खेल
रक्त बना छाता नयनों में
क्रोध भरा है स्तालिनग्रेद

अमानुषिक बल मार थपेड़े
धमनी को निर्भय करता
जर्मन सेनाओं का लाया
क्षण भर आज प्रलय मिटता

एन्टीएयरक्राफ़्ट बन्दूकें
गिरा रहीं फ़ासिस्टी यान
उड़ते नगर गिरे धूँआ ले
धधक उठे अभिभूत थकान

अंधकार बस एक धनुष सा
भूमि बन गई एक कमान
तीर बन गई हैं बंदूकें
देखें अब है कौन समान

मुख से धुंआ निकल निकल कर
शीत वायु में हुआ विलीन
जैसे सैनिक ज्वालामुखि हैं
आज जलादें दुश्मन दीन

बने आज बंदूक स्वयं वे
और झपटने वाले शेर
जिनके नख दंतों पर निर्भय
वज्र बना है स्तालिनग्रेद

बारह घंटे बीते दिन के
बारह घंटे बीती रात
दिन औ' रात एक बम वर्षण
आते बह जाते अज्ञात

एक गया दिन, गया दूसरा
लगा पांचवा किंतु न शांति
जर्मन सेना संमुख उठती
आती थी पहाड़ सी भ्रांति

लोहा काट रहा था लोहा
बिजली जंगल पर गिर टूट
फाड़ रही थी चट्टानों को,
तड़पी महायुद्ध की भूख

कांप गये जर्मन हड्डी तक
फिर लड़ते हैं आँखें खोल
अभी अभी कहते थे लेकिन
क्यों न सुनाई पड़ते बोल

मुक्त हुए रूसी चीतों ने
शुरू किया ख़ूनी आखेट
त्राहि त्राहि से गुंजित था नभ,
धड़क रहा था स्तालिनग्रेद

कर्नल गर्टिव जिसके सिर के
केश पक गये थे सारे
झेले था पचास जाड़ों को
सर्द ख़ून जो कर जाते

सन् चौदह का महायुद्ध भी
जिसे नहीं पाया दहला
सन् सत्रह की लाल क्रान्ति भी
डरा न पाई या बहला

जिसको कभी न चिंता व्यापी
साम्राज्यवादी चालें सुन
हिटलर की बर्बरताएं भी
हिला नहीं पाईं पल क्षण

युवकों के भीषण साहस पर
वृद्ध हृदय भर आया था
लोहे की धारा पर पानी
आज उछल कर आया था

सेना है तो यही किंतु यह
सैनिक हैं कैसे दुर्भेद
सहन शक्ति लहरें लेती थीं
बच जायेगा स्तालिनग्रेद

एक सिपाही वीर कह उठा—
साथी कर्नल काफ़ी है
गर्म गर्म रोटी जो दिन में
दो बारी आ जाती है

किंतु हमें अब भूख नहीं है
लड़ने दो बस लड़ने दो
आज विजय दासी बन जाये
या फिर हमको मरने दो

मरण हमारा इस लोहे के
महानगर का जीवन है
शत्रु बादलों सी करि सेना
तो यह हरि का गर्जन है

शपथ लाज हो मानवता की
जो हम पर सन्देह किया
धन्य हुए फ़ासिस्ट कि जनता
के हाथों ने वार किया

गर्टिव की ममतामयि आँखें
आज स्नेह से हँसीं अखेद
खंड खंड होगा हर हमला
दुहराता था स्तालिनग्रेद

अरे कारख़ानों के संमुख
हैं कारीगर इञ्जिनियर
गड्ढे, खाई खोद रहे हैं
गोली चलती हैं सिर पर

दबे पाँव चलते हैं तत्पर
जैसे हिम पर फ़िसल रहे
जादू की सी नई खाइयाँ
खुदतीं, गर्टिव चकित रहे

और हर समय हमला करते
जर्मन रण में लीन हुए
असफलताओं से विक्षुब्ध हो
रुद्ध सर्प से दीन हुए

किन्तु योद्धा रूसी अपने
बारे में सब भूल चुके
एक ओर है नगर, सामने
शत्रु आ रहा—जान सके

और कि दुनिया इस साहस को
पलक न डाले रह रह देख
खुशियों से चिल्ला उठती है
खिल जाता है स्तालिनग्रेद

आज किन्तु है जन जन सैनिक
नहीं मृत्यु का किंचित भय
सभी उठा सकते हैं आयुध
हँस देते हैं देख प्रलय

इधर घायलों की आशाएँ
नर्सें फिर जीवित करतीं
अपना जीवन मोह छोड़ कर
स्पर्शों से चेतन करतीं

जब प्यासों की तृषित कराहें
वोल्गा बुला उठा करतीं
स्निग्ध करों से पानी देतीं
या नव ज्योति मधुर भरतीं

महा भयंकर रेगिस्ताँ में
एक प्यार के ओसिस सीं
करुणा का उज्ज्वल प्रकाश वह
फैलातीं तत्पर चलतीं

भयद गोलियों की बौछारें
हटा नहीं पातीं उनको
अरे घायलों को सहलातीं
निर्भय करती जन जन को

सिगनलर्लस् प्लैटून कमाण्डर
खेमित्स्की उस ढाल तले
बैठा उपन्यास पढ़ता है
जग भर में जब आग जले

कलोसोव बम स्फोट भयद से
दबा गले तक मिट्टी मे
आँख नचा निर्भय मुस्काता
देख स्पिरिन को जल्दी में

सुन्दरि क्लावा अविरत् तत्पर
टाइप कर रही है रह रह
तीन बार दब चुकी भूमि में
तीन बार निकली दुस्सह

और टाइप कर मोहित युवती
हँसती हस्ताक्षर लेती
लाल कपोलों पर वह निर्भय
मस्ती अंगराई लेती

रग रग में वीरता घुसी थी
भय क्या जीतेंगे यह खेल
इनको देख पुलक उठता है
लाल दुर्ग वह स्तालिनग्रेद

बीत गया सप्ताह तीसरा
जर्मन सेना ने भीषण
वार किया दलबल सज्जा कर
रक्तिम छाया में गर्जन

अस्सी घंटे बम बरसाये
अस्सी घंटे तोप चलीं
अस्सी घंटे मोरटार की
आग लगातीं होड़ चलीं

रात और दिन एक हो गये
एक बवंडर या आंधी
धूंआधार या धूलि उमड़ती
भयद कड़क या ज्वाला थी

नहीं कभी भी हुआ विश्व में
था ऐसा भीषण अभियान
हिटलर उन्मादी चिल्लाता
कहता—'ध्वंस करो अभिमान

आज बोल्शेविक कीड़ों को
कुचलूं और मसल दूंगा
मानवता का घृणित रोग यह
इस पर आग उगल दूंगा'

एक विकट सन्नाटा फिर से
कण कण को भट भेद गया
और हुआ फिर से कोलाहल
जो अणु अणु में फैल गया

हलके भारी टैंक बढ़ चले
मदिरा घूर्णित राइफिलमैन
पैदल सैनिक बड़े वेग से
टूट पड़े खूनी बेचैन

भूमि गगन सब एक कर दिये
और मिलाते से दोनों
आज बीच में भींच पीसने
रूसी बल को—बढ़ दोनों

तोड़ी प्लैंट सामने रक्खा
घुस आये भू कंपित कर
रेजीमेन्ट कमान्ड, डिवीज़न
से अलगाया था लड़ कर

किंतु बिना आज्ञा की नैया
आज डूबने नहीं चली
हर सैनिक अफ़सर था क्षण में
हर गिरती उठ उमड़ चली

थी फ़ौलाद बनी हर खाई
हर पिलबौक्स अभेद बना
हर राइफ़िलपिट दुर्ग बन गया
निर्भय मन में वेग ठना

सेनानायक बिना हिचक के
प्राइवेटोंवत लड़ते थे
चैमोव के संमुख दस हमले
लौटे टूट बिखरते थे

जिसकी गोली खत्म हो गई
टैंक कमान्डर पत्थर से
मार रहा है छिप कर रिपु को
पागल सा रण के रव से

'यह रूसी हटते हैं पीछे
नहीं मानते फिर भी हार
जभी विजय की श्वास भरें हम
तभी शत्रु कर उठते वार

मर जायेंगे तो भी अपना
नहीं झुकायेंगे यह शीश
हम हिटलर की शपथ नहीं अब
रहने देंगे कोई चीज़'

यहाँ इरादा कर बढ़ते हैं
जर्मन—जीतेंगे इस बार
पर रूसी जीवित न रहेंगे
यदि सत्ता है केवल हार

मिख़लेव पर फटा एक बम
कूद एक ने स्थान लिया
घंटों युद्ध हुआ धूंए में
सबने मरणोन्माद पिया

एक इंच भी नहीं हटेंगे
यह ही मन में आग लगी
एक क़दम बढ़ आय न दुश्मन
यह जीवन की साध लगी

जब तक तन में बूंद .खून की
वहाँ विजय मृगतृष्णा है
जीना है तो विजयी होकर
या फिर केवल मरना है

हैंड ग्रिनेड की रक्षा-चूड़ा
एक दाँत से खोल रहा
महामृत्यु की गाँठ आज वह
अपने मुंह से खोल रहा

पीछे वोल्गा संमुख जर्मन
आज देश की आन अड़ी
एक क़दम पीछे न हटेंगे
आज वीरता सान चढ़ी

मिख़लेव—मिट गये पिता भी
दीपक, अपने बीच रहे
नीप्रोपैत्रोवस्क बाँध से
सबके उर को सींच रहे

मरण हमारा स्वयं बाढ़ है
जो दुश्मन को डुबा डुबा
आज मिला देगी मिट्टी में
रिपु माताएं रुला रुला

आज मृत्यु से स्फूर्ति लहरती
और क्रोध भर आता है
मिख़लेव की बूंद बूंद सा
हर सैनिक हुँकारा है

मृत सोते थे, पर वे घायल
गरज रहे थे रक्तिम-वेष
कन्धे पर बन्दूक कि साथी
दुश्मन है या स्तालिनग्रेद

गिरने लगीं धधकतीं सी छत
सोठें टूटीं ईंट गिरीं
दीवारें कच्चे मटकों सी
चटकीं रह रह कर थहरीं

किन्तु हंस उठे सैनिक सहसा
भागा बाहर एक नहीं
अन्तिम बारी गोली कड़कीं
भीषण प्रतिध्वनि तड़क रहीं

एक विकट झोंका सा दहला
घर लड़खड़ कर बैठ गिरा
लपटों का जाला खंडहर पर
धूम उगलता जा गरजा

चूना दीवारों से झरता
ईंट ईंट थीं बोल रहीं
वज्रों के विराट कोपों को
डाकू बन कर खोल रहीं

रूपित गालों पर निर्भयता
पाषाणों सी बनी कठोर
भरती श्वासों में निष्ठुरता
हाथों में कर उठती रोर

जिन्दाबाद लिख चुके मर कर
वे मृत्युञ्जय आज अखेद
आज मृत्यु के पथ पर अपने
.खूँ से लिखते स्तालिनग्रेद

और शान्ति की बीती छलना
भग्न अनाथिनि पड़ी रही
बूंद बूंद कर रुधिर धार वह
रुक रुक कर थी टपक रही

वह वोल्कोव नर्स से कहता—
'नगरी हो अभिभूत सतत ?
आह बना मत कायर मुझको
अपने सुख में बद्ध निरत'

घर थे आज पड़े खंडहर से
कभी यहाँ भी यौवन था
किन्तु आज जर्जर मुख विकृत
करता नीरव क्रन्दन था

वह भीषण प्रहार चिल्लाते
धधक उठे अणु अणु निर्बाध
प्रबल शक्ति का भयद प्रकंपन
भरता था रह रह उन्माद

उमड़ टैंक आते थे हुंकृत
आग उगलते निर्मम से
मानों मोटी खालों वाले
पशु आते थे दुर्दम से

धधकी ज्वाला प्रलय पताका
कुछ झुलसे बाकी भागे
और अनेकों तड़क रहे थे
देख रहे खंडहर जागे

सन्ध्या बीत चली तम ने था
घूंघट सा मुख घेर लिया
जर्मन यानों ने सहसा ही
फिर से नभ को घेर लिया

बम गिरने से पहिले रह रह
ज्योतिदाय आ गिरते थे
रात दमक उठती सहसा ही
खंडहर गिरते दिखते थे

आज उमड़ते से यह जर्मन
कहते—'जीता स्तालिनग्रेद
युद्ध कारखानों का बाकी
किन्तु नहीं होगी अब देर

यह जो घर्षण शेष रहा है
रोगी है छटपटा रहा
महामृत्यु का वेग-अंग है
जिसके रह रह गला रहा

आर्य्यों के भीषण निनाद से
काँप उठेगा अब संसार'
हिटलर की साम्राज्यी तृष्णा
जल जल उठती थी हुंकार

मुखरित कलरव उमगी आँखें
बर्लिन में नव हास्य बिछा
वैभव के उच्छृंखल मद में
देख रहीं जग भर गिरता

हिटलर अपने रेखटाग से
कहता था वहलाता सा
जिसका हर अक्षर आर्य्यों के
जन जन को बहलाता था—

अभय रहो बस हम जीतेंगे
जग भर अपना दास रहे
अपनी सत्ता शेष जमाने
जर्मन जग के वार सहे ?

यह ईश्वर के शत्रु नीचतम
रूसी आज बनें बन्दी
आर्य्य न्याय की भूले सिरपर
फिर तलवार चमक नंगी

जो प्रासाद सहस्रों वर्षों
वैभव नाद गुंजायेंगे
उनकी अपने पूत रक्त से
हम ही नींव जमायेंगे

वोल्गा की भीषण धारा पर
बजरा एक चला जाता
लहू झलकता है लहरों पर
ऊपर तक चढ़ता आता

सांस खींच कर झाग उगलता
अंगारों को खाता है
ज्यों घायल विषधर मतवाला
पटक पटक फन आता है

धूमिल अंधियारा कंपित सा
जल की थिरकन में भरता
महानगर में रण का गर्जन
अपना साहस था उठता

आग और पानी में कोई
भेद न लगता था मन को
उधर दहाड़ा करतीं तोपें
सोते थे सैनिक क्षण को

नींद जागरण की दासी बन
अपना हिस्सा चाह रही
दीर्घकाय नाविक जगते हैं
अरमानों की थाह नहीं

आज मरण फिर छाँह विजय की
जीवन के उपचार सभी
कर्त्तव्यों की दृढ़ थाती पर
मानवता की लाज बची

यह लोहा है झुक न सकेगा
कट न सकेगा जीतेगा
धारा का वह अन्धड़ झुक कर
अन्त पराजित बीतेगा

रात और दिन स्फोट नाद से
आते हैं बिलमाते हैं
जीवन कितनी क़ीमत रखता
वीर जानते—गाते हैं

यह धड़कन यह घर का गिरना
मरण और जीवन की आग
अरे शान्ति कहलाती है सब
क्षण क्षण व्याकुल जलते भाग

सैनिक पाते समय तनिक भी
गाते अपने प्यारे गीत
जिनमें भीषण स्फूर्ति मचलती
झाँका करता मुग्ध अतीत

वह कठोर स्वर ऊपर उठता
फिर गिरता है मंडराता
अरे खंडहरों पर क्षण भर को
फिर से वैभव है छाता

यह यूरीपिडीज़ का गाना
ईंट ईंट भी बोलेगी
पर हिटलर की भीषण तृष्णा
अपना वार न रोकेगी

आज रूस में पैवलोव का
घर दीपक सा जलता है
अरे शहीदों के मज़ार पर
नवजीवन सा जगता है

जन जन श्रद्धा से लड़ता है
जन जन पितृभूमि का भक्त
नये विश्व का स्वप्न खेलता
आँखों में भर लाता रक्त

जिनमें सोये सुख की निंदिया
आज वहीं पर मृत्यु मिली
पाल खोल कर तूफ़ानों में
डगमग करती नाव चली

अरे संघमित्रा ज्यों जग में
शान्ति जगाने जाती है
करुणा दीपक ज्योतित करने
लहरों पर अकुलाती है

१२

वोल्गा के उस पार पड़े थे
श्वास छोड़ते से मैदान
भूमि चूर होकर करती थी
ट्रक की लयगति पर जयगान

बिजली के सूने खम्भों पर
आ बैठे थे खग धूमिल
गगन उदासी में विराग ले
देख रहा उनको बोझिल

चौकन्ने से ऊंट देखते
नभ में विकल ललाई थी
धूम धूल की उठती घुमड़न
वायु सघन कर आई थी

काले काले भूरे भूरे—
झोंके अब लहराते थे
चलती ट्रक की घहर रोर में
नवल स्फूर्ति भर जाते थे

किन्तु मोटरें चलतीं जातीं
धधक रहे उनके इंजिन
ब्रेक दबे—पानी पी सैनिक
करते रह रह भूख शमन

वे दक्षिण की ओर चले थे
धूलि झाड़ते कपड़ों की
जो उठती आती घिरती सी
आहें बन कर सड़कों की

पल पल आज विलंबित लगता
मन कितना उन्माद भरा
जनरल रोडिम्त्सेव मौन हो
इस गति को देख था रहा

जर्मन स्तालिनग्रेद नगर का
द्वार तोड़ कर घुसे हुए
आज घेरना उनको निश्चय
यह अरमाँ ही जगे हुए

दक्षिण पश्चिम सड़क चली मुड़
तरु तरु धीरे हिलते थे
चमकीले पत्ते त्वरता का
इंगित उनको देते थे

वोल्गा पर घनघोर मेघ सा
धूंआ ऐंठा चढ़ता था
महाध्वंस की छाया सा वह
जीवित ग्रसने बढ़ता था

महानगर खंडहर दिखता था
रेल बड़ी ज्यों पटरी से
गिर कर चूर हुआ करती है
धूंए में जल बिखरी रे

और कि मेसर्शमिट उड़ते थे
पीली आँधीवत् नभ में
डाइव-बॉम्बर तोड़ रहे थे
तट को वोल्गा के क्षण में

वोल्गा सागर सी लहराती
इनके चरणों को धोती
महानगर के फूत्कारों सी
उठा उठा फन को रोती

आतुर सैनिक ले सामग्री
त्वरता से झट बैठ गये
और भार बढ़ते, नावों के
घन से जल भी फैल गये

टगबोटों से उठी पुकारें
नाव चलीं बजरे दौड़े
तट पीछे छूटा जाता था
लहरों के कंपन छोड़े

भीषण बम जल में गिरते थे
जल नभ को रह रह छूता
फिर गिरता था बजरे कंपते
पर बढ़ता बेड़ा जूझा

मल्लाहों की तत्पर पेशी
लोहे सी कठोर लगतीं
पतवारों की ठोकर खाकर
लहरें कटतीं सीं हटतीं

फिर फिर लहरें घिर घिर आतीं
नावों को थीं चूम रहीं
बम से आहत हो चिल्लातीं
घबरातीं सीं घूम रहीं

पर सैकड़ों प्रबल मन सैनिक
अति कठोर थे देख रहे
मन की आँधी घुमड़ रही थी
आशाएँ थे टेक रहे

जनरल रोडिम्त्सेव होंठ को
कुछ टेढ़ा कर तकता था
मूक नयन में जल कटते ही
नूतन बल सा बढ़ता था

ऊपर ज्वाला नीचे लहरें
और सामने नाश खड़ा
आहुतियों को बुला रहा सा
संमुख स्फोटित तीर पड़ा

काँपी लहरें बजरे जल के
बीच पहुँच कर रेंग रहे
पीछे के द्रुत गति से चलते
जो आशा से खेल रहे

धूप स्वच्छ नभ को तापित कर
चञ्चल जल से खेल रही
आतुरता का नर्त्तन करती
यह आकुलता झेल रही

'डाईव बॉम्बर !' चिल्लाया झट
कोई, सब सन्नद्ध हुए
उठे स्तम्भ से जल के ऊपर
बजरों के चल छोर हुए

एक स्फोट का नाद भयङ्कर
फिर जल में कुछ अङ्गारे
छितराते थे टुकड़े तापित
घायल कर सैनिक सारे

बम फटते थे अन्तराल में
कुछ लहरों पर फटते थे
पानी के विश्वस्त हृदय में
हलचल करते घुसते थे

झाग धुंए में नीला उठता
कहीं भंवर पड़ जाते थे
टुकड़े जो नावों पर लगते
भीषण क्रोध जगाते थे

एक भयङ्कर भीषण शल ने
एक विकल लघु नौका पर
पूर्ण वेग भर गिर कर गर्जित
किया शक्ति अणु अणु जर्जर

फटी बीच से चूर हो गई
आग लग गई धूम चला
चीत्कारों की घुमड़न बन कर
कर्कश क्रन्दन घूम चला

कूदे सैनिक जल में सहसा
फिर जल पर कन्टोप दिखे
एक लाश के पास तैरते
जैसे कछुए घेर रहे

रोडिम्त्सेव अरे यौवन में
मार रहा था हिल्लोरें
लड़ा कीव पर, स्टालिंका पर
और ले चुका था चोटें

भीषण था गांभीर्य्य नयन में
अधरों पर स्मित उत्कट थी
पतवारों की दृढ़ता लेकर
उर में गति की सुलगन थी

सैनिक अपने अंतिम पल तक
वही डिवीजन चाह रहे
मन सैनिक हो चेतन जाग्रत
फिर सागर की थाह रहे

रात घोर थी जब तट पर वे
नावें जाकर टकराईं
सेना के कोलाहल की चिर
प्रतिध्वनि लहरें भर लाईं

धधक रहा था नगर भयंकर
पल भर का विश्राम नहीं
अंधकार में पथ खोये थे
किंतु वेग रुकता न कहीं

तीन भाग में सैन्य विभाजित—
गोलंदाज़ी तीर रुकी
एक बीच में डटी और वह
प्रबल तीसरी चीर चली

किंतु सभी थे एक—चल रहा
तीनों में अंतर्संबंध
अरे शत्रु की हार—सभी के
उर में लक्ष्य रहा निर्द्वन्द

सड़कों पर छिप छिप कर चलते
जर्मन तोपें छीन रहे
बोल्गा तट से ज्वाला फेंके
रिपु को करते दीन बड़े

एक डिवीजन जो वोल्गा के
उस तट पर था घिरता था
जिसका बल जर्मन सेना के
महा वेग से बिखरा था

रोडिम्त्सेव उमग चिल्लाया—
बढ़ो सिंह से गर्जन कर—
सचमुच भंकृति में सब झपटे
कायरता का मर्दन कर

तोपें गरजीं, बोलीं सहसा
बंदूकों की भीड़ें भी
बाज़ों की सम्मिलित झपट वह
जैसे सब को चीरेंगी

अगणित सैनिक दाँत भींच कर
दौड़े पृथ्वी कांप उठी
हुंकारों की भीषण प्रतिध्वनि
महा गगन को नाप उठी

वह घर चमके—वोल्गा हँसदी
स्टैपी फर फर फहराये
अणु अणु–'लड़ो हमारे हित ही'
यह रह रह कर चिल्लाये

थंडर कड़के, बिजली कौंधी
धूम धड़ाके भय भीषण
एक कड़क मारे शस्त्रों की
करती थी रह रह गर्जन

डूब रहा था रवि वोल्गा पर
जैसे रक्त बहा जाता
घायल सैनिक डूबा झुक कर
मौन कराह उठा जाता

वोल्गा की नावें भी गरजीं
जैसे चिल्लाये घड़ियाल
स्तालिनग्रेद नगर भी गरजा
गरजा अणु अणु मुक्त कराल

गगन क्षुब्ध होकर हुंकारा
जैसे बादल कड़क उठे
यह सम्मिलित वाहिनी टूटी
गोले गिर कर भड़क उठे

रवि जाता था—लाल रश्मियाँ
घर घर पर थीं खिसल रहीं
कहीं अग्नि की ज्वालाओं में
कहीं धूम में उलझ रहीं

तीनों गार्ड अलग लड़ते थे
अब येलिन का आगे था
मध्य काटता जो जर्मन के
फन्दे वाले धागे का

वोल्गा तट पर रूसी अब भी
नहीं धकेले गये कभी
डटे और बढ़ चले प्रबल रव
शत्रु रहा निश्चिंत अभी

येलिन के निर्भय वीरों ने
अन्धड़ सी भीषण ठोकर
मार—बड़े घर दो जीते थे
भागे जो जर्मन खोकर

और एक घर जिसमें जर्मन
प्रबल शक्ति से बैठ गये
रूसी सैपर लगे घेरने
और पास में फैल गये

जर्मन स्फोट मचाते भीषण
पर सैपर तत्पर घुसने
और भयद बारूद बिछाकर
पीछे को त्वर गति हटते

रुके पास में घोर शब्द कर
पूरा घर ऊपर लपका
ज्यों जादू का किला उड़ा हो
खंड खंड हो फिर बिखरा

वह भारी दीवारें गिरतीं
एक लीक सी बँधी वहाँ
ज्यों नभ से तारा टूटा हो
जर्मन भागें ? किन्तु कहाँ ?

उधर एक टीला जीता था
उन दो सैन्यों ने लड़ मिल
यह था प्राण नगर का कोमल
स्मृतियों का सुपना बोझिल

शिशुओं की कोमल किलकारी
यौवन के चुम्बन गूँजे
अरे देखते वह कलरव ही
वोल्गा तट कल तक ऊँचे

स्तब्ध जागता देख रहा था
यह टीला नगरी क्षण क्षण
जिसे जीत कर मुस्काता था
जर्मन जनरल होइट सुमन

टीला सचमुच लाल होगया
दीपक बुझे अनेकों ही
लोहे से अणु अणु छिदवा कर
तड़प दे गया मेघों की

वह प्राइवेट केन्तिया निर्भय
जर्मन झण्डा फाड़ उठा—
कुचला फ़ासिस्टी घमंड वह
जनता का बल गाड़ उठा

पहला हमला हाथ रहा था
तीनों सैन्य मिलीं आ कर
एक विकट स्थिति जीत चुके थे
जर्मन सेना बिखरा कर

टीला लौह वज्र—जर्जर भी
रह रह प्रेम बढ़ाता था
ऊपर खड़े भटों को रह रह
स्तालिनग्रेद दिखाता था

अबके जर्मन टैंक बढ़ चले
डाईव बॉम्बर उमड़ चले
नीचे से सारे आयुध ले
रूसी दल भी घुमड़ चले

आज विकट गर्जन यह भीषण
बन्दूकों का वज्र निनाद
कल बरबत की लय गुंजित थी
आज टैंक की प्रबल दहाड़

ट्रैक्टर मोटर वोल्गा नगरी
महानाद में डूब गये
महानाद ही बनी स्तब्धता
प्रबल नाद से ऊब गये

बीत गये घण्टे दिन रातें
हफ्ते फिर भी रोक नहीं
इस विनाश की आँधी को थी
कोई पल भर टोक नहीं

चारों ओर अन्धेरा सा था
जीवन निर्बल भूल रहा
और मृत्यु का भयद खड्ग वह
सबके ऊपर झूल रहा

आज न वे बालक हँसते हैं
आज न मस्ती की घड़ियाँ
आज न आँखों में आँखों को
डाल हो रही हैं बतियाँ

आज न बूढ़ी अम्मा बैठी
लोरी गाती दीख रहा
आज न कोई नवयुवकों के
भुजदण्डों पर रीझ रहा

आज न खेतों में गीतों की
सामूहिक गुंजार उठी
आज न वोल्गा की धारा पर
भूमी सी झङ्कार उठी

सड़कों की वह हलचल खोई
आज न विद्युत ज्योति जली
आज शांति संस्कृति की उन्नति
ध्वंसराग ने गूंज छली

रण की भीषण आँखें जगमग
मानवता पर क्रोध लिये
देख रहीं थीं आग उगलतीं
गति पर थीं प्रतिरोध लिये

डिवीजनल हेडक्वार्टर पूरा
पृथ्वी के अन्दर रहता
जैसे खान खोद ली थी जो
सीलन का आलम रहता

पत्थर सोठों से ढंक कर वह
जनरल रोडिम्त्सेव वहाँ
देख रहा था नक्शे अपने
किसको भेजे आज कहाँ

धुंधला दीपक उस सीलन में
काँपा करता डरता सा
भयद गिरा करती हिलतीं सी
दीवारों पर चल छाया

सिगरेट पीते निस्तब्धा में
काम चल रहा बिना रुके
काँप रही थीं सब दीवारें
बम की धमधम से डरके

एक कड़ी मुट्ठी सा यह दल
रोक जर्मन सेना को
चाह रहा जो आज डुबादे
नद में रूसी सेना को

एक बार जर्मन घुस आये
इस गढ़ के रस्ते पर
हैंड ग्रिनेड घुमाकर फेंकी
धूंआ उमड़ा झट आतुर

लड़ते थे सब, गिर मरते थे,
गिरते पत्थर, बम फटते
महास्फूर्ति से भर भिड़ते थे
और मरण पथ पर चलते

जनरल रोडिम्त्सेव न चौंका
धीरे धीरे बोल उठा—
अरे शत्रु का वेग हटा कर
दो शब्दों में तोल उठा—

वोल्गा कुछ मर्मर करती थी
उठो देश के लिये लड़ो
यह फ़ासिस्ट रक्त का प्यासा
पग पग पर साहसी अड़ो

अरे यही तो था जो उत्तर
से दक्षिण तक झंकृति थी
साम्यवाद के विजय नाद की
मानवता को स्वीकृति थी

जाग्रत चेतन गरज रहे हैं
सब मिल कर हैं एक हुए
अरे एक है ध्येय सभी का
इस पथ पर सब एक हुए

लाल किले की झंकृति गूंजी
हँसती जग की आशा है
साम्राज्यों पर जन प्रहार का
अस्त्र घिरा ही आता है

रात हो गई, घोर रात ने
अब पलकों को मींच लिया
और वासना सा बढ़ता तम
अपने उर से भींच लिया

भरती थी फूत्कार वोल्गा
तड़प रही थी विषधर सी
तीर खड़ी तरु पांति ठूंठ सी
जलती रह रह जगमग सी

नभ से अंगारे गिरते थे
डालों पर अटका करते
वोल्गा में प्रतिबिंब देखते
रंग विकल बदला करते

घायल लहरें आर्त्तनाद कर
उठतीं चिलबिल करतीं थीं
पीली हरी रजत झिलमिल कर
झट अंगारे प्रसतीं थीं

वह बैंजनी और नीली सी
बम ज्वाला जल पर गिरती,
महाक्रोध से गरज रहे थे
रूसी यान हिला धरती

उनके पीछे जर्मन 'ए, ए,
बैटरियों' में से चलती
ज्वालाओं की बाढ़ चली जो
ताक ताक कर थी घिरती

रूसी बमभारों की उगलन
नीचे जर्मन मशीनगन
आग धधकती थी भीषणतम
छाती जाती थी झुलसन

दाँया तीर बमों से हिलता
घर दीवार भूमि आकाश
और कारखानों—अणु अणु पर
ज्वालाओं का भैरव श्वास

वही गूंज थी ध्वंस विनाशिनि
किन्तु हृदय में साहस था
आज देश के लिये प्रलय में
भाग्य बना जन जन उठता

घोर प्रबल विध्वंस प्रतिध्वनि
भी विनाश का ताण्डव थी
ज्वालाएं जलतीं—सब जलते
पुनरावर्त्तिनि खांडव सी

धधक रही थी सारी दुनिया
केवल वोल्गा रोती थी
झुलस रही जिसकी मृदु देही
आग रक्त सी खोती थी

किन्तु प्रबल लोहे से रूसी
खूनी रिपु को झेल उठे
बूंद बूंद से सागर बन कर
रिपु को पीछे ठेल उठे

यह वर्गों का ही लालच है
जो फिर फिर होते हैं युद्ध
अपने घर का ध्वंस देख कर
कौन नहीं होता है क्रुद्ध

हम सब एक और भाई हैं
शत्रु हमारा है फासिस्ट
कभी नहीं हम झुक पायेंगे
चाहे महाध्वंस की वृष्टि

नहीं एक घर नहीं इमारत
फिर भी भूमि हमारी है
घुटनों चले यहीं खेले हम
पितृभूमि यह प्यारी है

हम मजदूर किसान उठे हैं
पूंजीवादी राज नहीं
अब न रह सकेंगे हम उसमें
जनता पर हो पाश नहीं

आज देश का बच्चा बच्चा
सैनिक बन कर गरजा है
अपना है, जो कुछ अपना है
अपने ख़ूँ से सिरजा है

हमें मिटा देनी दुनिया से
यह ख़ूँरेज़ी नादानी
सचमुच आज रक्त से लिखदी
अमर कथा यह दीवानी

१३

नभ में यू-२ यान उड़ रहा
घरर घरर कर निर्भय सा
नीचे डौन प्रान्त का स्टैपी
करता रह रह मर्मर सा

जर्मन सेनाएँ सज्जित सी
स्टैपी सड़कों पर धीरे
रेंग रही सी दीख रहीं थीं
घेर रहीं नगरी धीरे

ये सैनिक जो बन पिशाच से
रक्त मांस के प्यासे हैं
शान्ति और मानवता में अब
रह रह आग लगाते हैं

संमुख स्तालिनग्रेद खड़ा है
जिसके पीछे वोल्गा है
धक्का देकर आज डुबाने
बढ़ते, अणु अणु डोला है

लम्बा फ्रन्ट पड़ा था फैला
नभ में यू-२ यान चला
धूँआ स्टैपी से उठ ऊपर
महा तिमिर सा फैल चला

टैंकों के चलने से कुचली
भूमि विताड़ित रौंदी सी
बम गिरते ही भयद लहर बन
उठती गिर गिर चौंकी सी

चारों ओर गोलियाँ चलतीं
नभ में अंधी सी उड़तीं
यानों के पंखों पर टकरा
अट्टाहास मचा उठतीं

यू-२ यान मगर निर्भय है
नक्शे पर है चिह्न लगा
वह चुइकोफ़ अमर दृढ़ता से
नीचे रह रह देख रहा

नगर जल रहा था गिरते घर
मानों भयद कराहें थीं
रिपु सेना की गोलीं चलतीं
रोक रहीं सब राहें थीं

पाइलट मौन नयन से नीचे
कभी कभी तक लेता था
और दहाड़ रहे यू-२ को
वायु लहर में खेता था

नगर उजाड़ पड़ा था लेकिन
मन सेना के उठे हुए
अरे उसी की छाया बन कर
ये विमान थे उड़े हुए

कभी कभी पृथ्वी पर खिसलीं
छायाएँ हैं भाग रहीं
भग्न घरों पर बह बह जातीं
ज्वालाओं को चूम चलीं

उस बासठवीं सेना का वह
स्टाफ़ जमा था चेतन सा
एक पहाड़ी पर स्थिति, नीचे
महा नगर समवेदन सा

दीख रहा था नगर वहाँ से
जैसे चरणों पर लुढ़का
रोता था चीत्कार मचाता
सहसा कभी कभी कड़का

ईंट ईंट मैदान हो गई
लहर लहर थी पाश नहीं
खौल रहा वोल्गा का पानी
यह भय जाग्रति नाश बनी

पत्थर तोड़ सड़क पर सहसा
खाई खोद छिपे सैनिक
'एक इंच है, एक बूंद है'
गरज उठे निर्भय सैनिक

क़त्लेआम मच जाय नगर में
दुश्मन का मिट जाये नाम
बासठवीं सेना का डर है
याद रही है भोर न शाम

ज़ारित्सिन के वृद्ध साहसी
अवशेषों का आशीर्वाद
नये रक्त में स्फूर्ति भर रहा
भरता था उर उर में आग

सेना कौंसिल में बोला था
वह चुइकोफ गरजता सा
'ईंट ईंट सा खड़ा रहेगा
जन जन अपनी सेना का'

उस गर्जन की प्रतिध्वनि से हो
कांप उठा था लपटों में
भग्न पड़ा वह महानगर हिल
जाग्रति भरता लहरों में

उन बच्चों का खून! क़सम है
जो फासिस्टों ने मारे
उन खेतों, घर, नगर, जहाज़ों
उन स्टेशन, नहरों—मारे

क़सम सभी की आज सोवियत
संस्कृति पर दुश्मन आया
और गुलामी फैलाने को
फिर से ज्वर विषमय आया

बगलों पर ख़ूनी दुश्मन है
बढ़ता ही आता क्षण क्षण
लहरों के प्रचंड धक्कों से
झुकी नीर की घास विजन

पर फिर उठती है साहस भर
फिर फिर है झुकती जाती
कोई रक्षा कर न सकेगा
यही निराशा घिर आती

वह हिटलर फिर से मुस्काया
यूरुप में फिर तम छाया
झोंके में लौ हिल कांपी थी
तम—अब आया, अब आया

क्या यह हड्डी चटक उठेगी
जिन पर आज़ादी निर्भर
और बदन से खून बह रहा
जैसे गिरते थे निर्झर

सांस रोक दुनिया तकती थी
क्या यह तारा डूबेगा
टूट गये सब पोत मगर क्या
यह जहाज़ भी टूटेगा?

नीप्रोपैत्रोवस्क टूट कर
भीषण बाढ़ें लाया था
क्या यह सेना गिर जायेगी
फिर विनाश ही छाया सा

'नहीं नहीं' सुन पड़ी अचानक
और कमान्डर भारी स्वर
बोल उठा—'इस ठौर खड़ी हों
अपनी सेनायें जाकर'

सघन बाढ़ थी वहाँ टैंक की
नभ में उड़ते यान रहे
जैसे आँधी पहले उमस
सब पर घुमड़े और कंपे

एक ओर घूमा बासठवीं
सेना का फिर चिन्ह न हो
और जर्मनों के स्वर उठते
'रूसी ! नम्बर शीघ्र कहो'

बाईं बगलों के वे सैनिक
नद पर चले, रुके तट पर
और बिलीन हुए आगे जा
कुछ न दिखा केवल खंडहर

उनके पीछे घन निस्तब्धा
में झुक पूरी सैन्य चली
खंडहर और भग्न पंथों पर
धीरे धीरे रेंग चली

वोल्गा औ' जर्मन गोलों के
बीच आ चुकी थी सेना
मन में सब के घोर क्रोध था
कहता अब लेना लेना

भोर हुई फिर जर्मन टूटे
अबके बिल्कुल सत्यानाश
करने बासठवीं सेना का
रुद्ध हो चले शंकित श्वास

बाईं बगलों पर प्रहार कर
गार्ड भयानक गरज उठे
जिनसे बिखरे जर्मन सहसा
राह छोड़ते लरज उठे

धरती खिसक गई नीचे से
या पहाड़ आ टूटा था
मार मार की भीषण भयदा
प्रतिध्वनि में सब डूबा था

भाग चले रिपु रक्षागृह को
हमला चकनाचूर हुआ
गिरी वेग से धार, तड़प कर
झरना झरना विकल हुआ

और कड़ी पृथ्वी पहले से
कड़ी लगी धीरे उठने
जर्मन साहस पिटा अचानक
अपने आप लगा घटने

दिन दिन वेग किंतु बढ़ता था
जर्मन करते थे अपमान
सोलह सोलह घंटे चलतीं
मशीनगन लड़खड़ अविराम

रे तेरह सहस्र मुख से जब
लाखों गोली चलतीं थीं
रक्त रक्त की बहती धारा
पृथ्वी दलदल लगती थी

डेढ़ हज़ार यान नित्य ही
ताक ताक गोले बरसा
छार छार कर रहे भूमि का
इंच इंच धूंआ उठता

वह चालीस हज़ार गिरे बम
छः हज़ार टन लोहा था
जिसने स्तालिनग्रेद नगर की
नींवों तक को तोड़ा था

पर बासठवीं सेना फिर भी
सीना खोले खड़ी रही
लुढ़क गया सैनिक पर उंगली
घोड़े पर ही जड़ी रही

नाइकन जिसने अभी कदम ही
रखा था यौवन पथ पर
एक अकेला ही सीढ़ी पर
लड़ता बीसों से डट कर

कोई भाग रहा था ऊपर
सीढ़ी पर चढ़ते गिरते
हैंडग्रिनेड फेंकते निर्भय
प्राणों से खेला करते

बीत गया दिन, रात आ गई
सोलह घण्टे तक अविराम
युद्ध खंडहरों पर होता था
अरे युद्ध ही था विश्राम

वैसीली जैत्सेव तड़पता
गरजा भेद उठा रण को
मीलों दूर वही स्वर जाकर
पड़ा सुनाई स्तालिन को—

लिखा हुआ था—साथी स्तालिन
वोल्गा के उस पार कहीं
चप्पा भर भी इस पृथ्वी का
आज हमारी लाज नहीं

जर्मन यानों से कागज़ थे
गिरते मिथ्या भय लाते
पर सच था—सेना घिर आई
कोई राह न थी आगे

राह खुली पीछे वोल्गा थी
जिस पर गोली चलती थी
अंगारों की बाढ़ें आतीं
आज हवा को छलती थी

जर्मन तोपें ऊंची बैठीं
खड़का पत्ता, धांय उड़ा
मोरटार औ' ट्रेंच गनों का
महाक्रोध उस ओर मुड़ा

बिंदु बिंदु अंकित गोली से
इंगित की दासी बन कर
मुख खोले बन्दूकें तकतीं
आज मरण प्रहरी बन कर

चीड़ लिये सैपर आते थे
वोल्गा की उस धारा पर
जिसका पानी महाशीत में
भाप दे उठा था कातर

खंडहर इतने—टैंक रुक गये
हैंड ग्रिनेड थीं या पत्थर
दस दस गज़ पर शव गिरते थे
लोहा तड़क रहा सब पर

भोर हुई निर्मल अंधियारा
काँपा धीरे बिलमाया
एक बड़ा बेड़ा आकर के
नगर तीर से टकराया

पानी के हाथों पर चल कर
मन की अमर उमङ्ग बना
बह आया था और रुका था
बन कर एक अमर सुपना

जर्जर था हर भाग भग्न सा
क्षत विक्षत घायल सैनिक
पड़े हुए थे उस पर मूर्छित
साहस पर जीते सैनिक

एक बचा जीवित बोला वह
आँख मुंदी थी, क्षत काया
'यह वोल्गा का कौन किनारा
बाँया है या है दाँया ?'

'दाँया !' एक पुकार उठी—सुन
एक गई स्मिति मुंह पर खेल
बुझी दीप की लौ टिमटिम कर
खड़ा रहा पर स्तालिनग्रेद

यह वोल्गा है ख़ून हमारा
बहता है जो नस नस में
इसका पानी प्राण हमारा
व्याप रहा है रग रग में

यह लहरें हैं नहीं—बल्कि है
अपनी उन्नति की गति ही
चूम किनारों को बहती है
आशाओं की चिर रति ही

मानवता की मर्यादा यह
अरे पूर्वजों की है आन
आज क्रान्ति नेतृत्व मिला है
जीना है लेकर अभिमान

युग युग की पुकार मानव की
आज हमारा साहस है
कम्यूनिस्त हैं हम न कभी भी
झुकती अपनी ताकत है

सुन यह गीत महान् महानद
वोल्गा में था ज्वार अखेद
जल में छाया डाल हंस उठा
तब धीरे से स्तालिनग्रेद

टूटे कवच भग्न थे आयुध
ईंटों का अभिशाप जमा
बासठवीं सेना का उल्टा
भीषण हमला नहीं थमा

क्रुद्ध हुई जर्मन भीषणता
अपने आप पुकार उठी
महामरण की लालिम छलना
हर घायल ललकार उठी

चौदह अक्टूबर को सहसा
सब भीषणता दुबक गई
थर्मापाली पानीपत की
शान लजा कर सिमट गई

फ़ासिस्टी बल आया लेकर
अपना अद्‌भुत रण कौशल
सीज़र की सेनाओं सा जो
सदा विजयमय उछृङ्खल

खंडहर घेरे, घर घर घेरे
घेरा पथ, वोल्गा डाटी
और गगन में अट्टहास कर
प्रबल पिपासा आ नाची

वह ढाई सहस्र भीषणतम
यान गगन को भेद उड़े
रूसी सेना को विलक्ष्यकर
ताक ताक कर घेर उड़े

वायु भयद विक्षुब्ध हो गई
खलबल पड़ती झोंकों में
शीशे चटक चटक गिरते हैं
धड़कन के उन शोरों में

ऊंची ऊंची ठौर लुढ़कतीं
उन पर से गन ढहा रहीं
कमान्डरों के स्थान ढंक गये
उड़ उड़ मिट्टी दबा रहीं

पृथ्वी हिलती थी गर्जन में
जैसे नाव डगमगाती
लहरों में तूफ़ाँ में टकरा
पालें हैं फटतीं जातीं

प्राण कंठ में समा गये थे
खाई में सैनिक लुढ़के
शत्रु यान 'गायक' रव भरते
लाखों बम फट फट तड़के

मिट्टी उठती, जैसे नभ से
केवल मिट्टी बरस रही
जो अंगारों सी दहकाती
अणु अणु को है झुलस रही

वोल्गा की भीषण लहरों ने
तट पर हमला बोला था
एक लबालब बाढ़ डुबाती
जल ने बंधन खोला था

प्रबल भड़ाके सुनकर लहरों
में उन्माद भरा आता
धूंआधार में उनका कंपन
शक्ति अपरिमित लाता था

सहसा वोल्गा पर थी ज्वाला
फैला भयद उजाला सा
आग जल रही थी पानी पर
लपटों का भय जाला था

महाप्रलय के जलप्लावन पर
बिजली कड़की और जली
भीषण लपटों की धड़कन ले
जल पर जलती उठी रही

ईंधन पर बम फटे भयद वे
खाई, सेना, हेडक्वाटर
भीतर बाहर अणु अणु भेदे
जैसे ज्वाला के निर्झर

जलता तेल खौलता निर्मम
जो झुलसाता जलता था
ऊष्मा, धूम, ज्वाल ही थे सब
इनका भय रव गरजा था

स्टाफ ख़ून से नहा रहे थे
अफ़सर उठते थे गिर गिर
पर वह युद्ध अरुक चलता था
शत्रु देखता विस्मय भर

और कमाण्डर हिला न काँपा
आज्ञा देता था अब भी
घायल पीछे हट न रहे थे
हाथ चलाते थे तब भी

जले हुए तन जर्जर विक्षत
और रक्त से लथपथ थे
फटे शीश, कट गये अङ्ग सब
श्वास रहे या आग लगे

नर्सें मृत को, अर्ध जीवितों
को थीं जबरन ले जातीं
जिनकी वे कराह लड़ने को
उन्मादिनि मचली जातीं

कैनन गर्जन वाद्य बन गये
वह चुइकोफ़ सुन रहा था
अन्तिम गीत वीर जीवन का—
घायल हाँफ कह रहा था—

'साथी, जनरल, मैं मरता हूँ
वोल्गा के उस पार कहीं
मत ले जाना मेरे शव को—
मिट्टी हो बरबाद नहीं'

मुड़े कमाण्डर के वह सूखे
होंठ, एक मुस्काहट थी
लाल सैन्य के सेनापति की
दृष्टि अचञ्चल तृप्त रही

डूब गया रवि ख़ूनी था नभ
वह आता जो वोल्गा में
डसता आता था अंधियारा
भरता अणु अणु कोला में

रात होगई अंधकार ने
वोल्गा में गोता मारा
वृक्ष फरफराये डरते से
आज निविड़ता की कारा

किंतु धधकता रहा रात भर
स्तालिनग्रेद उफनता सा
कर्कश ध्वनियों का वोल्गा पर
बंधा रहा भीषण तांता

दोनों ओर तड़पता बल है
दोनों ओर नाद है घोर
घुमड़ घुमड़ कर टकराते हैं
जैसे वे बादल घनघोर

वह चुइकोफ़ देखता अपने
व्यथित नयन से मौन उदास
विद्युत सी फिर मेधा तड़पी
अधरों पर फिर छाया हास

अरे 'हँसी थी महावैद्य की
अंतिम गोली—संजीवन
जो देता है उस रोगी को
करे मृत्यु से जो घर्षण

एक लगे धक्का फिर देखें
बाजी किसके हाथ रहे
अब प्यादा वज़ीर होने को
फिर भी रिपु की मात रहे

ढाई लक्ष संगठित जर्मन
एक ठौर पर बढ़ते थे
छः छः की टुकड़ी में बँट कर
रूसी सब कुछ झेले थे

बिजली की सी त्वर गति उनकी
हमला करते छिप जाते
तीर बने भीषण अचूक वे
बंधन नष्ट किये जाते

घर घर में वे घुसे भयानक
खंडहर तले छिपे भीषण
उनके पीछे भारी आयुध
आकर करते थे गर्जन

खंड खंड कर बिजली टूटी
आग लगी रिपु-कानन में
टैंक-यान, पैदल-भीषणतम
पर जर्मन भ्रममय मन में

कोने कोने में यह छः छः
चीते—मृगदल फटते थे
टुकड़े टुकड़े किया शत्रुबल
अधिक वेग से लड़ते थे

पर जर्मन सेनाओं का तो
घेरा बढ़ता जाता था
आगे से छितराता लेकिन
पिछे घिरता आता था

घिरे हुए सैनिक के मन में
प्राणों की मृदु टीस जगी
अरे एक क्षण अपनेपन की
निर्बल करती प्रीत जगी

आह घिरे हैं—पर दुश्मन की
शक्ति अपरिमित बढ़ती है
अपना बल विध्वस्त हो रहा
बस आशा पर थाती है

उधर एक जयनाद शत्रु का
सहसा ही सब बोल उठे—
'जब तक गुल्म रहे थे जीवित
जब तक आयुध तोल सके—

'एक नहीं जा पाये जर्मन
एक न जाने पायेगा !
स्तालिनग्रेदी श्वान भला क्या
पीछे भी हट पायेगा ?'

युद्ध किंतु होता था अविरत
नहीं श्वास तक लेना था
आशा नैया उठी ज्वार पर
खेल लहर का होता था

जर्मन सेनाएं सुनतीं थीं
पीछे हिटलर बढ़ा रहा—
'है आर्य्यों का मान प्रखरतम
इसी विजय पर अड़ा हुआ'

'छः सप्ताह गये तो क्या है
पर अब के तो बाजी है
वीरों की है विजय सदा ही
अनुगामिनि है दासी है !'

भर भर कर विश्वास हृदय में
जर्मन हमला बढ़ा रहे
वे त्रिशूल से सभी दिशाएं
घेरे लोहा गड़ा रहे

पाषाणों में लुप्त थी सेना
मुखरित ध्वंसिनि जागी थी
अरे न दब पाई हैं लहरें
विजय महत्ता जागी थी

सेना कौंसिल में विस्मित कर
वह चुइकोफ पुकार उठा—
'पृथ्वी में से चोट करेंगे
ज्यों रहस्य का भार उठा

ऊपर टुकड़ी, सैपर, भीषण
हैंड ग्रिनेड उठें ललकार
नीचे फाड़ वक्ष धरणी का
आज करेंगे माइन प्रहार'

यह प्रस्ताव अजीब युद्ध था
किन्तु सभी को था विश्वास
मृत्यु कगारे पर स्थित सेना
जैसे एक ले रही श्वास।

जर्मन दृढ़ करके टीले के
ऊपर अपनी शक्ति अपार
बिन्दु बिन्दु वोल्गा का तक कर
मार मार कर करते क्षार

रूसी मौन नयन उस स्थल को
लक्ष्य किये रह रह चुपचाप
लगे खोदने गुफा उसी के
नीचे घुसने, ले उन्माद

तख्ता रख कर मांधे मिट्टी
आज पहुँचना था उनको
स्वेद शिथिल तन, नीरव भीषण
मौन भयद कर जन जन को

चौद दिन चौदह रातों का
उनको तनिक न ज्ञान हुआ
जलते बिजली के दीपक वे
दृष्टि कि था अंगार हुआ

जर्मन सेना के हित जैसे
क़ब्र खोदते थे मिल कर
ऊपर जर्मन वोल्गा डाटे
गरज रहे निर्भय बन कर

झुके रहे, झुक गई कमर भी
तन का भाव हुई पीड़ा
काले मुख, गड्ढे में आँखें
रूप हो चुप था नीला

वेग न रुकता, गिरती पलकें
श्वास घुट रही थीं दुस्सह
मिट्टी में रँग हुए भूत से
कर चलता फिर भी रह रह

टाइखन सुन पाया अब सिर पर
जर्मन ध्वनियाँ होतीं थीं
खोद गुफा पगतल लाये थे
अब कातरता खोती थी

टाइखन मुस्काया रिपु का वह
गर्जन सुन—होता ऊपर
बौराया रोगी मरने की
तन्द्रा में चिल्लाया डर!

बारूदों के किलोग्राम वह
तीन सहस्र भरे लाकर
मरण-अग्नि रिपु के पगतल भर
रूसी निकल चले बाहर

कुछ क्षण बीते, महावेग से
जर्मन ऊपर चला रहे—
अपने आयुध, वोल्गा बेधे
लहर लहर को हिला रहे

एक धड़ाका—जैसे सब ध्वनि
स्तब्ध हो गई थीं क्षण भर
वह घननाद घोर नीरवता
सा चिल्लाया देरी कर

कांपी वोल्गा, लहरें थहरीं
मंद पड़ गये सारे स्वर
प्रतिध्वनि में फट अट्टहास कर
लुढ़क गये अगनित खंडहर

तोपें सिसकीं, बंदूकें भी
केवल फुसफुस करतीं थीं
जर्मन शक्ति केन्द्र की ऊंची
छायाएं भी मिटतीं थी

एक बार वह टीला सा उड़
कांपा क्षण भर छितराया
खंड खंड हो महावेग से
पृथ्वी पर गिर टकराया

टुकड़े टुकड़े होकर जर्मन
फटे कटे मिट्टी में मिल
और न जाने सहसा वोल्गा
पर दौड़ीं नावें चंचल

इसके बाद अचानक ऐसी
शक्ति भरी रूसी मन में
हमला करते ही बढ़ते थे
और मारते थे क्षण में

दाब लिया था फन विषधर का
अब उस पर चोटें करते
बरस रही थी ज्वाला रिपु पर
और वज्र से थे गिरते

टूट गया था बांध कि या फिर
मूसलधार गिरा पानी
युद्ध विभीषणता की सीमा
पर पहुँचा था अभिमानी

वायु वेग से चलती थी जो
ज्वालाएं उकसातीं थीं
जर्जर दीवारों से थहरा
धक्का दे गिरता पातीं

महानगर में दोनों सेना
हमला करतीं जूझ रहीं
पर जर्मन चातुर्य्य विफल सा
रह रह सेना टूट रहीं

घर के भीतर, घर के बाहर
नीचे ऊपर खंडहर के
दीवारों की आड़ों से या
खिड़की छज्जों से छत से

गोली चलतीं, सैनिक गिरते
फिर धमधम पग करते थे
दौड़, लुढ़कते—वह ग्रिनेड के
थंडर बार उमड़ते थे

सत मंजिली इमारत लुढ़की
रूसी निम्न भाग में घोर
रणउन्मद होकर लड़ते थे
जर्मन वेग रहे थे तोड़

झुंड झुंड जर्मन आते थे
आज क्रुद्ध हो आग लिये
तभी एक किर्गिज़ छत लखकर
बोला युद्ध सुहाग लिये—

थका नगर है, थके हुए घर
ईंटें तक हैं थकी हुईं
किंतु अभी तक हम न थके हैं
और न आशा थकी हुई

किंतु अचानक रूसी सेना
जर्मन बगलों पर टूटीं
फाड़ बीच से तोड़ झुकाया
रिपु को बिखराती जूझीं

बासठवीं सेना का लोहा
लोहे को था काट सका
जिसकी चोटों से जग दहला
कोई मेल न डाट सका

मृत्यु खोल कर पंख उतरती
नाज़ी बल पर छाया डाल
घेर रही थी धीरे धीरे
झुकता था वह उन्नत भाल

वोल्गा अब स्वतन्त्र बहती थी
नगर हो रहा था बलमान
जर्मन सेना उखड़ रहीं थीं
अब धीरे धीरे त्रयमान

बासठवीं सेना ने सचमुच
बचा लिया था स्तालिनग्रेद
वीर रक्त से रंजित फहरा
झंडा बन कर स्तालिनग्रेद

वह चुइकोफ़ श्रांत नीरव सा
धारा खे उस ओर गया
वोल्गा तट पर महाशीत में
देख रहा था हिम जमता

और ध्वंस में नगर धधकता
एक तोप सा शक्ति भरा
उगल रहा था आग शत्रु पर
ज्यों भीषण उल्लास भरा

जग भर से आ रहे संदेशे
स्तालिनग्रेदी सेना को
दुगना साहस सा देते थे
भरते विजय पिपासा को

स्तालिन का सन्देश मिला था
वह चुइकोफ़ हिला सहसा
जो जर्मन भीषणता में भी
खड़ा रहा रह रह गरजा

आज स्नेह से नयन भरे थे
और कण्ठ था भर आया
महामातृ के मृदुल अंक में
शिशु ने अपना घर पाया

वोल्गा, नगर, गगन धरती सब
अंग अंग से थे उसके
आह प्यार से सिक्त हुए थे
जो इस रण से थे झुलसे

नयनों में नव ज्योति जगी थी
होठों पर कंपन छाया
मादक सुधियों का .खुमार वह
सिहरन सी भर भर लाया

उठा हाथ—चुइकोफ़ सलामी
भग्न नगर को देता था—
नगर—शहीद बना घायल सा
महाक्रान्ति का नेता था!

वह चुइकोफ़—सहस्रों शीतल
आँखें दुहरातीं थीं मन,
आज पुलक से शिथिल गात वह
देख रहा था नव जीवन

पले धूल में जिसकी वह था
आशीर्वाद उसे देता
एक बीज फूटा था तरु सा
चिर विश्राम सुखद देता

सुना आज ज्यों रिझा रहीं थीं
किलकारी मृदु शैशव की
बुझतीं थीं ज्यों धीरे धीरे
आग भयङ्कर भैरव की

मृदु मृदु आलिंगन की ऊष्मा
आज बिसुध करती उसको
महानगर में वह कलरव फिर
होता दीख रहा उसको

वोल्गा की कोमल मर्मर में
जैसे मांझी गाते थे
और घरों से श्लथविलास स्वर
वायु परों पर छाते थे

वह चुइकोफ़ मदिर खोया सा
रहा देखता भूला सा
जिसके प्राणों की बाजी पर
यह सुपना कल भूला था

क्रांति क्रांति का जो विराट स्वर
उस स्तालिन ने गाया था
सफल उसे कर महाशांति का
गीत आज दुहराया था

माताएं पुत्रों से मिलतीं
छाती भर भर आतीं हैं
सुन्दरियाँ अपने प्रियतम को
भर भर अंग लगातीं हैं

फिर खेतों में राग उठेंगे
फिर मीठी हलचल होगी
फिर जीवन के मृदु उपवन में
यौवन की क्रीड़ा होगी

बीत चला था वह टीड़ी दल
खेत भग्न सा दीख रहा
किन्तु उगेगा वह फिर कल ही
रूप अमित था रीझ रहा

आज बाढ़ के बाद भूमि यह
कितनी सुखदा लगती थी
कल फिर घर जागेंगे रह रह
यह आशा ही जगती थी

वह चुइकोफ़ देखता जैसे
फूल खिला था हँस हँस खेल
भग्न किन्तु चिर वैभवमय वह
बुला रहा था स्तालिनग्रेद!

१४

तीन मास, हाँ, नब्बे दिन तक—
हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
जर्मन हमला हुआ नगर पर
और हुआ था ध्वंस विराट

तीन मास, हां, नब्बे दिन तक—
हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
घर, मिल, पथ उपवन सबका ही
दुश्मन करते सत्यानाश

तीन मास, हां नब्बे दिन तक—
हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
रूसी फौजों ने दुश्मन के
खट्टे कर कर डाले दांत

तीन मास, हां, नब्बे दिन तक—
हाँ, घंटे इक्किस सौ साठ
टैंक यान, तोपें औ' पैदल
उतरे आज पराजय घाट

नब्बे दिन तक फासिस्टों की
लहरें चढ़ती ही आईं
नब्बे दिन तक रूसी फौजें
हमला सहती ही आईं

वह मुड़ कर पीछे न हटेंगे
पर यह छोड़े राह नहीं
गोता लगा रहे हैं जर्मन
फिर भी पाते थाह नहीं

यह साहस था लौह हृदय था
यह थी विजय रक्त पर ही
रक्षा पर चोटें चढ़ती थीं
और अंधेरी भी बढ़ती

वोल्गा के तीरों से मिलना
और कठिन सा लगता था
हमला करता सा रूसी बल
अधिक शक्तिमय लगता था

जर्मन सेना के रह रह कर
अगन डिवीज़न घिरते थे
जो अपनी ताक़त पीछे से
ला ला यहीं खपाते थे

बाईं बगल और पीछे कुछ
महाडॉन की धारा थी
डॉन और वोल्गा की भू में
शक्ति चली ज्यों कारा थी

प्रबल वेग जर्मन सेना का
आज हुआ खंडित विध्वस्त
छिन्न भिन्न करने की चालें
लेकर नाज़ी बल था त्रस्त

वोल्गा नद यूराल प्रांत से
कट न सका था बाकी देश
मॉस्को की मृगतृष्णा हारी
देती थी रह रह कर क्लेश

उल्टे नाज़ी बल घिरता था
घेरे बढ़ती रूसी फौज
दो तलवारों में गर्दन पा
कांप रही थी जर्मन फौज

उत्तर पश्चिम, दक्षिण पश्चिम
से पहला हमला ले शक्ति
इधर हुआ—उस ओर करोड़ों
देख रहे थे अपनी मुक्ति

घूंसा सा पड़ता था मुख पर
जर्मन सके न मुंह को फेर
महाविजय की झंकारों से
प्रतिध्वनि करता स्तालिनग्रेद

वह प्रतिध्वनि अज्ञात शक्ति थी
शोषित मानवता का त्राण
अरे करोड़ों शीश उठा कर
देख रहे थे नूतन प्राण

इधर डॉन का हमला भीषण
उधर चीन हुंकार उठा
आज़ादी के लिये तड़पता
यह भारत फुंकार उठा

और कि सेना ट्यूनिशिया में
नवल शक्ति से गरज उठी
साम्राजी—फ़ासिस्टी ताक़त
लड़खड़ सुन कर दहल उठी

युग युग की शोषित जनता भी
उगता सूरज देख रही
एक मोर्चा एक लक्ष्य था
जिस पर सबकी टेक रही

उठा क़दम जापानी रिपु का
अब पीछे जाता था हेर
मिट्टी भी अंगार हुई थी
जय जनयोद्धा स्तालिनग्रेद

उत्तर पश्चिम की सेनाएं
बगलों पर करतीं थीं वार
तितर बितर करतीं, नाज़ीबल
झेल न पाता किंतु प्रहार

जिनके भीषण आघातों से
यूरुप के वे देश विश्रांत
हारे और गिरे मुंह के बल
छाया बर्बरता का ध्वांत

आज टूटतीं थीं रह रह कर
कड़ियां प्रबल गुलामी की
जिनके पाशों में दुनिया की
घुटनी सांस सताई सी

हिला पहाड़ दहल कर ठहरा
लहरों की चोटों से हार
कल तक लहरों के गर्जन पर
कर उठता था अट्टाहास

आह कराह उठा वह ज़ालिम
अपने अरमानों पर सेक
सेक रहा अपनी जानों को
अवाँ बना था स्तालिनग्रेद

आज नाव पर जल टूटा था
आज बाढ़ थी जीवन की
क्षण क्षण बढ़ती ही जाती थी
भीषणता पागल रण की

अभी भयानकता छाई थी
रिपु अंगारा बुझता था
जिसको पैरों तल लालों ने
बदला लेकर कुचला था

दलितों की भीषण आहें या
मां बहिनों की इज्जत थी
लूट आग या बर्बरता के
बदले की यह लज्जत थी

अरे बच सका है क्या कोई
जनता की तलवारों से
गूंज रही दुनिया अब तक भी
सन् सत्रह के वारों से

दो बिजलियां गुंथी हैं कड़कीं
ख़ून मांस की देकर भेंट
गिरते उठते लड़ते मरते
हँसता है पर स्तालिनग्रेद

घेर लिये बाईस डिवीज़न
जर्मन सेना के अभिभूत
रणदुर्मद रूसी फन्दे थे
कसते जाते आज अचूक

उत्तर से दक्षिण पूरब तक
एक शक्ति कालच आई
दक्षिण से उत्तर पश्चिम तक
दूजी धारा बह आई

डॉन और वोल्गा के भीषण
दाबों में जर्मन पिसते
उगल रहे थे अंगारों को
अन्तिम चेष्टाएँ करते

जर्मन ढाल आज चटकी थी
भीतर से मणि चमक रही
और सर्प की भय लपेट थी
प्राणों को कर रुद्ध रही

वोल्गा प्रत्यंचा सी थहरी
अब रह रह टंकार उठी
शत्रु ध्वंस का तीर चढ़ा कर
वोल्गा पर कर मार उठी

वोल्गा और डॉन पर उनके
रक्षागृह जर्जर विध्वस्त
धीरे धीरे यह रूसी बल
कर लेता था बढ़ कर ग्रस्त

वोल्गा और डॉन दोनों के
बीच अनेकों खड्ड बने
अन्धकार के भयद नाद से
गूँजा करते क्रुद्ध तने

किन्तु सड़क चमका करती है
स्निग्ध कपोलों सी सुन्दर
और पहाड़ी उन वीरों के
गाया करतीं गीत मधुर

जला चुकी मोरटार गनें थीं
पृथ्वी काली दिखती थी
जो कि डॉन के मैदानों की
छाया बन कर उठती थी

रूमानियन कि जर्मन सेना—
कोई भी न सफल होता
कोचेकोव लिये पन्द्रह जन
विजय गर्व हँस कर ढोता

मरते मरते उन सोलह ने
युद्ध किया फिर खेत रहे
वह शहीद—विजयिनि सेना के
महानाद बन मुक्त रहे

एक कुहर से भरी भोर में
'एन' यूनिट ने वार किया
पाला छूता था कानों को
और वायु ने शीत पिया

टूट गया वह घन सन्नाटा
वायुयान के चलने से
और बैटरी मोरटार की
रुक न रही थी बढ़ने से

अभी नहीं वह शब्द रुका था
टूटीं पैदल सेनाएँ
बड़ी मशीनें टैंक गरजते
हमला था दायें बायें

सघन कुहासे में कुछ ज्वाला
बन्दूकों की दिखती थी
लेफ्टिनेण्ट बाबायफ़ वाले
बैटेलियन की सख्ती थी

जीत लिया था मध्य केन्द्र को
तूफ़ानी हमला कर के
मत्सोवस्की सबसे पहले
चढ़ा पहाड़ी पर लड़ के

मैकेरोव, वोल्किन पीछे
व्लेसो, फ्लेमिन, दोदोखिन
वीर सिपाही—कूक चढ़े थे
कांप उठे व्याकुल दुश्मन

हाथ उठ गये—त्राहि त्राहि कर
दुश्मन हा हा खाते थे
उनके ही पिलबॉक्सों में से
चीत्कारों के घाते थे

जयनादों से दूर दूर तक
गूंजा खंडहर स्तालिनग्रेद
गूंजी शक्ति सोवियत् की थी
आज लिये थे बर्बर घेर

एक एक कर सांस खींच कर
जर्मन तोपें थीं ठंडी
और कैदियों की कतार ही
होती जाती थी लंबी

मुर्दों से पथ लथपथ ख़ूनी
पड़ी अनाथा बंदूकें
घास उग रही ठौर ठौर पर
और कराहों की गूंजें

टैंक जला कर चूर कर दिये
पूरी सेना बिखरा दी
सैनिक उठते ज्वालामुखि से
आग बरसती दहकाती

वोल्गा के तट पर वह जर्मन
गड़े हुए थे स्तंभों से
पीछे ठुकरा देते थे वह
वेग अनेकों धक्कों के

वह यूजीन महानगरी के
उत्तर पश्चिम पर आया
कभी कभी बन कर दुर्भागी
क्रोधित होकर भरमाया

महारूस यह एक घड़ी थी
मॉस्को सूई चला रहा
समय बीतते चेतन करने
रह रह घंटा बजा रहा

वह यूजीन देखता विस्मित
नगर नदी अब भी जलते
और ध्वंस की उस बेला में
जैसे सैनिक थे हँसते

उत्तर पश्चिम के हमले से
जर्मन सेना भागी थी
बहुत दिनों की गड़ी चोट वह
तोड़ी और उखाड़ी थी

टैंक और अश्वारोही वह
कालच तक जा पहुंचे थे
स्तालिनग्रेद नगर का पश्चिम
धीरे धीरे गहते थे

कर्नल बेविख ने रूमानी
सेनाओं को घेरा था
कायर बन कर जिनका जनरल
सेना को ले आया था

जर्मन दबे पूर्व के पीछे—
बढ़ती लाल फौज भीषण
मृत्यु खेलती ज्यों घायल से
जो करवट लेता क्षण क्षण

बूढ़े कौसक व्याकुल नारी
जर्मन लूटों के आखेट
मुस्काते थे धीरे धीरे
पिघल रहा था अब निर्वेद

व्यर्त्याची फ़ार्म में सहसा
देखी पड़ी हुई लाशें
रूसी—जर्मन हाथों बंदी
मर कर मूंदे थे आँखें

एक सलामी लाल क़सम है
इनका बदला हम लेंगे
राहों पर रूसी मुर्दे थे
उनका बदला हम लेंगे

बदला ? भरती स्फूर्ति हृदय में
लहरें मार रहा है जोश
मन की घृणा तड़प चिल्लाती
प्रतिध्वनि करता भीषण रोष

वह जर्मन की पुलिस शक्ति जो
पथ रण में थी कुशल अतीव
जिसने कुचला था घर की ही
अन्य शक्तियों को निर्भीक

साम्राज्यी ब्रिटेन अमरीका
फ्रांस आदि तब मौन रहे
रूस जर्मनी को लड़वाने
जिनके सारे सोच रहे

चाहा था जर्मनी बनेगा
बोल्शेविक धारा का बांध
छोड़ दिया हिटलर उपक्रम में
शक्ति गई मर्य्यादा लांघ

आज उसी से कँपे स्वयं ही
और रूस के साथ हुए
सिंहों की गति भला स्यार के
धोखों में कब मात रहे

टैंकों की यह शक्ति भयंकर
महासैन्य से अलग चली
साठ किलोमीटर पथ काटा
आँखों की माया गलती

भोर धुंधलके में कँपती थी
घना कुहासा छाया था
दूर दूर तक भ्रम सा फैला
सभी छिपाता आया था

भीगा भीगा अंतराल वह
दहल गया सारा हिल कर
टैंकों पर से गन चिल्लाईं
एक धड़ाके में मिल कर

फेंके रॉकेट हुआ उजाला
मानों कुहरा जलता था
एक हुई आवाज़ सभी का
साहस आगे बढ़ता था

उठा उठा बंदूक सिपाही
लगे दौड़ने गोलीमार
तार काट कर टैंक बढ़ गये
पृथ्वी दिखती जर्जर छार

नम्बर दो का फ़ार्म जीत कर
शत्रु शक्ति की दूजी पांति
नष्ट भ्रष्ट करदी टैंकों ने
भरती शत्रु सैन्य में भ्रांति

दाईं बगल दाबने सहसा
फिलिपेन्को के टैंक चले
दीर्घकाय वह जल्दी जल्दी
बर्फ़ पीसते रेंग चले

नहीं सड़क थी, सघन बर्फ़ ही
खड्डों में भी भरी हुई
किन्तु चूर्ण हो दब जाती थी
नील छाँह में छिपी हुई

आगे चलते टैंक तोड़ते
पीछे पैदल हमला कर
क्षत विक्षत करते आते हैं
तूफ़ानी झंझा तन कर

झड़ी बर्फ़ की आँधी—अन्धा
करती है पर चलते हैं
कुतुबनुमे से दिशा देख ज्यों
जब पथ निर्मित करते हैं

घनी घास वह कुचल कुचल कर
समतल करते टैंक चले
जैसे महासाम्य का पथ वह
स्वच्छ प्रशस्त किये चलते

एक फ़ार्म जो शून्य पड़ा था
धधक रहा था अब सूना
निर्जनता के महाशून्य में
भीषण लगता था दूना

दाईं ओर अचानक रिपु ने
गोली बरसाईं भीषण
बत्ती बुझा चले वह आगे
केवल था सुनसान विजन

दुश्मन आग लगाते जो जो
फ़ॉर्म छोड़ते जाते थे
वह मानों रण पथ के दीपक
बन कर राह दिखाते थे

अभी भोर थी जीत लिये थे
ग्राम अनेकों सहसा ही
आशा के विपरीत गिरी थी
बिजली—जड़ तक दरकाती

नोवोज़ारित्सिंस्की में वह
रूसी टैंक चला जाता
अनजाने जर्मन मोटर से
रुकने का इंगित पाता

रुका—स्नेह से जर्मन आये
चौंक गये दुश्मन पाकर
बन्दी होकर महाहास्य में
डूब गये वह लज्जाकर

और सहस्रों के शव भू पर
पड़े रहे थे बने अनाथ
रण-सामग्री मिली विजय में
लेकर बढ़ते रूसी साथ

मैरीनोव्का कारपोव्का
वोल्गा स्टैपी में पहले
भग्न हुए जो ग्राम खड़े हैं
अबके रक्षित दृढ़ बल ले

चारों ओर घेर कर जर्मन
उन्हें कुचलने बढ़ते हैं
भीतर रूसी हमले की अब
चल तैयारी करते हैं

भोर समय ही बजी गोलियाँ
घनी बर्फ़ थी जमी हुई
अरे देखते पलक न गिरते
जर्मन सेना घिरी हुई

भीषण आर्टिलरी का गर्जन
टुकड़े टुकड़े करता है
बगलों पर संगीनें चलतीं
धक्का भीषण लगता है

रिपु की वह चट्टान बीच से
छोड़ चुकी थी अंध दरार
मृत्यु पराजय की पुकार थी
किन्तु नहीं डाले हथियार

बीत गये दो घण्टे बढ़ते
सहसा जर्मन फिर टूटे
रूसी योद्धा की पसली पर
दलबल लेकर थे जूझे

किन्तु बर्फ़ अब चमक रही थी
रुधिर और शव से घिरती
ऊषा के नभ में बादल के
टुकड़ों की छवि ज्यों दिखती

गई रात—रण हुआ अरुकथा
रूसी युद्ध वस्तु धरते
और सहस्रों वे जर्मन शव
बने खाद से पड़े रहे

हारी हुई ठौर के पीछे
जर्मन शक्ति लगाते थे
फिर से जीत सकेंगे कैसे
इतनी बाधा पाते थे

लुढ़क पहाड़ी से घायल हो
पंथी ज्यों फिर फिर चढ़ता
पैर नहीं जमते रह रह कर
फिसल फिसल कर है गिरता

टैंक बैटरी पैदल आते
योद्धा वीर प्रमत्त गरज
किन्तु नहीं चल पाते आगे
गोली खाकर सुप्त लरज

जैसे माली की वह कैंची
फूल काट बिखराती है
कंबल ओढ़े पर मधुमक्खी—
भीर विवश हो जाती है

गरज महानद धार उमड़ कर
चली डुबाने जग सारा
उधर ज्वार आया सागर में
लौट चली नद की धारा

कहीं कहीं जो पिलबॉक्सों से
जर्मन गोली दाग रहे
हैंडग्रिनेड की भूख मिटाने
खुद ही आज शिकार रहे

जो भागे उनके पानी की
लाज जाँचतीं संगीनें
रूसी सेना कड़ियाँ बन कर
फैलातीं हैं जंजीरें

छूट छूट कर बन्दी रूसी
मिलते हैं गाते जयगान
हर कोने में नव प्रहार पा
जर्मन साहस है लयमान

आज सन्धि की उन शर्तों पर
दुश्मन को झुकना होगा
और नहीं तो शत्रु रक्त को
पानी सा गिरना होगा

हैनीबॉली गर्व धूलि में
शीश पटक कर रोता था
सिंदबाद का बूढ़ा मद में
अपना जीवन खोता था

रूसी विजय गुँजाती आती
ज़ोतोवस्की कामीकोव
भोर हुए ही फिर सेनाएँ
चलीं शीघ्र कालच की ओर

दोब्रिंका—ओस्त्रोव रोज़की
तज कर जर्मन भागे थे
और हँस पड़े गाँव पुलक कर
आज भाग्य फिर जागे थे

महाशांति थी विस्तृत स्टैपी
में मर्मर सी अब जागी
जो पहाड़ियों में कलकल कर
झंझा बन टकरा जाती

ट्रक चलती थीं, सघन धूलि के
अजगर रह रह उठते थे
घुमड़ लहरते ज्योतियुक्त से
फन फैलाते हिलते थे

जमी हुई थी डॉन बर्फ़ से
उस पर टैंक खिसलते थे
छायाओं के कारण अब वे
ज्यों दो दो मिल चलते थे

कहीं कहीं पतला हिम चटका
और शीत जल बह आता
जिस पर छींटें मार वेग से
अश्वारोही है जाता

पुल निर्माणित आज किया है
दूर दूर से लकड़ी ला
खेल हो रहा है हर पथ पर
शत्रु चलाई गोली का

संध्या की तन्द्रिल छायाएँ
तरु तरु बेसुध करतीं थीं
और विजय की सुखमय आशा
इनके मनको भरतीं थीं

हेडक्वार्टर से मिला सन्देशा
जीत लिया है कालच को
मोटर राइफ़िल डिवीज़नों ने
नष्ट किया अन्तिम रिपु को

बेघरबार और भूखे मे
जर्मन पथ पर भाग रहे
बर्फ़ और वह प्रबल झकोरे
हड्डी तक थे काट रहे

अश्वारोही सेना ने था
सरपट हमला किया कठोर
खड़े हुए योद्धा—कृपाण थे
उठे तड़पते नभ की ओर

उस दिन भागे नागरिक रूसी
जर्मन ट्रक ने कुचला था
आज घेर कर नगर सैन्य यह
लेती उसका बदला सा

नव रक्षागृह दृढ़ कर जर्मन
देख रहे थे अंधियारा
आज निराशा बन छाता जो
विजय बन गई थी कारा

क़दम क़दम विध्वंस शंख सा
बजता था निर्भय मन सा

[झ]पने के पहले चमका था
[द]ीपक फिर मे जर्मन का
[ज]र्मन युन्कर वे बावनवें
[ऊ]पर से बम बरसाते

[ग]ोली खाकर, हा हा करते
[ज]लते जलते गिर जाते
[ज]ैसे लाश देख कर लाखों
[च]ील तड़प कर धाती हैं

[ध]ूँए की वह घोर घटाएँ
[ल]ीक बनाती आती हैं
[स]ोलह घंटे का भीषण रव
[ट]ैपी पर है गूँज रहा

[व]िजय विजय का नाद प्रफुल्लित
[म]हाडॉन को चूम रहा
[थ]के हुए तन, उठे हुए मन
[स]ैनिक मुख को धोते थे

[श्र]ांत अवयवों की कातरता
[ह]ँसते हँसते खोते थे
[क]िन्तु विजय यह उषा सदृश थी
उस दिन की जो आयेगा

और युद्ध का रोग मिटा कर
[ज्य]ोतित मार्ग दिखायेगा
[ए]क बूँद है यह उस सुखमय
[व]र्षा की, जो एक दिवस

[ज]ग भर में हरियाली फैला
[न]ष्ट करेगी अन्ध कलुष
[ए]क एक कर लगीं टूटने
[म]ानवता की जंजीरें

[ए]क विराट लहर जाग्रति की
[अ]णु अणु उठते मस्ती में

१५

वह वोल्गा पर जमता जमता
हिम आपस में टकराता
मंथन सा करता फेनों सा
हिल हिल कर है छितराता

हिम धारा पर लम्बे लम्बे
वह शहतीर बहे जाते
जनता के प्रतिशोध प्रबल में
कङ्कालों से मुरझाते

वह लो बजरे जो बर्फीली
वोल्गा पर हैं खिसक रहे
उनमें जर्मन बंदीगण के
दिल भीतर हैं धसक रहे

श्वेत बर्फ के बीच बीच में
नील लौह सा पानी है
और थिरकतीं नावें आतीं
बंदीघर लासानी है

पथ पर झुके हुए वे बंदी
लिये हुए मुँह मुरझाये
इस जीवन पर लज्जा करते
वोल्गा के पथ पर आये

कल वे सीधे खड़े गरजते
कम्पित जग को करते थे
आज गिरी सी गरदन ढीली
लम्बी श्वासें भरते थे

नत थे नयन और सूने कर
फिर भी सहते थे हारे
जनता-बन्दी श्रेष्ठ आज है
या फासिस्टी हत्यारे ?

तब हम क्रूर और बर्बर थे
पशु थे अंधे लोभी थे
जग को अपना दास समझते
खूनी भीषण क्रोधी थे

माँ बहिनों के मान बिगाड़े
बच्चों के हत्यारे थे
लूट और अत्याचारों से
हमने नगर उजाड़े थे

बन्दी हो कर भी प्रसन्न मन
इच्छा से वे चलते थे
नव वर्षा की आशा से ही
इस ऊमस को सहते थे

बड़े वेग से लहरें आकर
चट्टानों से टकराईं
और तड़प कर तीर चरण पर
हा हा खातीं छितराईं

बर्फहीन इन मैदानों में
टीढ़ी-दल से खड़े हुए
अपने सब अरमान हार कर
आज शरण में पड़े हुए

सघन धूम में अन्ध भयद सा
कुहरा भूला पथ अपना
छिपने लगे वृक्ष धूमिल हो
जैसे खोता है सपना

वोल्गा की मर्मर पर कोई
लालिम छबि थी रेंग रही
जाते रवि की विकल रश्मियां
सजल व्यथित सी ऊंघ रहीं

बिजली के तारों पर धीरे
बर्फ़ जम रही थी पतली
सघन हो चली धीरे धीरे
वायु काटती थी मचली

प्रकृति मौन थी, किन्तु अभागे
मानव को विश्राम कहाँ
वर्गों की इस लूट चोट में
यहाँ शांति आवाम कहाँ?

शीत दिसम्बर सीत्कारी भर
ठिठुर रहा सा सिकुड़ा था
बम खड्डों का तम हिम में ज्यों
भू का अंचल उघड़ा था

तुहिन समीरण बोझल झूमा
आज चल रहा था पागल
ख़ून रोकदे ऐसी चंचल
जोश भरी आतुर हलचल

ट्रैक्टर प्लैंट अरे सब ही पर
चलता वह भी वाहिनि सा,
निर्भय रुक न किसी से सकता
नाद विताड़ित पगध्वनि का

वोल्गा पर प्रहार करता था
पानी सघन हुआ जाता
किंतु चटक कर भंवर मारता
विह्वल भयद हुआ जाता

तीर जम गये जैसे लहरें
बद्ध होगई कारा में
लगीं दौड़ने बीच, शक्ति ले,
घुमड़ घुमड़ कर धारा में

और गिर रही बर्फ किलक कर
वायु फाड़ देती अञ्चल
ममता सी फिर हुई सम्मिलित
आहों सी बिखरी चंचल

आठ जनवरी को सहसा ही
रूसी बिगुल बजा निर्भय
जिसके स्वर पर नर्त्तन करता
झंडा श्वेत उठा लयमय

फर फर फहरा नभ में झंडा
गुञ्जित करता बलमय वेग
जर्मन सेना को देता था
आत्मसमर्पण का आदेश

'लो बज उठा है अब बिगुल
उठो उठो सिपाहियो
क़दम क़दम प्रतिध्वनित
बढ़ो बढ़ो सिपाहियो

न भेद वर्ग के रहें
न भेद देश के रहें
मजूर हो किसान हो
समान हो सिपाहियो

लो जल उठा चिराग़ है
पुकार इन्क़लाब है
ओ भूख से जले हुए
जगो जगो सिपाहियो

जो लूट है, जो स्वार्थ है
दरिद्र जिससे आर्त्त है
हमारा शत्रु है वही
हैं एक हम सिपाहियो

ग़रीब घर की रोशनी
महान हो सिपाहियो'

चले कमान्डर वह दो रूसी—
पर जर्मन समझे अपमान
गोली उगल उठीं बन्दूकें
करते थे अब भी अभिमान

वह ख़ाली बादल गरजा था
मरते सैनिक की हुङ्कार
मृदुमृदु रुकरुक फिर गुञ्जितकर
उठी संधि की यह झंकार

नौ बजने वाले थे झंडा
ऊपर धीरे उठता था
तोपों के पीछे से रूसी
बल आतुर सा बढ़ता था

नहीं भागने का पथ कोई
चूहा बीच घिरा आकर
भरा भराया बांध तोड़ने
बना रहा था बिल आतुर

लम्बी लम्बी मौन कतारें
घेरे चलते रूसी थे
डरी हुई आँखों के जर्मन
निर्बल होकर बंदी थे

महाशीत में भूखे मरते
ठिठुर गये थे त्रस्त शरीर
आत्म समर्पण कर देते थे
अविश्वस्त से विकल अधीर

हिटलर की आशाएें भग्ना
तोड़ तोड़ छितराई थीं
आज रूस की मधुर पिपासा
धीरे से मुसकाई थी

हिटलर क्रोधित तड़प रहा था—
स्तालिनग्रेद नहीं लेंगे-
नाम घृणित स्तालिनका जिसमें
ऐसा नगर नहीं लेंगे

यह ईश्वर के शत्रु इन्हें तो
मदद दे रहा है शैतान—
अट्टहास कर उठती दुनिया
हिटलर का करती अपमान

लाशों से मैदान ढँक गये
बना अहेरी स्वयं अहेर
क्षण भर वोल्गा फिर हँसती है
मुस्काता है स्तालिनग्रेद

सुना रूस ने सुना विश्व ने
महा शान्ति का पहला छन्द
मानवता का विजयकेतु वह
बर्बरता पर हिला अमंद

जर्मन मौन ; कमान्डर रूसी
फर फर झंडे की लय पर
चले समर्पण रिपु का पाने
बजा बिगुल उन्मुक्त निडर

जर्मन दुर्बीनों से तकते,
फिर उनके नयनों को बांध
अपनी ओर लेगये, बीता
दिन—लौटे जब आई सांझ

जर्मन दर्प अभी उन्नत था
आत्मसमर्पण का आदेश
ठुकराया था महाक्रुद्ध हो,
नहीं पराजय में था लेश

रात—और वह रूसी भोंपू
वह ही बात पुकार उठे
किंतु न जर्मन सेना दबती
स्वर नभ में हुँकार उठे

स्तालिनग्रेद भयंकर योद्धा
बन कर सीधा खड़ा हुआ
आज रूसियों की करुणा पर
फ़ासिस्टी शव पड़ा हुआ

एक लाख जर्मन घायल थे
और सहस्रों खेल रहे
जिन पर चीलें मँडराती थीं
और भेड़िये घेर रहे

पर जनता के लाल सिपाही
जनता का यह ध्वंस बिलोक
चाह रहे थे अब भी अपने
उठे हुए आयुध दें रोक

किंतु घिर गया है अब दुश्मन
क़सम नहीं जाने देंगे
क़ातिल के हथियार गिरा कर
अब न उसे जाने देंगे

एक ओर है क्रोध भयङ्कर
एक ओर करुणा की रेख
हमलावर के हाहाकारों
से गूँजा फिर स्तालिनग्रेद

जर्मन क़िलेबन्दियों पर चढ़
हमला किया रिज़ेफ़ पर जा
जिसकी प्रतिध्वनि से मॉस्को में
जयध्वनि थी, नव साहस था

रिज़ेफ़ व्याज़्मा के हल्के में
भीषण टैंक भड़क लड़ते
हाँ! तेईस सहस्र मरे थे
फ़ासिस्टी शोले बुझते

वायुयान पर चढ़ कर रूसी
गिरा रहे नीचे परचे—
'आत्मसमर्पण कर दो, कोई
राह नहीं है जो बचते'

हिटलर की तृष्णा हारी है
सेना अस्त्र गिराती है
मानवता की बर्बरता को
अपने आप मिटाती है

कहीं कहीं नीचे से उठते
झण्डे संधिगीत से श्वेत
घिरते ही जाते हैं जर्मन
भूखा घायल स्तालिनग्रेद

कबूतरों से फर फर उड़ते
तैर रहे कागज़ ऊपर
जिनको दृष्टि गड़ाये शंकित
देख रहे जर्मन भू पर

सूखी खेती पर बूँदें ज्यों
फिर हरियाली ले आतीं
बुझे दीपकों में मानवता
की बत्ती जलती जातीं

एक रो उठा है वह जर्मन
यह करुणा की देख प्रभा
सोच रहा कैसे उसने ही
हत्या की इनकी सहसा

जिनकी लाशों पर हँसता था
वही आज दुश्मन तक पर
विपदाओं में फँसा देख यों
दया कर रहे थे उस पर

फेंक दिये हथियार हिटलरी
गरज उठा वह मुक्त विवेक
मानवता का पाठ सिखाया
ओ जनता के स्तालिनग्रेद!

आज जहाँ यह भाग मिला है
अबीसीनिया में उस दिन
मुसोलिनी के बेटे ने तो
किया भयङ्कर बम वर्षण

घायल और निहत्थों का जब
हाहाकार उठा भीषण
मुस्काया फ़ासिस्ट पुत्र वह
धधक रहे थे नगर विजन

जिन हाथों ने बेकुसूर वह
बच्चे बुड्ढे मारे थे
जिनकी भयद वासनाओं ने
स्त्री के मान बिगाड़े थे

उन्हीं दरिन्दों पर यह रहमत?
क़ातिल रोता था अभिभूत
यह करुणा की मार भयङ्कर
गये हाथ से आयुध छूट

खुलीं आज आँखें दुनिया की
यह जनता की जीत अभेद
मज़दूरों की हिम्मत पर ही
था अजेय यह स्तालिनग्रेद

थी निस्तब्धा किंतु गगन में
ज्यों ही रवि झिलमिल आया
गोली चटकी—आँधी बनकर,
महावेग जीवित धाया

धुंधला नभ मोरटार गनों की
झुलसाती ज्वालाओं से
फिर से क्षण भर दीप्त हो गया
पागल मन सेनाओं के

अपनी पूरी शक्ति अड़ा कर
जर्मन बल की अगली पांति
टूट पड़ी थी, दोनों सेना
हिला रहीं थीं धरिणी भ्रांत

घायल जर्मन उठ उठ आते
हिटलर की सूनी आँखें
मानों चमक रहीं या बुझतीं
पर न मिली गहरी थाहें

यूरुप जिनकी भीषण पगध्वनि
से उठता था कांप वही
सिंहों से दहाड़ कर झपटे
पर लालों की शान अड़ी

उठी भयंकर आग प्रलय की
गोली ज्यों उन्माद भरीं
आयुध की भीषण ध्वनियों में
भाग रहीं थीं राग भरीं

.ख़ूनी नयन भयद जलते थे
पाषाणों का घर्षण था
नाग लपलपा कड़क रही थी
जीवन करता क्रन्दन था

क्षुब्ध वायु ज्यों टूट रही थी
तड़क रहा था ज्यों आकाश
रूसी तोपें गरज रहीं थीं
उगल रहीं थी भीषण नाश

वह चीत्कार पुकार गरज सब
वह हुंकार कड़क भीषण
एक गूंजती घहर हो रही
भरती थी उन्मत्त गगन

रूसी लहरें प्रबल वेग से
चट्टानों पर आईं टूट
सागर मर्यादा उल्लंघन
करने पर आया भर भूल

टूटे जर्मन, तड़की सेना
मार काट फिर उमड़ चलीं
सागर को मथती लालों की
फेनिल झपटें घुमड़ चलीं

हाहाकारों से नभ गूंजा
थहर उठा कम्पित बर्लिन
नव किरणों में चमक रही थी
रूसी संगीनें लालिम

दक्षिण पश्चिम .फ्रन्ट चलाता
कर्नल जनरल वैटूयूटिन
स्वच्छ कर रहा आज राह को
आगे बढ़ता था क्षण क्षण

स्तालिनग्रेद फ्रन्ट का नेता
ऐरेमेन्को ऊब दृढ़ था
तोड़ दिया भीषण झंझा बन
नाज़ी बल उसने तृण सा

डॉन .फ्रन्ट से रोक्सोवस्की
बड़े नयन में हास्य भरे
लहरों का सा गर्जन करता
आता था उन्माद भरे

गोलीकोव भयंकर सेना
वोरोनेज़ .फ्रन्ट से ले
दुस्तर कांटों सा नगरी को
पल पल आता था घेरे

उधर तिमोशैंकों की वाहिनि
सर्प बनी घिरती आती
जिसकी फुङ्कारों में रिपु की
मर्यादा जलती जाती

सेना जनरल जुकोफ़ कर रहा
था सब का संचालन घोर
हँसिया घेर उठा था रिपु को
और हथौड़े की थी चोट

स्टैपी में अब लाखों मोटर
बड़ी बड़ी थीं खड़ी हुई
जर्मन शव धर धर ले जातीं
विकृत लाशें सड़ी हुई

युन्कर, मैसर्श्मिट जहाज अब
खंडहर बनकर बिखरे थे
एक आद चीलों के दल हिल
उड़ उड़ उन पर बैठे थे

स्टैपी मुग्ध गा रहा था कुछ
नभ भी अलसा सोता था
बहुत दिनों की जागी पृथ्वी
हिम चादर को ओढ़ा था

उत्तर पश्चिम दक्षिण पूरब
की सेनाऐं आ आ कर
महानगर में विजयिनि घुसतीं
नदियाँ ज्यों भरतीं सागर

और नगर वह ध्वंस शेष था
जिस पर दीपक आशा का
विजय स्नेह से अगन प्रभा ले
फैलाता था उजियाला

आज गया वह दिन जब पथपर
होता था भीषण संग्राम
आह! औरतों बच्चों तक ने
लगा दिया था अंतिम दांव

वह मैनस्टीन नहीं आ पाया
पौलस-जर्मन सेना का
कुछ दिन पहले अभी हुआ था
'फ़ील्ड मार्शल', व्याकुल था

घेर लिया रूसी-दल ने जा
लो सब जर्मन बंदी थे
आज पराजय की बेला में
भेदहीन सब संगी थे

एक ओर कुछ अफ़सर जाकर
छिपे कोयलों में सहसा
चूहों से बाहर ला खींचे
रूसी साहस था बढ़ता

जर्मन, रूमानियन अनेकों
जितने देश विरुद्ध लड़े
आज सभी के ये स्वार्थी दल
रूसी पगतल त्रस्त पड़े

यूनिट कोर डिवीज़न अगणित
पैदल, मोटर टैंक अनेक
या तो बंदी थे बिर्बल से
या फिर आज रहे थे खेत

जनरल, कर्नल, ऊँचे निष्ठुर
सेना वाले वे बर्बर
अपने अपने पद पर बंदी
करते थे रह रह मर्मर

हिटलर सुन पाया विह्वल सा
पौलस भी तो बंदी था!
आह वही जो रक्त पात में
ज्वाल उगलता संगी था!

जो जनता की आज़ादी को
कुचल रहे सैनिक बल से
और दबाते हैं गोली से
या भूँठों से या छल से

कांप गये वह दिल ही दिल में
ऐसी चोट कड़ी खाकर
एक और जनता का साथी
गरज रहा था आज निडर

डेढ़ हज़ार स्थान जीते थे
रूसी सेना ने रिपु घेर
बाइस शत्रु डिवीज़न फाँसे
कारागृह था स्तालिनग्रेद

टैंक डिवीजन ध्वस्त अगन वे
अगन डिवीजन पैदल भग्न
डेढ़ लाख अफ़सर जन बंदी
डेढ़ लाख चिर निद्रा मग्न

यही शत्रु के भीषण जबड़े
चबा रहे जो जनता को
आज उखाड़े दांत भयद वे
उठते जर्मन सहसा रो

कल जो शेर बना गरजा था
खाल छीन ली ऊपर की
गीदड़ बन कर तड़प रहा था
लज्जित निर्दयता पर भी

कड़क उठा जो बिजली बनकर
पानी सा बहता तज वेग
आँख खुल गई सह न सका वह
रवि सा जलता स्तालिनग्रेद

वह फौजें जो दबी हुई थीं
देख रहीं थीं इस रण को
कांप रहीं ईरान देश में
हत्याओं के ताण्डव को

जो आशा करतीं थीं आया
अब आया दुश्मन भीषण
कैसे जीत सकेंगे उसको
सोच रहीं थीं मन ही मन

सिहर उठीं वे श्वास रोककर
इस घनघोर नाद को सुन
सह न सकीं विश्वास विजेता
मुँह की खाता था हर क्षण

वह हिटलर की फौज चली जो
ज्वालामुखि के लावा सी
डुबा जलाती ध्वंस मचाती
बुझती निर्बल धारा सी ?

रोक दिया था प्रबल वेग वह
रूसी बल के साहस ने
बिखर बिखर उठती वह धारा
मिटती थी जैसे सपने

खंडहर था वह ध्वस्त नगर अब
हँसते रोते रूसी जन
कूक उठे थे नव प्रभात में
गूँज रहीं थीं ज्योति किरन

बालक ढूँढ़ रहे अपने घर
नारी सुपने खोज रहीं
ज़ारित्सिन के वयोवृद्ध की
आँखें सुस्मित डोल रहीं

अरे बनेगा नया नगर फिर
बच्चे ईंट उठाते हैं
हृदय हृदय उन्मुक्त किलकते
मंगल गीत गुँजाते हैं

कल तक कैसी भीषणता थी
नगर ध्वस्त है, भूमि खुदी
नई खाद के बाद किंतु यह
मुक्ति फसल की ज्योति उगी

यूरुप के वे देश पराजित
आया उनमें नूतन ज्वार
हिटलर पागल सा फिरता था
अपनी फौजों को ललकार

पर ललकारें औ' वे जर्मन
आज पराजय में डूबे
नाज़ी नेताओं की झूठों
से अब जर्मन भी ऊबे

और चल उठी उल्टी आँधी
हिले पेड़ से नाज़ी दल
जैसे लोहे की रक्षा भी
लोहे से हमले के बल

चोट पड़ी चकराये जर्मन
उधर क्षुब्ध था हिटलर भी
कांप उठा था बर्क्टेसगेडन
और निराशा थी घिरती

सौ सौ दो सौ की क़तार में
आज हजारों ही दुश्मन
टेढ़ी मेढ़ी सड़कों पर से
चलते निर्बल दुर्बल मन

'हमें युद्ध से महा घृणा है
शांति-संधि' यह चिल्लाते
जिसको सुन सुन कर हिटलर के
हिलकर अधर सिमट जाते

ज्योत्स्ना खंडहर पर सोती है
संध्या वोल्गा में न्हाती
और भोर की नव चेतनता
प्राणों में भरती जाती

घोड़े विजयी हिन हिन करते
घूम रहे हैं गलियों में
धूँआ जली मोटरों से उठ
छाता टूटी कड़ियों में

वे टूटे कन्टोप राह पर
आज पत्थरों से बिखरे
धरा रक्त से लाल सूखती
राग उठे गिरि गह्वर से

जहाँ मृत्यु ही खेल रही थी
आज वहाँ नतशिर बंदी
मौन चले जाते हैं घिर कर
कल जिनकी तृष्णा अंधी

जिनके पैरों की पगली ध्वनि
से बच्चे तक भीत हुए
जिनको देख नारियों के उर
रुद्ध और अति दीन हुए

जिनकी गति भीषण आँधी थी
जिनकी इच्छाएं ज्वाला
उजड़े ग्राम, ग्राम थे सूने
वर घर छाया अंधियाला

जो औरों का ले अपने में
बल का संचय करते थे
जनता के ख़ूँ से शस्त्रों को
जो निर्दय बन रँगते थे

जिनकी तृष्णा मानवता के
चीत्कारों पर खड़ी हुई
आज हाय जीवन की भिक्षा
शरणागत बन पड़ी हुई

कल जो हिम का शृङ्ग वेगमय
महासिंधु में बहता था
आज सूर्य्य की किरणें पड़कर
खंड खंड हो गलता था

वह जो मुँह थे बंद अचानक
बोल उठे कुछ शब्द हुआ
फिर चिड़ियां चहकीं, गल्लों का
धीरे धीरे शोर हुआ

अब बुड्ढे बच्चे तन पर के
कोड़ों के व्रण दिखा रहे
पथ पर छोटे छोटे बच्चे
हँस हँस ऊधम मचा रहे

कई मोटरों पर अब भी हैं
भिन्न भिन्न भाषाओं में
लिखा हुआ—बेल्जियन फ्रेंच सा
किंतु सभी के छापों में

जर्मन के साम्राज्यवाद का
काला ईगल छपा हुआ
शोषण और गुलामी का वह
बर्बर लोहा गड़ा हुआ

अभी अभी उखड़ेगा यह भी
आज युद्ध है शुरू हुआ
इतने ऊपर चढ़े हुए का
अब गिरना है शुरू हुआ

विजय विजय का झंडा फहरा
जयनादों में उज्ज्वल वेष
जनता के उस पूत रक्त से
जगमग गरजा स्तालिनग्रेद

दो फ़र्वरी युद्ध बीता है
स्तालिन का संदेश मिला
महाशक्ति का नाद प्रवाहित
गुञ्जित सा उन्मुक्त खिला

बर्लिन रोम टोकियो थहरे
पर जनता में हर्ष अपार
आज़ादी के महासिंधु में
नाची लहरें आया ज्वार

बुझा हुआ भारत का दीपक
जन गौरव से दीप्त हुआ
साम्राज्यी वह शक्ति कांपती
मन आशा से स्फीत हुआ

और कालिनिन बोल उठा है
'भारत भी रक्षित है आज
स्तालिनग्रेद, नहीं ! टूटी है
फ़ासिस्टों की धार अबाध'

अरे हिंद की यह सीमाएं
नहीं हिमालय की प्राचीर
अरे हिंद की यह सीमाएं
ब्रह्मपुत्र ही नहीं गभीर

जनता के देशों की सीमा
स्वतंत्रता औ' भ्रातृस्नेह
जागो जग भर के मजलूमों
आजादी है स्तालिनग्रेद

लाल सिपाही की बाजू पर
कोहकाफ़ हुंकार उठा
जिसकी शक्ति गूंज बल खाती
भारत भी ललकार उठा

वह पग कुचल चुके थे अहि को
लपटों को भी दाब दिया
पूर्व और पश्चिम की आंधी
मिल न सकी, अलगाव किया

और खंडहरों पर मिलते हैं
बहुत दिनों के दूर हुए
आलिंगन की चिर सुषमा में
रण के वे दुख चूर हुए

आज सोवियत् गूंज उठा है
गूंज उठा है जग सारा
बाल नोंचता सा पागल है
लो साम्राज्यी हत्यारा

खंडहर हँसते से लगते हैं
ज्वालामुखी से तृप्त अखेद
धीरे धीरे नव भू उठती
जय मृत्युञ्जय स्तालिनग्रेद

हुङ्कार

१६

ओ
युगांतर से टपकती आँख !
पोंछ ले निज अश्रु जलते
देख तो बंदी तड़पते
देख !
उठ बाग़ी ग़ुलाम,
हो चुका है युद्ध
जय हो मुक्त
स्तालिनग्रेद

युद्ध
वर्गों का सतत संघर्ष
मानव शक्ति का अपकर्ष
पर जो युद्ध का अवसान
जय का गान
मानव त्राण
स्तालिनग्रेद

देख
ज़ालिम के सुनहरे गीत
तेरे रक्त के अभिशाप
से बरबाद !

जाग
मेरे हिंद !
तेरी धूलि के ज़र्रे
बने सम्राट् के अभिमान,
फिर उड़े तेरी पताका
गूंज कर टकरा उठें ये
प्रबल तेरे गान !

देश बंधन से परे तू
देश को अपने उठा दे
बुद्धि का संकोच तज कर
आज सारा जग मिला ले

विजय का निर्घोष
जनता एक !
आत्मनिर्णय का मिले अधिकार
जीवन आज हो आज़ाद,
झंडा रक्त का उल्लास !
खंडहरों की गूंज
विजयी आज
स्तालिनग्रेद !
जनता की प्रबल हुंकार
मानव मुक्ति का जयनाद
शोषित क्रोध की झंकार ;
एक चेतन युद्ध—
अपनी शांति की
संस्कृति निबाहिनि क्रान्ति की
प्रिय ज्योति पर
तम का विकल आघात
एक टक्कर
हिल गये घर
जाति का वह दंभ
लुण्ठित आज अस्त: प्राय,
और वह बंधुत्व !
खलबल सिंधु में उन्मुक्त
जागो ओ किसानो आज
जागो ओ मजूरो आज

बागी के तड़पते गीत
भूखी अग्नि धूं आधार

रोकता तूफान
बोलो कौन ऐसा वीर !
आदमी हैवान
उसका दर्प करता चूर
मर कर भी न हटता आज
बोलो कौन ऐसा वीर !
वह किसान मजूर थे
युग युग रहे मजबूर
जनता की उठी तलवार
सहता कौन उसका वार ?

हो गई है भोर
मेरे हिन्द
युग युग के तिमिर की आस—
ध्वस्त है सामंतशाही
ध्वस्त पूंजीवाद
वह उगा है लाल सूरज
जाग बंदी जाग !
देख
इटली की बड़ी मीनार
पर चढ़ कर प्रबल उन्मत्त
फाड़ डाला आज वह
फ़ासिस्ट झंडा—
देख—
जग में आज है उन्माद
है हर देश में उत्साह,
छिन्न भिन्न हुए महानद
एक—
आज बन कर चल कि
फिर थर्रा उठे संसार
तड़क जाय बर्फ़ की
झिल्ली कि वह—
हुंकार !

यह करोड़ों की भुजाएं मौन
अगनित हृदय जलते आज
आह मृत्युञ्जय प्रतिध्वनि
जग न पाई लाज ?

मरण जीवन दीप का है अंत
सत्य के हित सदा मानव
रहे—
यह है शक्ति !
अरे वह नक्षत्र—
भूत परिवर्त्तित सतत हैं
ज्योति बन कर लीन
ज्योति ही है ध्येय तेरा
शांति मंगल प्यार का आवास
जग बने समता प्रचुर का लास

नृत्य सत्ता
और तू गर्हित विकल
सड़ता झुका सा मूक
उठना चाह कर भी रुद्ध
हिंदी जाग !
देख हिंदू
देख मुस्लिम
एक करुणा
एक समता
और पूंजीवाद के अभिशाप
से तू दीन और गुलाम ?
तू उगाता खेत
खाता किंतु केवल धूलि
तू मशीनों में रहा खिच
बना निर्बल तूल ?
आज पश्चिम का प्रभंजन

हट रहा अभिभूत
पूर्व की आंधी अभी
गहरा रही है पास
चोर यह घर में घुसा है
विकल सा साम्राज्य
मूर्खता पर आज तेरी
खड़ी उनकी शान ।

चेतना का भूत से संबंध
तेरा ज्ञान है निस्सीम
मानव !
देश राष्ट्र सभी निलय है
एक माध्यम मुक्ति के हैं
विश्व ही है राष्ट्र
मानव मात्र
सारे भेद हैं संकोच
गर्हित पाप है अभिमान
धन की चमक के अभिशाप,
तू अमर है
क्योंकि तेरी
धार है अविराम
तू ही ज्योति का निर्माण
आह !
ऐसा विश्व
जिसमें हो न शोषण शेष
मानव साम्य का गा गीत
करते प्रकृति से संघर्ष
अपनी ज्ञान की अभिलाष
में हों स्फीत !

आदि सभ्यों ने उठा कर एक
अल्प कंकड़ जो कि फेंका जाग
देख कितनी लहरियां उद्भूत
उससे फैलती हैं आज

भागा है सभा—
उस ज्ञान की छू ज्योति
निर्मल कांति
जिसने चीन को दी शांति

आज यूगोस्लाव चेकोस्लाव
बेल्जियम बल्गेरिया औ' फ्रांस
के जागे हुए मजदूर
करते नींव पर आघात,
भागता है त्रस्त रोमेल
छोड़ मरु का देश ;
लाल सेना की भयद उन्मत्त
चरण ध्वनि पर झूमता है विश्व
रह रह कांपता बर्लिन
मौन हो जापान
अब भी ताकता है राह !

अरे हिंदी
कौन कहता है कि तू है रुद्ध
कर न पायेगा भयङ्कर युद्ध
युद्ध ही है आज सत्ता
आज जीवन
देख
संगठन कर
जातियों की लहर मिल कर
तू भयानक सिंधु,
राष्ट्र रक्षा के लिये ओ धीर
फिर उठाले आज
संस्कृति की पुरानी लाज
से भींगी हुई तलवार !

भूख से जनता मरेगी ?
बम जलायेंगे घरों को ?
और तू निर्वीर्य्य !
चल उठ मेघ सा

हुंकार !
हिंद
कण कण आज स्तालिनग्रेद
जय का वेष !
एक चिन्गी
फूंक से कल लपट बन कर
जालिमों को घेर कर
धू धू जलेगी
जाग !

आह स्तालिनग्रेद !
आज वह खंडहर पड़ा है
हा विभव का नृत्य
कल करता जहाँ झंकार
किंतु गूंजेगी युगांतर
अमरता की धूलि से चिर
अभय अपराजित प्रबल
हुंकार !
यह प्रतीक कि
दब न पायेगी कभी

संस्कृति सुमन कल्याणदायिनि
मानवी वह ज्योति !
आज अभिवादन शहीदो
विश्व को तुमने दिखाया
सत्य का निर्वाह—
दलित शोषित त्राण
तम से मुक्ति !
अंधकलुषों के निठुर आघात—
करके चूर तुमने—
जागरण का गीत गाया,
रक्त से लिख भूमि पर
दी शक्ति
यह आह्वान !

याद रखेगा तुम्हें इतिहास
गहन वन के मार्ग
धूलि से है उठ रही आवाज—
विश्व हो आजाद
जिन्दबाद !